श्रीमद् बुद्धिसागरजी ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक ७

योगनिष्ठमुनिराजश्रीबुद्धिसागरजी कृत

भजनपदसंग्रह.

भाग ४ थो.

छपावनार.

अमदावादना श्रेष्ठिवर्य ओशवाळ शा. मोहनलाल हेमचंदनी धर्मपत्नी जासुदना स्मरणार्थे तेमना सुपुत्रो

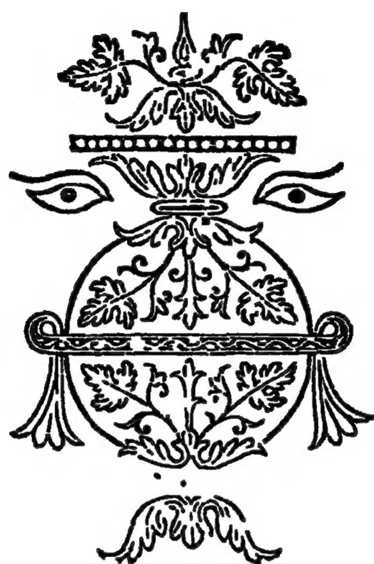
छपावी प्रसिद्ध करनार,

अध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडल.

धी "डायमंड ज्युबिली" प्रीन्टिंग प्रेस-अमदावाद.

वीर सं. २४३५ सने. १९०९

किंमत. ०-८-०



योगनिष्ठ पूज्य जैनसाधु श्रीमद् बुद्धिसागरजी अने तेमनो काव्य संग्रह.

हरकोइ मनुष्यने सुख प्राप्त करवानी अभिलाषा होय छे. अने ए सुख माटेज प्रत्येक प्राणीओ विविध प्रकारनी प्रवृत्तिमां प्रवृत्त थता जणाय छे, तेमां ते मार्गना पर्यंतरे आवी कोइ विजयवंत निकळता नथी तो एक बाजुए विरल विरल पुरुषो सत्सुखमां निमग्न थयेला होय छे. विशेष स्तुतिपात्र एनेज मानी शकाय के, जाते सत्सुखानन्दी होइ बीजानुं दुःख टाळवा प्रवृत्ति करे छे.

हुं बीजाने सुख आपीश एम धारी घणा माणसो पोताने प्राप्त थयेल साधनो पोताथी अधः स्थितिवाळाने पुरां पाडवा जाय छे. राजाओ, शेठीआओ, अने धनवंत जनो, धनलक्ष्मी एज सुखनुं साधन माने छे अने एथीज बीजा सुखी थशे एम विचारी धनादिकथी अनेक प्रकारे साह्य आपे छे पण आ मार्ग मध्यम छे. कारण के धनादिक पदार्थ मात्र आजन्मपर्यंतने माटे पण अनिश्चयात्मक सुखस्वरूप होय छे. ए करतां महात्मा पुरुषो उपदेशादिथी हृदयपूर्वकनुं शुद्ध अध्यात्मज्ञानथी विभूषित् ज्ञान आपे छे. ए ज्ञानथी उत्पन्न थयेल निजानंद स्वरूप सुख कदी एटले जन्मांतरमां पण नष्ट थतुं नथी. ए सर्व कोइ मार्गवाळा माने छे.

उपदेश उभय प्रकारे आपी शकाय छे प्रत्यक्षपणे, अने अप्रत्यक्षपणे, ज्यां सुधी शरीर आलोकपर विचरी शके छे. त्यां सुधीना माटेज प्रत्यक्षपणे उपदेश आपी शकाय छे. पण ग्रंथादिक बनावी अविचळ अक्षर देहथी आपवामां आवतो अप्रत्यक्षपणे उपदेश क्यां सुधी लांबो काळ रही शके ए कहेवुं मानवनी

बुद्धिनी बहार छे छतां एटलुं तो मानवुं पडशे के लांबो काळ सुधी ए अक्षरदेह परोपकारार्थ टकी शके छे.

प्रत्यक्ष अने अप्रत्यक्षोपदेश पण उभय प्रकारनो होय छे. एक गद्यमां अने बीजो पद्यमां अक्षरोने अमुक प्रकारनी गोठवणी शिवाय मात्र रसपूरित भावार्थवाळुं जे लखाण ते गद्य कहेवाय छे. अने वर्णमात्राने अमुक प्रकारनी गणमात्राए बद्धकृतिमां लखेल लेख पद्य कहेवाय छे आ बेय अक्षरदेह स्वरूप छे. पण बुद्धिनी लालित्यता भाषा गौरव ने हृदय पटपर छाप पाडनार भाव पद्यमां, गद्य करतां अधिक अंशे समायेल छे. साधारण वार्ताओ करता कवि लोकोए लखेला कविताओना ग्रंथो केवी अस्तित्वता भजवी उन्नतता भोगवे छे ए कोनी जाण बहार छे.

पद्यमां पण बे भेद छे. पिंगळ पद्य, शार्दुलविक्रीडित, स्रगधरा, शिखरिणी आदि वर्ण मेळना छंदो. ए प्रथम प्रकार छे. अने रागरागणीमां भजन कीर्तनो, पद ख्याल, ठुमरीओ, गजलो ए पद्यनो बीजो प्रकार छे. पहेला प्रकार करतां पण काळबळ, देशनी स्थिति रीति मानवनी मनोविचारणाओने अवलोकी, आ पद्यना बीजा प्रकारने अमो प्राधान्य मानीशुं. कारण जे भणेल वर्ग होय छे. अने तेमां पण जेमणे पिंगळ वगेरेनो अभ्यास करेलो होय छे उपरांत रस अलंकारना जेओ ज्ञाता होय छे तेमने प्रथम मार्ग सरस मालुम पडशे पण हिंदनी हालनी प्रजा अधमथी ते उत्तम वर्ण सुधी संगितपर जेटली मस्त छे. तेटली प्रथम प्रकारमां गौण अंशे छे.

मानव तो शुं पण सर्प, हरिण, आदि पशु जातिमां संगीत साम्राज्य भोगवे छे. सुंदर चंद्रमानी पवित्र श्वेत छाया अने पवननी सुखद लहरिओमां वीणानादे आरंभेल रागध्वनि हरिणनां

मनोवळ पर जे खेंचाण करे छे ते तथा मधुर मुरलीनो नाद क्रूर अने भयंकर सर्प जातिमां पोतानी मोहिनी नाखी डोलावी बेभान करी दे छे ए कोना हृदय वहार छे? अर्थात् सर्वने विदित छे तो मनुष्य के जे सहृदय छे ते प्राणिना हृदयने संगीत केटलुं आकर्षी शके ए सुज्ञजने जाते विचारवुं जोइए.

उपरनी वात तो आपणे कही गया पण कइ भाषामां आ रीते उपदेशादिक होवुं जोइए. एमां पण वांधा अने तकरारो विद्वानो अनेक प्रकारनी उठावे छे इंग्रेजी भणेला इंग्रेजी भाषाने सारी अने प्रौढ माने छे. संस्कृत भणेला संस्कृतना प्रेममांथी बीजी भाषा तरफ आंख उघाडीने जोता पण नथी हिंदुस्थानी भाषा वाळाओ 'हिंदुस्थानि के सोलेहि आने मानते हे.'

गुर्जरी भाषाना साक्षरो गुजरातीनी गौरवता गणे छे. आदि आदि अनेक देश प्रचलित भाषाना साक्षरो पोत पोतानी भाषाने वखाणे ए स्वाभाविक छे. उपरनी भाषाओमांथी मात्र संस्कृतने अमो आर्यावर्तना प्रदेशो माटे मानीए कारण आखा हिंदनी मूळथी मांडीनेज संस्कृत सामान्य अने मोभादार तथा प्रिय भाषा छे. अमो माध्यस्थदृष्टिथी विलोकी कहिए छिए के जे जे देशमां प्रचलित जे भाषा होय ते देश माटे ते भाषा सारी छे. जेमके गुजराती भाषामां सामान्य रीते सर्व प्राणीना हृदयने आल्हाद आपवा. हिंदुस्थानी के मराठी आदिक भाषाओ होइ शके नहि. गुजरातने माटे गुजरातीज होय. तेम उत्तरहिंदने माटे गुजराती के मराठी उपयोगी परीपूर्ण होइ शके नही. तेम दक्षिणमां हिंदुस्थानीय के गुजराती प्रिय होइ शके नही. एतो गुजरातीमां गुजरातीज 'उत्तरहिंदमां हिंदी, दक्षिणमां दक्षणिज' पोशाइ शके. प्रश्न थशे के, संस्कृत के इंग्रेजी आखा आर्यावर्तने माटे हाल सा-

मान्य भाषाओ छे तो ते भाषा प्रिय केम नही. ?

तेमने पण अमो खुल्ला हृदयथी कहिशुं के, गुजरातमां अत्यारे गुजराती भाषा जाणनार जेटलां माणसो छे तेथी केटलाक ओछा अंशे अंग्रेजी अगर संस्कृत भणेलाओ छे. माटे संस्कृत जाणनार माटे संस्कृत भाषा उत्तम अने अंग्रेजीवाळाने इंग्रेजी ठीक. संस्कृत भणेलाने इंग्रेजी नकामी, ने इंग्रेजीवाळाने संस्कृत नकामी छतां गुजराती तो बेउने उपयोगी छे माटे गुजराती भाषानुं प्राधान्य कहीए ए अमने ठीक जणाय छे. गुर्जर देशवाळा मनुष्योने गुर्जर भाषा मातृ भाषा गणाय छे मातृ भाषामां जे हृदयना उद्गार नीकळे छे ते अन्य भाषामां नीरुलता नथी.

जे वखतमां संस्कृत भाषा आर्यावर्त्तमां चालती ते वखतमां संस्कृत ग्रंथो रचाया छे पण काल बळे जेम जेम भाषामां फेर-फार पडी प्राकृत भाषाओ थवा मांडी त्यारे ते ते भाषाओनुं संस्कृत करतां प्राधान्यत्व थयुं. हाले तो संस्कृत अने इंग्रेजी भाषाओनां गुजरातीमां भाषान्तर बनाववां पडे छे. अमो एम नथी कहेता के संस्कृत भाषा करतां गुजराती अने बीजी प्राकृत भाषाओ खेडायली छे संस्कृत भाषा. घणी गौरवतावाळी छे ए नक्की छे पण हाळ आपणा देश, धर्म अने व्यवहारना उदय माटे गुजराती भाषामां ज जनसेवा बजाववानी छे तेम बीजा देशवाळाए पोत पोतानी भाषामां सेवा बजाबा जेवुं छे.

जेम संस्कृतमां एक अष्टक कर्युं होय अने हेन्डबील तरीके तेने जन समाजमां मोकल्युं होय तो तेने हजारमां बे चार जणज आदर पूर्वक स्वीकारशे पण जो गुजरातीमां भजन, ख्याळ के ठुमरी के दुहा चोपाइ—या छंदमां लखी कोइ मोकलवामां आवे तो हजारके लगभग लाख उपर स्वीकारनार मळशे. छेवटे अभ-

ण पण भणेलाना मुखथी सांभली तेने समजी आल्हादशे. आगळना संस्कृतभाषाना जमानाना संगितपर असारना लोकोनुं हृदय प्रेम तत्ववाळुं तेटलुं होय एम परिपूर्ण लागतुं नथी. कारण संस्कृतना तमाम ग्रंथो छंदोमां छे, कोइ पण संगितमां कचित् मालुम पडे छे. शोभन स्तुतिना कर्त्ता शोभन मुनि, विनयविजयजी, यशोविजयजी, जयदेव जेवाओए एक वखत आ मार्गे प्रकाश कर्यो जणाय छे पण तेना पछी ते मार्गे कोइ पंडित परवर्यो होय एम जणातुं नथी.

अरे अत्यारे अनेक जातना लोको पण एकतारो, मंजीरानी धूनमां बे घडी सांगितमयमार्गी भजनमां मस्त जणाय छे. तथा केटलाक ठुमरी अने साधारण पदोमां ईश्वर स्तवनादि पोताना हृदयने प्रीय लागे तेवा रागोमां गाय छे. केटलाक लोको भैरवी, मालकोश, धनाश्री, सारंग, कल्याण. वगेरे रागोमां सतार, हारमोनीयम वगेरे वाद्योमां, छाया जमावी घडीभर दुःखनी विस्मृति करावे छे नाटकोमां पण गायन, गायन ने गायन ज. अर्थात् आखा देशोना देशोमां संगीतनी लगनी लागी रही छे.

तो आवे समये संगीतद्वाराए लोकोनां हृदयने उन्नत करवां. ए एक मुख्य कर्त्तव्य छे.

जैन साधु योगनिष्ठ पूज्य श्री बुद्धिसागरजी.

एओना करेला भजनपद संग्रहना चारे भाग म्हें वांच्या छे. अने ए अवलोकनथी म्हारुं हृदय शांत थाय छे. कारण व्यवहार परमार्थ अने स्वदेश ए त्रणनी उन्नतिना सारुं गद्यमां, पद्यमां, ग्रंथो बांधी एमणे अल्प समयमां गुर्जर वर्गनुं हित साचव्युं छे. एमना भजनोमां गौरवता एवी छे के जेम जेम वांचता जइए छीए तेम तेम पुनः पुनः वांचवा ए कवितामां जिज्ञासा थाय छे.

एमना माटे कवीश्वर माघनुं वाक्य सफळ छे,

क्षणे क्षणे यन्नवता मुपैति,

स्तदेवरूपं रमणियतायाः

जे जे पदार्थ जोतां छतां पण फरी' जोवा आकर्षण करे ते ज रमणीयता.

पहेला भागमां भाषा मस्त छे. एटले पोताना एक अध्यात्म निशानने लेइ सहज स्फुरणाथी ए भाग रच्यो छे तेमां आनंदघन अने चिदानंदजींनी भाषानुं खास अनुकरण कर्युं छे तेथी ते अप्रासंगिक नहि गणाय. आज रीतने अनुसरी सरस्वतिचंद्रमां द्विभाषिक जे होरी लखी छे.

मैंतो नाहिरे रहुंगी ए नगरमें,

धोळे दहाडे कीशनजी लुंटे छे अमने,

ए गोपीओनां शुद्ध प्रेमने आकर्षाइ प्रेम वाक्यो अने आगळना महान् कवीश्वरोए विरहावस्थामां के मस्तावस्थामां झाड पहाड नद सरोवरोने मनुष्यो पासे प्रश्नो पुछायल दोष ए छे एम कहेवायज केम? नज कहेवाय.

तद्वत् आ सागरजी कृत कविताना प्रेम तथा स्वात्ममस्तावस्थाने लेइ आनंदघन तथा यशोविजयजी वगेरेनी रीतिने अनुसरतां कोइ आक्षेप मूके तो अमो काढी नाखीये छीए,

भजन करले भजन करले,

भजन करले भाइरे,

दनिआंदारी दुःखनी क्यारी,

जुठी जगतनी सगाइरे,

ए भजन करती वखतनो कर्तानो उमंग एम वैराग्यावस्था अने भजननो राग, छाया, खरेखर असरकारक छे, अने एनी

मान्यता थोडा समयमां एटली थइ छे के हरकोइ धर्मवाळा पण कल्यमां, भजनमां, अने एकांतमां, उत्साहमां एने उच्चरता जणाय छे. विजापुर वगेरेमां वगडाओमां पण लोको हरतां फरतां वैराग्यथी गाय छे. ए शिवाय चिदानंदजी तथा आनंदघनजीनां प्रेमनी मूर्तिस्वरूप थोडां भजनो पण ए भागमां कर्ताए स्नेह· आकर्षाइ दाखल करेलां छे.

कौन गुन भयोरे उदासी
भमरा कौन गुन भयोरे उदासी.
आनन्दघनजी.

तथा

मत कोइ प्रेमके फन्दपरें
परत सो निकसत नाही. मत०
प्रेमके कारन पपैआ पुकारत
दीपक पतंग जरे मत०

* * *

आनन्दघन प्रभु आय मीलो तब
तुम विरहकी पीरटरे मत०
आनन्दघनजी.

आनदघनजी जैनोमां एक योगी महात्मा थइ गया छे,

श्रीमान् बुद्धिसागरजीने अमो जैनोमां तो आनंदघन अने चिदानन्दनी जोडमां भेळवी ए त्रणनी त्रीपुटी करी आल्हादीए छीए. कारण के उपरोक्त बन्ने महात्माओना विचारो स्वात्मनिष्ठतानो कविताओमां क्वचित् भिन्न जणाना नथी

बीजो भाग हालनी गुज्जर भाषामां रच्यो छे ने घणीखरी

कविता पिंगळमां बतावेल छंदोमां छे. ते शुद्ध व्यवहारने अति उपयोगी छे. कारण दया, विवेक, न्याय, सत्य आदि लक्षणो आबालवृद्ध सर्व दर्शनवाळाने उपयोगी छे ए संबंधीनाज लेखो छे. भाषा सरल छे, रसहृदयभेदक छे उपरोक्त वैराग्य. सुख दुखमां समभाव, निंद्रा त्याग, स्वार्थ स्वरूप, परमार्थ स्वरूप, दान स्वरूप, कपट स्वरूप, उपकार महिमा, आदि अनेक उपदेशो समाया छे. वळी योग मार्गमां पोते निष्पक्षपाती होवाथी, योग महिमाना विषयोनां तेमनां भजनो बहुज आनंद आपे छे ४४ मा पत्रे योग माटे थोडा झूलणा छंद छे. तेमांथी अवकाश स्थळ संकोचने लेइ एक बे टांकी बतावुं छुं.

योग विद्यातणुं धाम चेतन प्रभु,
शक्ति सिद्धो सभी रही प्रकाशी
योगविद् मानवी चित्तमां ध्यानथी,
पिण्ड ब्रह्माण्ड भावो विलासी. १

चक्र षट् भेदवां वायुनां पिण्डमां,
गगनगढ चालवुं वंक नाळे;
ज्योति जळ हळ अति शोक चिन्ता नथी,
हंसलो शान्ति सुख मांहि म्हाले.
पिण्ड ब्रह्माण्डनी ऐक्यता आत्ममां,
शुद्ध उपयोगथी जेह जागे;
अष्ट सिद्धि सदा हस्त जोडी रहे,
चित्त रंगाय नहि बाह्य रागे,
अलखनी धूनमां भासता दिन मणि,
भक्ति उत्साहथी यत्न धारो;
बुद्धिसागर सदा ज्योतिमां जागजे,

शुध्धचेतन प्रभु चित्त प्यारो,

आ छंदोमां कर्तानुं विद्वान्‌पणुं यथार्थ जणाय छे. योगविद्यानुं धाम परमात्मा छे. सिद्ध समान शक्ति योगमां छे. अर्थात् सिद्ध थवुं होय तो पण योग शक्तिथी थइ शकाय छे. पिण्ड तथा ब्रह्माण्डनी ऐक्यता योगथी थइ शके छे. छचक्र भेदीने गगनगढरुप ब्रह्मरंध्रमां जवुं. त्यां जवा वंकनाल कहेतां मेरु दंड मार्ग छे. गया बाद अनंततेजोमय ऐश्वर्यमय आत्मानो भास थाय छे. चिंता अने शोक त्यां जणातां नथी. पिन्ड ब्रह्मांडनी ऐक्यता आत्मामां थाय छे. त्यारे अष्ट सिद्धि हाथ जोडी वरवा खडी थइ जाय छे पण ते बाह्य रागवाळी सिद्धिओमां ते योगीनुं मन रंगातुं नथी. आसक्त थतुं नथी अलक्ष्यनुं स्वरूप वैखरीना शब्दोथी वर्णी शकातुं नथी. आत्मा वर्णोथी परिपूर्ण रीते लखातो नथी. तेम अज्ञानीना परिपूर्ण लक्ष्यमां आवतो नथी, एटलो ऐश्वर्यवंत छे. ते भक्तिना उत्साहथी तेने मेळववा यत्न करो.

आ वातने योगीओ कबुल करे छे.

यथा सिंहो गजो व्याघ्रो,
भवेत् वश्यं शनैः शनैः

सिंह गज व्याघ्र वगेरे प्राणीओ हळवे हळवे युक्तिथी वश्य थाय छे, तेमज प्राणने वश्य करवो अन्यथा साधकनो प्राण नाश थाय छे.

मात्र एज भजनमां भक्तियोग वैराग्यादिक संपूर्ण समाया छे, माटे कर्तानुं ज्ञान, भक्ति, क्रिया ए त्रण पदार्थपर वलण सहज लागे छे. जे जे भजनो गाइए छीए. तेमां निमग्न थइए छीए, माटे अमो तो थोडी थोडी कडीओ लेइ कर्तानो निर्देश अत्र बतावीए छीए कारण दरेक भजनोनुं अवलोकन करतां तो ए ग्रंथो करतां

बीजा नवा कोण जाणे केटला घणा ग्रंथ थाय एम छे.

त्रीजा तथा चोथामां तो मात्र अलख खुमारीज छे. एक विद्युत् चमत्कारमां जेम मोतिहार परोववा जेटली एकाग्रता अने बाह्यवृत्तिनी निवृत्ति जोइए तेटलीज निवृत्ति लेइ स्वात्मलक्ष्यमां कर्ता चाल्या जाय छे जाणे एक मुक्त महद् पुरुष होय नहि ! उपरना बे करतां आ बे भाग वधारे हृदयाकर्षनार छे भाषा उच्च छे.

देह तंबुर विषे एक बे वाक्यो.

देह तंबुरो सात धातुनो
रचना तेनी बेश बनी
इडा पिंगळा अने सुषुम्णा
नाडिनी शोभा अजब घणी.

देह तंबुरो अलख धुनमां, परा पश्यंतिथी वागे;
जाग्रत् तुर्यावस्थामांहि, चेतन यथाक्रमे जागे.
देह तंबुरो वगाडनारो, चिदानन्द घटमां जागे;
बुद्धिसागर अलख धूनमां, अनंत सुख छे वैराग्ये.

आ आत्मभावनी उच्चदशानी पराकाष्ठा कहीए तो चाले. आत्मखुमारी, योगविषय, तत्वज्ञान, वगेरेनां हेडींगवाळी कविताओ अति उत्कृष्ट छे.

अमो हद बहार जइ वखाणता नथी. पण हृदय पूर्वकनी लागणी साथे कहीएछीएके आत्मज्ञान स्वदेशोदय, व्यवहारोदय माटे सर्वे जणने ए भाग बहु उपयोगी छे. जैनोना तीर्थंकरोनी स्तुतिओ एमां समायली छे ते जैनोने अति उपयोगी छे. पण दया, दान. तपश्या, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, योग आदिना विषयो लखवा निर्लोभताए जनकल्याणमाटे ज ए विरक्तपुरुषे जे प्रयत्न कर्यो छे तेने धन्यवाद आपीएछीए, पुस्तकोनुं मूल्य एटलुं

सरल राख्युं छे के ए सुशोभित पुस्तकोना मूल्य करतां छपाव-नारने खर्च वधारे छे. एम करवानुं कारण तेमनी परोपकार दृष्टिज छे.

हवे अमो एटलुं कहीने विरमीशु के श्री बुद्धिसागरजी जेवा सत्यग्राही, ज्ञानी, योगी आत्मनिष्ठ अने परोपकार परायण पुरुष धर्म मार्गनो उद्धार करे एटलुंज नही पण व्यवहार तथा देशनुं पण उदय करो ते माटेज तेमनुं जीवन परमात्मा दीर्घ करे. तथास्तु सं. १९६५ विजया दशमी.

वरसोडा निवासी पंडित भोळानाथ शर्मा.

भजनसंग्रहभागचतुर्थ संबंधी लेख्य.

नवरस रंगित काव्यना आस्वादथी जे सुख थाय छे ते सुख खरेखर अध्यात्म रसनी आगळ एक बिंदु मात्र पण नथी. अध्यात्मरसमां रंगित थतां पराभाषा स्वयमेव खीले छे, अने जे वस्तुनो अनुभव थाय छे, ते वैखरीवाणी द्वारा अक्षर रूपे वहिर् प्रकाशे छे. आ भजन संग्रह चतुर्थ भागमां पण विशेषतः तेवीज स्थिति थएली छे. संवत १९६५ ना माह शुदी त्रीजना दीवसे अमदावादथी डभोइ तरफ जवा विहार कर्यो. त्यारे विहारमां जे जे गामो आवतां तेमां अनुपाधिदशायोगे जेवा जेवा संयोगो पामी जेवा जेवा आध्यात्मिक विचारो उद्भवता हता. ते काव्यरूपे गोठववामां आव्या छे. अमदावादथी मातर अने मातरथी कावी-ठा अने कावीठाथी बोरसद थइ पादरा जवानुं थयुं. पादरामां

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रा-
वक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां. प्रथम चो-
वीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां
पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५
फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपा-
ध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशो-
विजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशो-
विजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां.
डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि
एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोद-
रा शहेरमां कंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन र
च्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी त्यांकेटलांक भजनरच्यां.
मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा
माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत्
सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेले-
समां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी
पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र
सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी
शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज
आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस
व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो
त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान
आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां
जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी
खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं, त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामो· मां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेपतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता सां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइनें व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

तभाइ प्रसिद्ध अने वळी लक्ष्मीनी पधरामणी थइ तेथी कीर्तिमां वृद्धि थइ. धर्मना कार्य विशेषतः करवा लाग्या. श्री नेमसागरजी तथा श्री बुटेरावजी वगेरे पवित्र साधुओनी भक्ति करवा लाग्या. साधुओनी धर्म देशना सांभळवा लाग्या, शेठाणी गंगाबेननां पगलांथी सर्व प्रकारे श्रावकधर्मनी शोभा वधवा लागी, शेठ दलपतभाइए १९२२ नी सालमां श्रीसिद्धाचलजीनो संघ कहाडयो अने तेमां सारी रीते धननो व्यय कर्यो, एक उझमणुं कर्युं तेमां सारी रीते रुपैया वापर्या. शेठ दलपतभाइए सिद्धाचल तीर्थनां धर्म कार्य करवामां तन मन धनथी प्रयत्न कर्यो छे. शेठ. दलपतभाइ भगुभाइए घणां श्रावक योग्य धर्मनां कार्य कर्यां छे. तेमनो देहोत्सर्ग थयो छे तेमना त्रण पुत्र हाल विद्यमान छे. जैन श्वेतांबर कोन्फरन्सना जनरल सेक्रेटरी. शेठ लालभाइ दलपतभाइ शेठ. मणिभाइ दलपतभाइ तथा शेठ. जगाभाइ दलपतभाइ बी. ए.

शेठ लालभाइ दलपतभाइ कोन्फरन्सना जनरल सेक्रेटरी तरीक थया छे. तथा आणंदजी कल्याणजीनी पेढीनो वहीवट सारी रीते करे छे. स्थावर तीर्थनी रक्षामां अग्रगण्य भाग ले छे. शेठ मणिभाइ तथा शेठ जगाभाइथी पण धर्मनां कृत्यो सारी रीते कराओ एम इच्छाय छे. शेठाणीनुं नाम प्रसिद्ध अमर राखवा माटे त्रण पुत्रोए मळी त्रीस हजार रुपैया काढी एक झवेरी वाडाना नाके श्राविकाशाला बांधवानुं नक्की कर्युं छे. तेनो लाभ श्राविकाओने आपवानी सगवडता करवामां हाल प्रयत्न शरु छे श्री रविसागरजी महाराजने गंगा बेन शेठाणी इष्टगुरु स्वीकारे छे. रविसागरजीनी पासे उपधाननी क्रिया प्रथम तेमणे करी हती. नेमसागरजी महाराजनां वाडीवाळां श्राविका शेठाणी रुखमणी तथा मोतिकुंवर थइ गयां ते प्रमाणे गंगा बेन शेठाणीनो श्री रविसागरजी महाराज

उपर भक्ति राग छे. रविसागरजी महाराजना संघाडामां अग्रगण्य श्राविका हाल ते वर्ते छे. शेठाणीए अनेक तीर्थनी घणीवार यात्राओ करी छे. जंगम तीर्थ साधुओनी पण अनेक यात्राओ करी धर्म देशना सांभळी छे. शेठाणी साधु साध्वीओने पूर्ण भक्तिथी वहोरावीने खाय छे. तपश्चर्या करवामां उत्साही छे देव गुरुनुं आराधन यथामति शक्तिथी सारी रीते करे छे. आवी उत्तम शेठाणीना आग्रहथी अमदावादमां सं. १९६५ नुं चोमासुं करी भव्य जीवोना हित माटे भजनसंग्रह चोथो भाग तैयार कर्यो छे. आध्यात्मिक भजनो अंतरनी स्फुरणा सहेजे उद्‌भववाथी बन्यां छे. अने नीति आदि पदो तेवी औपदेशिक स्फुरणा लावी बनाव्यां छे.

निष्काम भावनाथी आ प्रवृत्ति थई छे अन्य दर्शनवाळाओ पण आ भजनने वांची सन्मार्गमां प्रवर्ते छे. निश्चयनयनी प्राधान्यताए केटलाक आत्माना आध्यात्मिक उद्गार नीकळ्या छे. केटलाक व्यवहार नयना प्राधान्यताए उद्‌गार नीकळ्या छे. ज्यां त्यां नयो वडे सापेक्षबोध समजवो. राग वा कोई विषय न बेसे तो पंडितो पासेथी खुलासो मेळवी निःशंक थवुं. भजनसंग्रह-चतुर्थभागमां श्री यशोविजयउपाध्यायकृतसीमंधरजिनस्तवन, तथा बे तेमनां स्तवन तथा परमेष्ठीगीता, तथा समुद्रवहाणसंवाद तथा ब्रह्मगीता, सिद्धाचल स्तवन तथा संवत.१३२७नी सालनो सात क्षेत्रनो रास यथामति शुद्ध करी तथा फुटनोट करी छपाव्यो छे. खंभातना भंडारमांथी सात क्षेत्रनो रास शोधतां नीकळ्यो छे. आगळ उपर आ छपायलो रास तथा ते जूनो एम बे बराबर तपासी पूर्ण शुद्ध करी रास छपाववा विचार थशे गुर्जर भाषाना अभ्यासकोने आ रास अत्यंत उपयोगी थशे विशेष कंइ भूलचूक रही होय तो पंडित पुरुषो सुधारशो.

भव्य जीवाना हित माटे आ पुस्तक अमदावादना शा. मोहनलाल हीमचंदना पुत्रोए पोतानी माता जासुदना स्मरण माटे लक्ष्मीनो व्यय करी छपाव्युं छे तेथी तेमने तथा वांचकोने सदाकाल लाभ थशे. ज्ञान मार्गमां आवी तेमनी प्रवृत्ति देखी अन्य पण ज्ञानमां लक्ष्मीनो व्यय करशे. आवा पुस्तको छपाववा माटे तेमने धन्यवाद घटे छे. झवेरी चमनभाई मोहनलालना आग्रहथी ग्रंथ छपाव्यो छे. अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडलना सद्‌ग्रहस्थो तन मन धनथी आवा उत्तम ग्रंथो छपावी प्रसिद्ध करी परोपकार करे छे तेथी ते मंडलना गृहस्थोने धन्यवाद घटे छे

लेखक मुनिबुद्धिसागर—अमदावाद.



बे बोल.

मंडळे शरु करेल ग्रन्थमाळा पैकीनो आ सातमो ग्रन्थ छे. जे ग्रन्थमां मुनिवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज रचित स्तवनो पदो उपरांत श्रीमद् यशोविजयजीनी कृतिनां पदो पण छे. हालमां पुस्तको घणी प्रकारनां घणी संस्थाओ तरफथी प्रगट थाय छे पण आ शैलीवाळा ग्रन्थो छेल्ला केटलाक सैकाओमां कोइक ज तरफथी लखाया हशे. आवा प्रकारना ग्रन्थनो आ चोथो भाग प्रगट थयो छे अने तेज उपरथी जोइ शकाशे के जनसमाजनी ते तरफ रुचि वृद्धि पामती जाय छे; केमके विविध विषयोथी भरपूर साथे बोधक, अने रसिक छे. जेम जेम आवा ग्रन्थोनुं वांचन, मनन, वधतुं जशे तेम तेम तत्त्व स्वरूपनो प्रकाश वृद्धि पामशे.

आवा ग्रन्थो प्रगट करवाने समाज: तरफथी मंडळने जुदा जुदा ग्रहस्थो तरफथी मदद मळे छे अने तेथी मंडळ पोताना कार्यमां आगळ वधे छे. मंडळ इच्छे के आ ग्रन्थमाळाना १०८ मणका अनेक ग्रहस्थोनी सहायताथी सत्वर प्रगट थाओ.

आ ग्रन्थ अमदावादवाळा शा. मोहनलाल हेमचंद सुपुत्रो तरफनी संपूर्ण मददे करी प्रगट करवामां आव्यो छे जे माटे मंडळ तेओने तेओना द्रव्यनो आ रीते करेला सद्उपयोग माटे धन्यवाद आपे छे.

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

भजनपदसंग्रह चोथा भागनी अनुक्रमणिका.

विषय.	पत्र.



अथ श्री

योगनिष्ठ मुनिवर्य बुद्धिसागरमहाराज कृत

स्तवनपद (भजन) संग्रह.

चतुर्थ भाग आरभ्यते.

ऋषभदेव स्तवनम्.

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए-ए राग.

ऋषभ जिनेश्वर वंदना, होशो वारंवार;
पुरुषोत्तम भगवान निराकार संत छो, गुणपर्याय आधार. ए टेक.
उत्पत्ति व्यय ध्रौव्यता, एक समयमां हि जोय;
पर्यायार्थिकनयथी व्यय उत्पत्ति छे, द्रव्यथकी ध्रुव होय. ऋ. १
तस करतां सामर्थ्यना, होय पर्याय अनन्त;
अगुरु लघुनी शक्ति ते तेहमां जाणीए, अनन्त शक्ति सतंत. ऋ. २
परमभाव ग्राहक प्रभु, तेम सामान्य विशेष;
ज्ञेय अनन्ततुं तोल करे प्रभु ताहरो, क्षायिक एक प्रदेश. ऋ. ३
स्थिरता क्षायिक भावथी, मुखथी कही नहि जाय;
अनन्त गुण निज कार्य करे लही शक्तिनें, उत्पत्ति व्यय पाय. ऋ. ४
गुण अनन्तनी ध्रौव्यता, द्रव्यपणे छे अनादि;
गुणनी शुद्धि अपेक्षी पर्याये करी, भंगनी स्थिति छे सादि. ऋ. ५
सादि अनंति मुक्तिमां, सुख विलसो छो अनंत;
सुख ज्ञेयादिक ज्ञानमां ज्ञाता जगगुरु, ज्ञान अनंत वहंत. ऋ. ६
रागद्वेष युगल हणी, थइया जग महादेव;
बुद्धिसागर अवसर पामी भक्तिथी, पामे अमृतमेव. ऋ. ७

२

अजितनाथ स्तवनम्.

श्री संभवजिन ताहरुं रे, अलख अगोचर रूप–ए राग.

अजित जिनेश्वर सेवनां रे. करतां पाप पलाय; जिनवरसेवो
सेवो सेवोरे भविकजन सेवो, प्रभु शिव सुख दायक मेवो.

प्रभु सेवे सिद्धि सुहाय.—जिनवर.—एटेक.

मिथ्या मोह निवारीनेरे क्षायिक रत्न ग्रहाय. जिनवर.
चारित्र मोह हठावतां रे, स्थिरता क्षायिक थाय; जिनवर. १

क्षपक श्रेणि आरोहीनेरे, शुकल ध्यान प्रयोग. जिनवर.
ज्ञानावरणीयादिक हणीरे, क्षायिक नव गुण भोग. जिनवर. २

अष्टकर्मना नाशथीरे, गुण अष्टक प्रगटाय; जिनवर.
एक समय सम श्रेणिएरे, मुक्तिस्थान सुहाय. जिनवर. ३

नात्यंताभाव मुक्तिनोरे, जडिममयी नहि खास. जिनवर.
व्योमपरे नहि व्यापिनीरे, नहि व्यावृत्ति विलास; जिनवर. ४

सादि अनंति स्थितिथीरे, सिद्धबुद्ध भगवंत जिनवर.
झळहळ ज्योति ज्यां जगमगेरे, ज्ञेयतणो नहि अंत जिनवर. ५

परज्ञेय ध्रुवता त्रिकालमांरे, उत्पत्ति व्यय साथ; जिनवर.
निजज्ञेय ध्रुवता अनन्तनोरे, पर्यायसह शिवनाथ. जिनवर. ६

परजाणे परमां न परिणमेरे, अशुद्धभाव व्यतीत; जिनवर.
बुद्धिसागर ध्यानथीरे, थावे ध्यानी अजित. जिनवर. ७



३

श्री संभवनाथ स्तवनम्.

देखो गति दैवनीरे—ए राग.

संभवजिन तारशोरे, तारशो त्रिभुवननाथ संभव जिन तारशोरे.

निमित्त पुष्टालंबनेरे, साध्यनी सिद्धि कराय;
उपादाननी शुद्धतारे, निमित्त विना नहि थाय. संभव. १

द्रव्य क्षेत्र काल भावथीरे, निमित्तना बहु भेद;
ज्ञान दर्शन चारित्रनारे, निमित्त टाळे खेद. संभव. २

शुद्धदेव गुरु हेतुछेरे, उपादान करे शुद्धि;
उपादान अभिन्नछेरे, कार्यथी जाणो बुद्ध. संभव. ३

कार्य द्रव्यथी भिन्नछेरे, निमित्त हेतु व्यवहार;
शुद्धादिक पड भेदछेरे, व्यवहार नयना धार. संभव. ४

भिन्न निमित्त पण कार्यमांरे, उपादान करे पुष्टि;
निमित्त वण उपादानथीरे, थाय न साध्यनी सृष्टि. संभव. ५

पुष्टालंबन जिनविभुरे, आदर्यो मन धरी भाव,
उपादाननी शुद्धिमां रे, बनशे शुद्ध बनाव. संभव. ६

त्रिकरण योगथी आदर्यो रे, मन धरी साध्यनी दृष्टि;
बुद्धिसागर सुख लहेरे, पामी अनुभव सृष्टि. संभव. ७



अभिनंदन स्तवनम्.

पद्म प्रभु तुज मुज आंतरू—ए राग.

अभिनन्दन जिनरूपने, ध्यानमां स्मरणथी लावुं रे;
ध्यानमां लीनता योगथी, सुख अनन्त घट पावुंरे. अभि. १

मन वच कायना योगनी, स्थिरता जेह प्रमाणरे;
तदनुगत वीर्यता उल्लसे, भाव क्षयोपशम सुख खाणरे. अभि. २

असंख्यप्रदेशमयी व्यक्तिमां, ध्यानथी ऐक्यता थायरे;
पंडित वीर्य त्यां संपजे, उज्ज्वल अध्यवसायरे. अभि. ३

क्षण क्षण उज्ज्वल ध्यानमां, प्रगटतो सहज आनन्दरे;
बाह्य जड विषयना सुखनो, वेगथी नासतो फन्दरे. अभि. ४

अन्तरशुद्धपरिणति थकी, भावथी होय निज मुक्तिरे;
शुद्ध नय स्थापना सहजथी, प्रगटती ए तत्त्वनी युक्तिरे. अभि. ५

क्षयोपशम ज्ञान वीर्यथी, क्षायिक धर्म ग्रहायरे;
निर्विकल्प उपयोगमां, श्रुतज्ञान एक स्थिर थायरे. अभि ६

भावश्रुतज्ञान आलंबने, जीव ते जिनरूप थायरे,
बुद्धिसागर शिव संपदा, मंगलश्रेणि पमायरे; अभिनंदन. ७



सुमतिनाथ स्तवनम्.

विरति ए सुमति धरो आदरो, ए राग.

सुमति जिनेश्वर शुद्धता, वुद्धता परम स्वभावरे
अस्तिता नास्तिता एकता, ज्ञातृता नहि परभावरे. सुमति १
भिन्न अभिन्नता नित्यता, तेम अनित्य पर्यायरे;
एकसमयमांहि संपजे, पर्याय उपजे विलायरे. सुमति. २
अगुरु लघु पर्यायनी, शक्ति अनन्ति सदायरें;
परिणमे असंख्य प्रदेशमां, कारक षट् उपजायरे. सुमति ३
आदि अनादि षट्कारको, व्यक्तिपणे एकेक प्रदेशरे;
अनादि अनन्त स्थिति शक्तिथी, कारक षट् लहो वेशरे.सुमति.४.
एक अनेकता वस्तुमां, नित्य अनित्यता धाररे;
समय सापेक्ष विचारतां, होय अनेकान्त विस्ताररे. सुमति. ५
सदसत् कथ्य अकथ्य छे, जिनवर धर्म अनन्तरे;
ज्ञानमां ज्ञेयनी भासना, जाणे एक समय भदन्तरे. सुमति. ६
सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, प्रभु तुज रूप जणायरे;
चारप्रमाणने भंगीथी, धर्म अनेक परखायरे. सुमति. ७
मन वच काय अतीत तुं, आदर्यो योगथी साररे;
तुजमुज ऐक्यता संपजे, बुद्धिसागर निर्धाररे. सुमति. ८

६

पद्मप्रभु स्तवन.

विरति ए सुमति धरी आदरो, ए राग.

पद्म प्रभु अलख निरञ्जन, सिद्धना आठ गुणधारीरे
साकार उपयोगें चेतना, निराकार जयकारीरे पद्म. १

अजर अमर अगोचर विभु, नाम न रूप न जातिरे;
जगगुरू जय श्री चिंतामणि, त्रण भुवनमांहि ख्यातिरे. पद्म. २

उपमातीत परमातमा, अनुभव विण न जणायरे
दिशी देखाडी आगम रहे, अनुभवे प्रभु परखायरे. पद्म. ३

सद्गुरु तीर्थ उपासना, स्याद्वाद सूत्रनो बोधरे;
परंपर गुरुगम जोडतां, करे भवी जिनवर शोधरे. पद्म. ४

ज्ञानना मानमां ध्यान छे, ध्यानथी होय समाधिरे;
परम प्रभु एक तानमां, भेटतां जाय उपाधिरे. पद्म. ५

अनुभव अमृत स्वादतां, चित्त अन्यत्र न जायरे
चकोर जेम चंद्र तेम राचतुं, परम प्रभुरूप मांहरे. पद्म. ६

सुख अनंतनी राशिमां, जीवनमुक्तपद पायरे;
बाह्यनां सुख रूचे नहि, निश्चय सुख निज मांह्यरे. पद्म. ७

परपरिणाति रंग परिहरी, शुद्ध परिणतिमांहि रंगरे;
बुद्धिसागर जिनदर्शन, देखवा प्रेम अभंगरे. पद्म. ८



७

सुपार्श्वनाथ स्तवनम्.

नदी यमुनाके तीर ए-राग.

सुपार्श्व प्रभु जिनराज कृपालु तारशो,
दीनतडी मुज प्रेम धरीने स्वीकारशो;
राग द्वेष अन्याय नृपति जोर टाळशो,
शुद्धरमणता सन्मुख दृष्टि वाळशो. १

विषय वासना पासथी प्रभुजी छोडावजो,
परम दयालु देव दया दील लावजो;
अनुभव अन्तरदृष्टिनी सृष्टि जगावजो,
परमानन्दनुं पात्र चेतन मुज थावजो. २

केवलज्ञाननी ज्योतिमां ज्ञेय अभिन्न छे,
परद्रव्यादिक ज्ञेय थकी वळी भिन्न छे;
ज्ञेयाकारें ज्ञान परिणमे जाणजो,
भिन्नाभिन्न स्वरूप अनेकांत आणजो. ३

ज्ञेयापेक्षे ज्ञान अनन्तुं जिन कहे,
ज्ञेयनी पासे ज्ञान गया वण सहु लहे;
दर्पण क्यांइ न जाय दर्पणमां समाय छे,
ज्ञेयाकारीभावो ए दृष्टांत न्याय छे. ४

दूरवर्ती जे ज्ञेय ज्ञानमांहि भासतो,
ज्ञान अचिन्त्यस्वभाव हृदयमां आवतो;

ज्ञेय विना सहु ज्ञाननी शून्यता जाणीए,
षड् द्रव्यो पर्याय अनन्त मन आणीए. ५

अस्ति विना न निषेध घटे कोइ द्रव्यनो,
द्वि वण नहि अद्वैत निषेध केम सर्वनो;
द्वैतनुं ज्ञान थया वण अद्वैत शुं कहो,
भासे ज्ञानमां द्वैत सत्यभाव सद्दहो. ६

द्रव्य अने पर्यायथी ज्ञेय अनन्तता,
वस्तुधर्म स्याद्वाद त्यां एकानेकता;
ध्रुवता ज्ञेयना द्रव्यपणे नित्यता खरी,
उत्पत्ति व्यय ज्ञेय अनित्यता अनुसरी. ७

जीवद्रव्य एक व्यक्ति अनादि अनंत छे,
गुण पर्यव आधार चेतनजी सन्त छे.
बुद्धिसागर जिनवर वाणी सद्दहे,
समकित श्रद्धायोगे अपेक्षा सहु लहे. ८



चंद्रप्रभु स्तवनम्।

ए अब शोभा सारी हो मल्लिजिन. ए राग.

चंद्र प्रभु पद राचुं हो, चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं;
मन मान्युं ए साचुं हो चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं.
शुद्ध अखंड अनन्त गुण लक्ष्मी, तेना प्रभु तमे दरिया;
सत्ताए ज्ञानादिक लक्ष्मी, व्यक्तिपणे तमे वरिया हो. चि. १

अनाद्यनन्तने आदि अनन्त, सत्ता व्यक्ति सुहाया;
अस्तिनास्तिमय धर्म अनन्ता, समय समयमां पाया हो. चि. २

क्षपक श्रेणिए उज्जवल ध्याने, घातक कर्म खपाव्यां;
दग्ध रज्जुवत् कर्म अघाति, तेरमे चउदमे नसाव्यां हो. चि. ३

केवल ज्ञाने ज्ञेय अनन्ता, समय समय प्रभु जाणो;
अव्याबाध अनन्तु वीर्य, समय समय प्रभु माणो हो चि. ४

ऋद्धि तमारी तेवीज मारी, कदीय न मुजथी न्यारी;
चंद्र प्रभु आदर्श निहाळी, आत्मिक ऋद्धि संभारी हो. चि. ५

निज स्वजाति सिंह निहाळी, अजवृन्दगत हरि चेत्यो;
निज स्वजातीय सिद्ध संभारी, जीव स्वपदमां वहेतो हो. चि. ६

अन्तर दृष्टि अनुभव योगे, जागी निजपद रहियो;
बुद्धिसागर परम महोदय, शाश्वत लक्ष्मी लहियो हो. चि. ७



सुविधिनाथ स्तवन.

नदी यमुनाके तीर-ए राग.

सुविधि जिनेश्वर देव दया दीनपर करो,
करुणावंत महंत विनति ए दील धरो;
भवसागरनी पार उतारो कर ग्रही,
शक्ति अनन्तना स्वामी कहावोछो मही. १

तमनो शो छे भार कहो रवि आगळे,
कीडीनो शो भार के कुंजरने गळे;
कर्मतणो शो भार प्रभुजी तुम छते,
सिंहतणो शो भार अष्टापद त्यां जते २

शुं खद्योतनुं तेज रवि ज्यां झळहळे,
तेम शुं मोहनुं जोर के उपयोग नीकळे;
ससलानुं शुं जोर सिंह आगळ अहो,
अनेकांत ज्यां ज्योति एकांतनुं शुं कहो ३

परम प्रभु वीतराग राग त्यां शुं करे,
देखी इन्द्रनी शक्ति के सुरसहु करगरे;
प्राणजीवन वीतराग हृदयमां मुज वश्या,
तें देखी मोह योधके सहु दूरे खस्या. ४

गुण पर्यायाधार स्मरण हारुं खरु,
ध्यान समाधि योगे अलख निज पद वरु;
परम ब्रह्म जगदीश्वर जय जिनराजजी,
शरणे आव्यो सेवक राखो लाजजी. ५

वार वार श्री वीनति जाणो सहु कहुं,
वार कगाडो न लेश दुःख में वहु सहुं;
बुद्धिसागर सत्य भक्तिथी उद्धारजो,
वन्दन वार हजार विनति ए स्वीकारजो. ६

श्री शीतलनाथ स्तवनम्.

प्रीतलडी बंधाणीरे शीतल जिणंदथुं,
प्रभु विना क्षण मात्र नहि सोहायजो;
प्रेमी विना नहि बीजो ते जाणी शके,
रूप प्रभुनुं देखी मन हरखायजो. प्रीतलडी. १

अन्तरना उपयोगे प्रभुजी दिल वश्या,
भक्ति आधीन प्रभुजी प्राण सनाथजो;
अनुभवयोगे रंज मजीठनो लागीयो,
त्रणभुवनना स्वामी आव्या हाथजो. प्रीतलडी. २

जेम प्रभुना दर्शनमां स्थिरता थती,
तेम प्रभुजी आनन्द आपे वेशजो;
आनन्द दाता भोक्तानी थइ ऐक्यता,
चढी खुमारी यादी आपे हमेशजो. प्रीतलडी. ३

आत्माऽसंख्य प्रदेशे शीतलता खरी,
अवधूत योगी प्रगटावे सुख कंदजो;

औदायिक भाव निवारी उपशम आदिथी;
टाळे सघळा मोहतणा महाफंदजो. मीतलडी. ४

गुणस्थानक निःसरणि चढतो आतमा,
उज्ज्वल योगे पामे शिवपुर म्हेलजो;
क्षायिक भावे सुख अनंतु भोगवे,
निजपद ध्रुवता धारी करतो स्हेलजो. मीतलडी. ५

बाह्य भावनी सर्व उपाधि नासतां,
प्रभु विरहनो नाश थशे निर्धारजो;
अनुभव योगे रंगायो जिनरूपमां,
थाशुं प्रभु समा अन्ते जयकारजो. मीतलडी. ६

निजगुण स्थिरतामां रंगावुं सहजथी,
वस्तु धर्म ज्ञानादिक हुं आधारजो;
बुद्धिसागर अनुभव वाजां वागीयां,
भेट्या शीतल जिनवर जग जयकारजो. मीतलडी. ७



१३

श्रेयांसनाथ स्तवन.

श्री वीर प्रभु चरम ए राग.

श्रेयांस प्रभु अन्तर्यामी, क्षायिक नवलब्धि धणी;
ज्ञाता भ्राता परोपकारी, निर्भय योगी दिनमणि.
प्रभु शुद्धस्वरूप त्हारु जेवुं, प्रभु शुद्ध स्वरुप म्हारु तेवुं;
उज्ज्वळ ध्याने खेंची लेवुं, श्रेयांस. १

प्रभु नाम रुपथी भिन्न खरो, प्रभु अनन्त सुखनो भव्य झरो;
में स्थिर उपयोग दील धर्यो, श्रेयांस. २

उत्पत्ति व्यय ध्रुवता भोगी, योगातीतपण निर्मल योगी;
कर्मातीतथी तुं नीरोगी, श्रेयांस. ३

ध्याने प्रभुनी पासे जावुं, साधनथी साध्यपणुं पावुं;
ज्ञानादर्शे प्रभु घटलावुं, श्रेयांस. ४

प्रभु दर्शन देजो शिव रशिया, प्रभु प्रेमे म्हारा दिल वसिया;
स्थिर उपयोगे जिन उल्लसिया, श्रेयांस. ५

प्रभु परममहोदय पद आपो, प्रभु जिन पदमां मुजनें थापो;
कर्यां कर्म अनादि सहु कापो. श्रेयांस. ६

प्रभु उपादान योगे आवो, भक्तिथी निज गुण विरचावो;
बुद्धिसागर मळीयो ल्हावो, श्रेयांस. ७



१४

वासुपूज्य स्तवनम्.

गिरुआरे गुण तुम तणा. ए राग.

वासुपूज्य त्रिभुवन धणी, परमानन्द विलासीरे;
अकळकळा निर्भय प्रभु, ध्याने नासे उदासीरे. वासुपूज्य. १

जगजीवन जगनाथ छो, परमब्रह्म महादेवारे;
व्यापक ज्ञानथी विष्णु छो, सुरपति करे पद सेवारे. वासुपूज्य. २

आदि अनन्त तुं व्यक्तिथी, एवंभूतथी योगीरे;
अनाद्यनन्त सत्तापणे, गुणपर्यवनो भोगीरे. वासुपूज्य. ३

व्याप्य व्यापकता अभेदता, ज्ञाताज्ञेय अभेदीरे;
भिन्नाभिन्न स्वभाव छे, वेदरहित पण वेदीरे. वासुपूज्य. ४

परम महोदय चिन्मणि, अजरामर अविनाशीरे;
नित्य निरञ्जन सुखमयी, व्यक्तिशुद्ध प्रकाशीरे. वासुपूज्य. ५

निरक्षर अक्षर विभु, जग बंधव जग त्रातारे;
क्षायिक नवलब्धि धणी, ज्ञेय अनन्तना ज्ञातारे. वासुपूज्य. ६

पुरुषोत्तम पुराण तुं, तुज ध्याने सुख लहीशुंरे;
बुद्धिसागर शुद्धता, पामी जिनपद रहीशुंरे. वासुपूज्य. ७



१५

विमलनाथ स्तवनम्.

ज्यां लगे आतम तत्त्वनुं-ए राग.

विमल जिन चरणनी सेवना, शुद्ध भावे करशुं;
अन्तर ज्योति झळहळे, शिव स्थानक ठरशुं   विमल. १

पुद्गल भावना खेलथी, चित्त वृत्ति हठावुं;
परमानन्दनी मोजमां, निर्मल पद पावुं.   विमल. २

अन्तर रमणता आदरी, ध्रुवता निजवरशुं;
मनमोहन जग नायना, उपयोगथी वरशुं.   विमल. ३

असंख्यप्रदेशी आतमा, नित्यानित्य विलासी;
स्याद्वादसत्तामयी सदा, जोतां टळती उदासी.   विमल. ४

पुद्गल ममता त्यागीने. अन्तरमां रहीशुं;
अनुभवअमृत स्वादथी, अक्षय सुख लहीशुं.   विमल. ५

काया वाणी मनथकी, विमलेश्वर न्यारो;
शुद्ध परिणति भक्तिथी, भेटीशुं प्रभु प्यारो.   विमल ६

स्थिर उपयोग प्रभावथी, एकतानथी मळशुं;
बुद्धिसागर भक्तिथी, ज्योति ज्योतमां भळशुं.   विमल. ७

१६

अनंतनाथ स्तवन.

शांति जिन एक मुज ए राग.

अनन्त जिनेश्वर नाथने, वन्दतां पाप पलायरे;
रवि आगळ तम शुं रहे, प्रभु भजे मोह विलायरे अनन्त. १

अनन्त गुणपर्यायपात्र तुं, व्यक्ति एवंभूत साररे;
संग्रह नय परिपूर्णता, ध्याता ते व्यक्तिथी धाररे. अनन्त. २

उपशमभाव क्षयोपशमथी, साध्यनी सिद्धि करायरे;
धर्म निज वस्तु स्वभावमां, स्थिर उपयोग सुहायरे. अनन्त. ३

ज्ञानदर्शन चरणगुण विना, व्यवहार कूल आचाररे;
साध्यलक्ष्ये शुद्ध चेतना, जाणवो शुद्ध व्यवहाररे. अनन्त. ४

द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी, पर्याय द्रव्य अनन्तरे;
शुद्ध आलंबन आदरी, व्यक्तिथी थाय भदंतरे. अनन्त. ५

स्वकीय द्रव्यादिक भावथी, अनंतता अस्तिपणे साररे;
पर द्रव्यादिक अस्तिनी. नास्तिता अनन्त विचाररे अन. ६

वीर्य अनन्त सामर्थ्यथी, उत्पाद व्यय प्रति द्रव्यरे;
छति पर्यायथी ध्रुवता, समय समयमांहि भव्यरे. अनन्त. ७

धर्म अनन्तनो स्वामी तुं, ध्यानमां ध्येय स्वरूपरे;
बुद्धिसागर निज द्रव्यनी, शुद्धि ते जय जिन भूपरे अनन्त. ८



१७

धर्मनाथ स्तवनम्.

धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं–ए राग.

धर्म जिनेश्वर वंदु भावथी, वस्तु धर्म दातार जगत्मां;
वस्तु स्वभाव ते धर्म जणावता, षड् द्रव्योमांहि सार. जगत्मां. १

ज्ञेय हेय आदेय जणावता, सकल द्रव्यछेरे ज्ञेय; जगत्मां
उपादेय चेतननो धर्म छे, पुद्गल आदि रे हेय. जगत्मां. २

भावकर्म ते रागने द्वेष छे, काल अनादिथी जाण, जगत्मां.
द्रव्यकर्मनुं कारण तेह छे, नोकर्म निमित्त आण, जगत्मां. ३

अशुद्धपरिणति योगे बंध छे, शुद्ध परिणतिथी छे मुक्ति, जगत्मां;
अन्तरचेतनसन्मुख योगथी, शुद्ध उपयोगनी युक्ति, जगत्मां ४

कर्त्ता हर्ता चेतन कर्मनो, बाहिर अन्तर योग, जगत्मां
आत्मस्वभावे रमणता आदरे, प्रगटे शिव सुख भोग, जगत्मां ५

सुख अनन्तनी लीला ध्यानमां, चेतन अनुभव पाय, जगत्मां;
ध्रुवयोगतणी स्थिरता होवे, वीर्य अनन्त प्रगटाय, जगत्मां. ६

सविकल्पसमाधि शुभउपयोगमां, ध्याता ध्येयनो भेद, जगत्मां;
शुद्धउपयोगे शुद्ध समाधिमां, टळतो विकल्पनो खेद, जगत्मां. ७

अन्तरमां उतरीने पारखो, निर्मल सुखनो रे नाथ, जगत्मां;
बुद्धिसागर समता एकता, लीनता योगे सनाथ, जगत्मां ८

शान्तिनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव. ए राग.

शान्तिनाथजीरे, शान्ति साची आपो;
उपाधि हरीरे, निज पदमां निज थापो. शान्ति. १

शान्ति केम कहुंरे, तेनो मार्ग बतावो;
विनति माहरीरें, स्वामी दीलमां लावो. शान्ति. २

शान्ति प्रभु कहेरे, धन्य तुं जगमां प्राणी;
शान्ति पामवारे, मनमां उलट आणी. शान्ति. ३

जड ते जडपणेरे, चेतन ज्ञान स्वभावे;
भेदज्ञानना योगथीरे, समकित श्रद्धा थावे. शान्ति. ४

सद्गुरु परंपरारे, आगमना आधारे;
उपशम भावथीरे, शान्ति घटमां धारे. शान्ति. ५

साधु संगतेरे, पामी ज्ञाननी शक्ति;
समता योगथीरे, प्रगटे शान्ति व्यक्ति. शान्ति. ६

चेतन द्रव्यनुंरे, करवुं ध्यान ज भावे;
चंचलता हरे रे, साची शान्ति आवे. शान्ति. ७

सत्त समाधिमांरे, शान्ति सिद्धि बतावे;
रसीया योगियोरे, शान्ति साची पावे. शान्ति ८

सिद्ध समा थईरे, शान्ति रूप सुहावे;
स्थिर उपयोगथीरे, बुद्धिसागर पावे. शान्ति. ९



कुंथुनाथ स्तवनम्

सांभळजो मुनि–ए राग.

कुंथु जिनेश्वर जगजयकारी, चोत्रीस अतिशय धारीरे;
पांत्रीस वाणी गुणथी शोभे, समवसरण सुखकारीरे. कुंथु. १

वस्तुधर्म स्याद्वाद प्ररूपे, केवलज्ञानथी जाणीरे;
धर्म ग्रही पाळी शिव लेवे, जगमांहि बहु प्राणीरे. कुंथु. २

सप्त भंगीने सात नयोथी, षड् द्रव्योने जणावेरे;
उपादेय चेतनना धर्मो, बोधी शिव परखावेरे. कुंथु. ३

शुध्धुं आतम स्वरूप बतावी, मिथ्या भर्म हठावेरे;
अस्तिनास्तिमयधर्म अनन्ता, द्रव्य द्रव्यमां भावेरे. कुंथु. ४

चार निक्षेपे चार प्रमाणे, वस्तु स्वरूपने दाखेरे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावथी, वस्तु स्वरूपने भाखेरे. कुंथु. ५

आनन्दकारी जगहितकारी, गुणपर्यायाधारीरे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवतामयी प्रभु, शाश्वत पद सुखकारीरे, कुंथु. ६

जिन स्वरूप थइ जिनवर सेवी, लहीए अनुभव मेवारे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, सहज योग पद सेवारे. कुंथु. ७



२०

अरप्रभु स्तवनम्.

तुम बहु मैत्रीरे साहिबा. ए राग.

अरजिनवर प्रभु वन्दना, होजो वारंवार;
क्षायिक रत्नत्रयी वर्यो. शुद्ध बुद्धावतार. अर. १

अष्टकर्मना नाशथी, अष्ट गुण धरंत;
गुण एकत्रीशने ते धर्या, साध्य सिद्धि वरंत. अर. २

क्षपकश्रेणि रणक्षेत्रमां, हण्यो मोह प्रचंड;
त्रिभुवनमां साम्राज्यनी, चलवी आण अखण्ड. अर. ३

घाति कर्म प्रकृति हरी, पाम्या केवलज्ञान;
पुरुषोत्तम अरिहाप्रभु, दीधुं देशना दान. अर. ४

योगविकार शमाविने, शेष कर्म जे चार;
हणीने शिवपुर पामीया, धन्य धन्य अवतार. अर. ५

तुज पगले अमे चालशुं. पामीने परमार्थ;
अनुभव रंगे भेटीने, प्रभु थइशुं सनाथ. अर. ६

प्रेम भक्ति उत्साहमां, श्रुतज्ञाने दिल लाय;
बुद्धिसागर ध्यानमां, प्रभुता घटमांहि पाय. अर. ७



२१

मल्लिनाथ स्तवनम्.

स्वामी सीमंधर वीनति. ए राग.

मल्लिजिन सहज स्वरुपनुं, वर्णन कहो केम थायरे;
वैखरी वर्णन शुं करे, कंई परामांहि परखायरे. मल्लि. १

परमब्रह्म पुरुषोत्तम, अनंगी अनागी सदायरे;
विमल परम वीतरागता, अखय अचल महारायरे. मल्लि. २

निर्भय देशना वासीजे, अजर अमर गुणखाणरे;
सहज स्वतंत्र आनन्दमां, भोगवो शिव निर्वाणरे. मल्लि. ३

चेतन असंख्यप्रदेशमां, वीर्य अनंत प्रदेशरे;
छति शुद्धसामर्थ्य भावथी, वापरो समये निःक्लेशरे. मल्लि. ४

त्रिभुवन मुगुट शिरोमणि, परम महोदय धर्मरे;
जगगुरु परमबंधु विभु, सादि अनन्त सुशर्मरे. मल्लि. ५

अलख अगोचर दिनमणि, अविचल पुरुषपुराणरे;
सत्य एक देव तुं जगधणी, धारु हुं शिर तुज आणरे. मल्लि. ६

मल्लिजिन शुद्ध आलंबनें, सेवक जिनपणुं पायरे;
बुद्धिसागर रस रंगमां, भेटिया चिद्घनरायरे. मल्लि. ७



मुनिसुव्रत स्तवनम्.

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी–ए राग.

तार हो तार प्रभु शुद्ध दिनकर विभु, शरण तुं एक छे मुख स्वामी
ज्ञान दर्शन धणी सुख ऋद्धि घणी, नामी पण वस्तुतः तुं अनामी तार १
भोगी पण भोगना फंदथी वेगळो, योगी पण योगथी तुं निराळो;
जाणतो अपरने अपरथी भिन्न तुं, विगत मोही प्रभु शिव म्हालो. तार २
द्रव्य क्षेत्र अने कालने भावथी, आत्म द्रव्ये प्रभु तुं सुहायो;
स्वगुणनी अस्तिता नास्तिता पर तणी, शुद्धकारकमयी व्यक्ति पायो ३
शुद्ध परब्रह्मनी पूर्णता पामीने, विष्णु जगमां प्रभु तुं गवायो
कर्म दोषो हरी हर प्रभु तुं थयो, सत्य महादेव तुं छे सवायो. तार तार ४
शुद्धरूपे रमी राम तुं जग थयो, शुद्ध आनन्दतानो विलासी;
रहेम करतां थयो शुद्ध रहेमान तुं, शुद्ध चैतन्यता धर्म काशी. तार. ५
नामने रूपथी भिन्न तुं छे प्रभु, जाण ते तत्त्व स्याद्वाद ज्ञानी;
शरण तारू ग्रहुं चरण तारू लहुं, रही नहि वात हे नाथ छानी. तार ६
भक्तिना तोरना जोरमां प्रभु मळ्या, सहज आनंदना ओघ प्रगट्या;
जाणुं पणकही शकुं केम निर्वाच्यने, सकळविषय तणा फंद विघट्या. ता ७
एकता लीनता भक्तिना तानमां, थेन आनंदनी दील छवाइ;
बुद्धिसागर प्रभु भेटीया भावथी, मुक्तिनी घेर पामी वधाइ. तार. ८

२३

नमिनाथ स्तवनम्.

ए गुण वीर तणो न विसारु. ए राग.

नमि जिनवर प्रभु चरणमां लागुं, शुद्ध रमणता मागुंरे;
बाह्य परिणति टेव निवारी, शुद्धोपयोगे जागुंरे. नमि. १

अन्तरदृष्टि अमृतवृष्टि, सहजानन्द स्वरुपरे;
तन्मयता प्रभु साथे करतौ, शुद्ध समाधि अनुपरे. नमि. २

असंख्यप्रदेशी चेतनक्षेत्र, गुण अनंत आधाररे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता समये, द्रव्यपणुं जयकाररे. नमि. ३

ज्ञानचरण पर्यायनी शुद्धि, मुक्ति प्रभु मुख भाखेरे;
अस्तिनास्तिनी सप्त भंगीथी, षड् द्रव्योने दाखेरे. नमि. ४

शद्धादिक नयशुद्ध परिणति, उत्तर उत्तर साररे;
कारणे कार्यपणुं नीपजावे, द्रव्यभावे निर्धाररे. नमि. ५

निमित्त पुष्टालंबन सेवी, उपादान गुण शुद्धिरे;
शुद्धरमणता योगे करतो, पामे क्षायिक ऋद्धिरे. नमि. ६

सुखसागर कल्लोले चढीयो, लही सामर्थ्य पर्यायरे;
शुद्ध परिणति चंद्र प्रकाशे, आनन्द क्यांय न मायरे.नमि. ७

शुद्ध परिणति चरण शरणमां, शुद्धोपयोगे रहीशुं रे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, स्वपरप्रकाशी थइशुं रे. नमि. ८



२४

नेमिजिन स्तवनम्.

तुम बहु मंत्री रे साहिबा—ए राग.

नेमि जिनेश्वर वन्दना, होशो वार हजार,
त्रिकरण योगेरे सेवना, प्रीति भक्ति उदार. नेमि. १

सालंबन ध्याने प्रभु, दीलमां आवो सनाथ;
उपयोगे तुज धारणा, आवागमन ते नाथ. नेमि. २

नामादिक निक्षेपथी, आलंबन जयकार;
निरालंबन कारणे, तुज व्यक्ति सुखकार. नेमि. ३

सविकल्प समाधिमां, भासो हृदय मझार;
अन्तर अनुभव ज्योतमां, निर्विकल्प विचार. नेमि. ४

भेदाभेद स्वभावमां, अनन्त गुण पर्याय;
छति सामर्थ्य पर्यायनी, शक्ति व्यक्ति सुहाय. नेमि. ५

झळहळज्योति ज्यां जागती, भासे सर्व पदार्थ;
बुद्धिसागर ज्ञानमां, सिद्ध बुद्ध परमार्थ. नेमि. ६

२५

पार्श्वनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव–ए राग.

पूर्णानन्दमांरे, पार्श्व प्रभु जयकारी;
ध्रुवता शुद्धतारे, शाश्वत सुख भंडारी. १

केवलज्ञानथीरे, लोकालोक प्रकाशो;
ध्याता ध्यानमां रे, साहिब निज घर वासो. २

सहजानन्दनारे, समये समये भोगी;
रत्नत्रयी प्रभुरे, क्षायिक गुणगण योगी. ३

व्यक्ति तुज समीरे, भक्ति तुज मुज करशे;
तुज आलंबनेरे, चेतन शिवपुर ठरशे. ४

साचा भावथीरे, जिनवर सेवा करशुं;
शुद्ध स्वभावमां रे, क्षायिक सद्गुण वरशुं. ५

झटपट त्यागीने रे, खटपट मननी काची;
मळशुं भावथी रे, अनुभव यक्ति ए साची. ६

हळीयो देवशुंरे, ते जन शिव सुख पावे;
साची भक्तिथी रे, आविर्भाव सुहावे. ७

महावीर स्तवन.

साहिब सांभळोरे संभव अरज हमारी. ए राग.

श्री महावीर प्रभुरे, लळी लळी पाये लागुं;
श्री महावीरपणुरे, प्रभु तुज पासे मागुं. श्री. १

द्रव्यभाव वे भेदथीरे, निक्षेपे तेम जाणो;
सातनयोवडेरे, महावीर मनमां आणो. श्री. २

नवधा भक्तिथीरे, महावीर प्रभुथी हळशुं;
स्वजाति ध्यानथीरे, आविर्भावे मळशुं. श्री. ३

श्रुत उपयोगथीरे, प्रगटे वीर्य स्वभावे;
ध्रुवता योगनीरे, महावीर घटमां आवे. श्री. ४

घातोघातथीरे, हळतां मळतां शान्ति;
शुद्ध स्वभावमांरे, रमतां लेश न भ्रान्ति. श्री. ५

सत्ताए रहीरे, वीरता ध्याने प्रगटे;
शब्दादिकनयेरे, कर्म मलिनता विघटे. श्री. ६

अनुभव योगमांरे, महावीर नयणे देखे;
मिथ्यामोहनेरे, आपस्वभावे उवेखे. श्री ७

शुद्ध स्वभावमांरे, महावीर प्रभु घर आवे;
वीर्य अनन्ततारे, बुद्धिसागर पावे. श्री. ८



कलश.

गाइ गाइरे ए जिनवर चोवीशी गाइ.
अन्तर अनुभव योगे रचना, जिनआणाथी बनाइरें. ए जिनवर,
जिन भक्तिथी शक्ति प्रगटे, प्रगटे शुद्ध समाधि;
मिथ्या मोहक्षये समकित गुण, नासे चित्तनी आधिरे. ए जि. १
जिन गुणना उपयोगे निजगुण, प्रगटे अनुभव साचो;
तिरोभावनो आविर्भाव छे, प्रेमधरी त्यां राचोरें. ए जि. २
अनेकान्तनयज्ञान प्रतापे, पंचाचारनी शुद्धि;
उपशम क्षयोपशमने क्षायिक, भावे प्रगटे रुद्धिरे. ए जि. ३
प्रभु गुण गावे भावना भावे, नागकेतु परे मुक्ति;
शुद्ध रमणता भाव पूजा छे, सालंबननी युक्तिरे. ए जि. ४
सालंबन योगी जिन ध्याने, निरालंबन थावे;
कारण कार्यपणुं त्यां जाणो, ज्ञानी हृदयमां भावेरे. ए जि. ५
जिन भक्ति निज शक्ति वधारे, शुभ उपयोगना दावे;
शुद्धोपयोगे सहेजे आवे, स्याद्वादी मन भावेरे ए जि. ६
गाम डभोइ यशोविजय गुरु, चरणनी यात्रा कीधी;
उपाध्यायनी देरीमां रचना, पूर्ण चोवीशीनी सिद्धिरे, ए जि. ७
उपाध्याय गुरु चरण पसाये, भक्ति रंग उर धारी;
भावपूजा जिनवरनी करतां, जयजय मंगलकारीरे ए जि. ८
सम्वत ओगणिश पांसठ साले, फाल्गुन पूर्णिमा सारी;
रविवार दिन चढते पहोरे, पूर्ण रची जयकारीरे. ए जि. ९
लोढण पार्श्व जिनेश्वर प्रेमे, जे भणशे नरनारी;
बुद्धिसागर पग पग मंगल, पामे संघ निर्धारीरे. ए जि.१०



सीमंधर स्तवन.

(नदी यमुना के तीर उडे दोय पंखीया—ए राग.

सीमंधर जिनराज कृपालु तारजो,
जन्म जराना दुखथी प्रभुजी उगारजो;
विद्यमान प्रभु वात हृदयनी जाणता,
साचा स्वामी सुखकर वीनति मानता. १

काल अनादि मोहवशे बहु दुःख लह्यां,
चार गतिनां दुःख विचित्र सहु सह्यां;
मोहवशे धामधूममां धर्मपणुं ग्रह्यु;
शुद्धस्वरुपस्याद्वाद तत्त्व नहि सद्दह्यु. २

गाडरीया प्रवाहमां दृष्टिरागे रह्यो,
लोकोत्तर जिनधर्म परखीने में नवी लह्यो;
बाह्यक्रिया रूचि धामधूममां हुं पडयो,
गुरुगमज्ञान विना हुं भवोभव लडथडयो. ३

प्रभुतुज शासन पुण्यथी पामी मे जाणीयुं,
मिथ्यादर्शन जोर कुमतिनुं वामियुं;
परख्युं सत्य स्वरुप जिनेश्वर धर्मनुं,
रहेशे जोर हवे केम आठे कर्मनुं; ४

तुज करुणा एक शरण सेवकने जाणशो,
जाणी बाळक म्हारो करुणा आणशो.
म्हारे शरणुं एक जिनेश्वर जगधणी,
तारो करुणावंत महेश्वर दिनमणि; ५
बुद्धिसागर बाळ तमारो करगरे.

साचा स्वामी सेवक शिवपद सुख वरे.
उपादाननी शुद्धि-प्रभुता जागशे,
जित नगारु-अनुभव ज्ञाने वागशे ६

आत्मभावरमणता.

साहिब सांभळोरे—ए राग.

धन्यते क्षण घडीरे, समता-भावे रहीशुं;
स्थिर उपयोगथीरे, शाश्वत आनन्द लहीशुं. धन्य. १

निश्चयने व्यवहारथीरे, संयम साचुं धरशुं;
उदासीन शेरीथीरे, मोक्ष नगर संचरशुं. धन्य. २

निस्संगी थईरे, ध्याइश चेतन देवा
द्रव्यगुणपर्यायनोरे, ज्ञाने निजगुण सेवा. धन्य. ३

स्वप्ना सारिखीरे, लागशे दुनियादारी;
अन्तर्दृष्टिथीरे, स्थिरता घटमां भारी धन्य. ४

मनने स्थिर करीरे, धरशुं शक्तिज घटमां;
उपाधि परिहरीरे, पडशुं नहि खटपटमां. धन्य. ५

शातावेदनीरे, उदये हर्ष न धरशुं;
अशाता उपजेरे, मनमां शोक न करशुं. धन्य. ६

विषयो विष समारे, अवधूत सरखा थाशुं;
संवरभावथीरे, निर्भय देशे जाशुं. धन्य. ७

धरशुं धैर्यनेरे, कर्म कटक संहरशुं;

स्थिरउपयोगथीरे, जयलक्ष्मी झट वरशुं. धन्य. ८
ज्ञानी संगतेरे, अनुभव वातो करशुं।
प्रभुता आत्मनीरे, सहज दशामां वरशुं. धन्य. ९
ऋद्धि आत्मनीरे, तेमां क्षण क्षण राचुं;
चढताभावथीरे, बुद्धिसागर याचुं. धन्य. १०



सहज स्वरूपवन्दन.

जय सहज स्वरूपी, रूपारूपी, जगगुरु स्वामी, निर्नामी. १
जयजय सुखकारी जग बलिहारी, बहु उपकारी, जय स्वामी. २
हुं शरण ग्रहुंछुं पाय पडुंछुं. विनति करुछुं, शिरनामी. ३
अभयपद चहुंछुं करगरी कहुंछुं, शरणे रहुंछुं, बहुनामी. ४
मने मार्ग बतावो, करुणा लावो, दिलमां आवो, विश्रामी. ५
विनती उर धारो, सेवक तारो, शरण तमारो, हे स्वामी. ६
आपो सुख शान्ति, टाळी भ्रान्ति, अर्पी कान्ति, गुणरामी. ७
जय सद्गुरु देवा, करुछुं सेवा, मीठा मेवा, शिवरामी. ८



३१

शुद्धदृष्टि. दुहा.

शुद्धदृष्टि उपयोगमां, अनुभव सुख पमाय;
टळे विकल्पनी श्रेणियो, परम प्रभु परखाय. १

शुद्धसमाधि स्वरूपमां, निर्विकल्प उपयोग;
परमज्योति झळके भली, आनन्दअनुभव भोग २

अन्तर्दृष्टि शुद्धिथी, जीवन जग जयकार;
चिदानन्द मेळो मळे, नासे दुःख विकार. ३

चैतन्यसृष्टिव्यक्तिनी, लीला अपरंपार;
स्वयं देखतो जाणतो, अनुभव निश्चयधार. ४

विवेकदृष्टिजागृति, निद्रा नहीं लगार;
ज्ञानदृष्टिरविनी प्रभा, त्यां नहि तमः प्रचार. ५

जड चेतननी भिन्नता, इष्टानिष्ट न दृष्टि;
निर्मलज्ञाननी ज्योतिमां, समतामेघ सुवृष्टि. ६

प्रतिप्रदेशे प्रगटतुं, सुख अनन्त अपार;
भोगवतां निज सुखने, नासे मिथ्याचार. ७

विषयवृत्तिवेगो टळे, गुणस्थानक सोपान;
चढतां निर्मळता घणी, अनुक्रमे भगवान्. ८

वैराग्ये मन निर्मलुं, ज्ञाने निज उपयोग;
वीर्ये स्थिरता संपजे, होवे शिवसुख भोग. ९

परम प्रभु ध्याने मळ्या, आव्यो अनुभव बेश;
बुद्धिसागर भक्तिथी, सहजानंद हमेश. १०

डभोइ लोढणपार्श्वनाथ स्तवन.

सुमतिनाथ गुण शुं मळीजी-ए राग.

लोढण पार्श्व जिनेश्वर वंदु, भाव धरी सुखकारी;
धरणेन्द्र पद्मावती सेवे, पार्श्व यक्ष गुणकारी.
प्रभुजी म्हारा जगमां तुज बलिहारी. १

मन वचन कायाथी भक्ति, करतां मंगळकारी;
ऋद्धि सिद्धि तुष्टि पुष्टि, अनुभव सुख निर्धारी. प्रभुजी. २

हरिहर ब्रह्मा अलख निरंजन, वर्तो जग जयकारी;
पुरिसादानी पुरुषोत्तम तुं, जग जन आनंदकारी. प्रभुजी. ३

तुज सेवाथी शिव सुख मेवा, चिंतामणि हितकारी;
कामकुंभ श्री कल्पवृक्ष तुं, परमानंद पदधारी. प्रभुजी. ४

तुज सेवामां निशदिन रहीशुं, प्राणजीवन उर धारी;
बुद्धिसागर प्रेमे गावे, लेशो आ विनति स्वीकारी. प्रभुजी. ५

अथ पुद्गल छत्रीशी ॥ दुहा ॥

नित्यानित्यानेक एक, भिन्नाभिन्न स्वरूप;
तेने प्रणमो भविजना, लोकाग्रे चिद्रूप. १

आत्मस्वरूप विचारणा, आत्मध्यानमां लीन;
चेतन उपयोगी थइ, करे कर्मने छिन्न. २

धर्म धर्म जग सहु करे, करता पर उपदेश;
आत्मधर्म विचार वण, समजे नाहि ते क्लेश. ३

धर्म नाम सामान्यमां, मूर्खजनो भरमाय;
आपआपनी ताणमां, राग द्वेष नहि जाय. ४

नदी प्रवाहे काष्ठ जेम, सरितामांहि तणाय;
मनप्रवाह मोहथी, भव्यजनो भटकाय. ५

अनेकमत जगमां अहो, भिन्न भिन्न कहे तत्त्व;
सत्यतत्त्व सापेक्ष पण, समजे नहि जग सत्त्व. ६
फेर फुंदडी खावतां, स्थावर फरतुं जणाय;
मिथ्याज्ञाने जीवने, ए दृष्टान्तो न्याय. ७

दुःषम पंचम काळमां, यथामति अनुसार;
एकांते उपदेश दे, मतिया जन निर्धार. ८
षट् दर्शनना चक्रमां, युक्ति वृन्द विस्तार,
काल अनादि अनंतथी, सामान्ये ते धार. ९

भेद तेहना बहु कह्या, पुण्यवंत लहे पार;
शुद्ध धर्मने आदरी, तरशे आ संसार. १०
यावत् चेतन धर्मनो, मर्म न समजे लोक;
तावत् कष्ट क्रिया सहु, थाशे जाणो फोक. ११

रत्नत्रयिना स्वामी जे, तीर्थंकर भगवंत;
समवसरणमां बेसीने, दिये देशना संत. १२
देव मनुष्य तिर्यंचने, उपदेशे जिन धर्म;
जिनवर वाणी सुणतां, भागे मिथ्या भर्म. १३

कर्मरूप पुद्गलतणो, काल अनादि योग;
चतुर्गतिमां भटकतां, सुख दुःख धरे वियोग. १४
पुद्गल संगे राचियो, नाच्यो माच्यो छेक
निगोद दुःख शुं विसर्युं, भूल्यो सत्य विवेक. १५

बहिरात्मभावना त्यागीने, शुद्ध स्वरूप निहाळ;
परपुद्गलसंयोग सहु, जाणो माया जाळ. १६
आतम ते परमातमा, व्यापी रह्यो शरीर;
आपोआप विचारतां, चेते चेतन धीर. १७
रूपानो भ्रम सीपमां, देहे चेतन भ्रम;
मोहें मुंझी आतमा, बांधे छे सहु कर्म. १८
बाजीगर बाजी रचे, जूठी रचना जेम;
म्हारु त्हारु जूठ छे, चेतन मुंझे केम. १९
चतुर्गतिना चोकमां, वेचायो बहु वार;
त्हारु मान शुं त्यां रह्युं, चेतन चित्त विचार. २०
एकेन्द्रिमां तुं भम्यो, वनस्पति निर्धार;
लशुन आदुमां उपन्यो, भूली भान विचार. २१
शंख कोडा जन्म लेइ, पाम्यो दुःख अपार;
जु मांकण अवतारमां, भान नहि मन धार. २२
वृश्चिक भ्रमरा तीड थइ, भटक्यो वारंवार;
आत्मतत्त्वश्रद्धा विना, थइ न शान्ति लगार. २३
जलचर खेचर भूचरे, भमियो वार अनेक;
दुःख अनंतां त्यां सह्यां, जाग जाग धरी टेक. २४
परमाधामी वश पड्यो, ज्यां नहि सुख लगार;
छेदन भेदन ताडना, क्षेत्र वेदना धार. २५
हाय हाय त्यां तें करी, रोतो खमे प्रहार;
अधुना शुं तुं भूलियो, जैनधर्म निर्धार. २६
नरकमांहिथी नीकळुं, करु कर्मनो अन्त;
धर्म भावना क्यां गइ, चेत चेत गुणवन्त. २७

जैनधर्मथी संपजे, सकल शर्म निर्धार;
वारंवार नहि मळे, सामग्री सुखकार. २८
जन्म्यो त्यारे लेश न, साथे लाव्यो जाण;
कुटुंब लक्ष्मी कामिनी, दुःख उपाधि खाण. २९
रत्नद्वीपमां जाइने, रत्न न लेवे जेह;
मूढ तुल्य शुं तुं थयो, चेत चेत सुखगेह. ३०
चार दीवसनी छांयडी, बाह्य ऋद्धिनी होय;
पांमी तेनो मद करे, भूल्यो मूढ ते जोय. ३१
संगत तुजने जेहवी, तेवो तुं थइ जाय;
मृत्यु शिरपर गाजतुं, आयु नष्टज थाय. ३२
लाखवातनी वात एक, संक्षेपे सुण भव्य;
जैनधर्म आराधना, जगमां ए कर्तव्य. ३३
आत्मभावमां रमणता, सत्य शर्म दातार;
पुद्गल ममता परिहरी, चेतो चित्त मझार. ३४
शुद्धचेतना योगथी, होशे सुख अनन्त;
शुद्धचरणना योगथी, भाखे छे भगवन्त. ३५
श्वासोश्वासो जाय छे, अनंत मूल्य समान;
बुद्धिसागर ध्यानथी, प्रगट थशे भगवान्. ३६
पुद्गल छत्रीशी कही, चेतनने हितकार;
गाम पादरा शोभता, शान्तिनाथ जयकार. ३७
वकील मोहनलालना, हेते कीधी सार;
आत्मभावमां जे रमे, ते पामे भवपार. ३८
ओगणिस अट्ठावननी, फाल्गुन कृष्ण रसाल.
तृतिया तीथी वांचतां, थाशे मंगलमाल. ३९



श्री यशोविजय उपाध्यायगुणस्तवन. (गुंहली.)

अली साहेली. ए राग.

वाजकवरजी यशोविजयजी, मुनिवर वन्दन कीजीए;
धन्यधन्यखरे, उपाध्याय दर्शन करतां मन रीजीए. १
सम्वतसत्तरशत जयकारी, जिन शासनश्वेतांवरभारी;
वाचक प्रगटया जग सुखकारी, वाचक १
वैरागी, त्यागी, सौभागी, अन्तरदृष्टि घटमां जागी;
जिनशासन शोभाना रागी, वाचक २
जंगम तीरथ ज्ञानी ध्यानी, परभावतणा नहि अभिमानी;
श्रुतज्ञाने वात न को छानी, वाचक ३
भाषा पुस्तक रचना सारी, संस्कृत भाषामां हुंशियारी;
शतग्रंथ रच्या ज्ञाने भारी, वाचक. ४
जिनसूत्र हार्द अनुभव जाणे, जे मत पोतानो नहिताणे;
जे वर्ते चढते गुणठाणे, वाचक. ५
जिनशासन जेणे अजवाळ्युं, श्रुततीरथ जीर्ण थतुं वाळ्युं;
नास्तिक पन्थोनुं बी बाळ्युं. वाचक. ६
अनुभवअमृतरसना भोगी, जे सहजपणे अन्तरयोगी;
मिथ्यात्वभावथी नहि रोगी, वाचक. ७
महाधर्म प्रभावक जे शूरा, शाब्दिकतार्किक पंडित पूरा;
चर्चाज्ञाने जे भरपूरा, वाचक. ८
बहु देशोदेश विहार कर्या, उपदेशे जीव अनेक तर्या;
गुर्जर देशे जे बहु विचर्या वाचक. ९
स्वर्गगमन गाम डभोई थयुं, अविचल जेनुं जग नाम रह्युं;
जीवंतां शिव सुख दील लह्युं, वाचक. १०

फागण एकादशी अजवाळी, ओगणीस पांसठनी लटकाळी;
गाम डभोई आव्या गुणमाळी, वाचक. ११
श्रीवाचकपद वंदन कीधुं, अनुभवअमृत प्रेमे पीधुं;
बुद्धिसागर कारज सिध्ध्युं, वाचक. १२

श्री यशोविजयजी उपाध्याय गुंहली.

वेनी रविसागर गुरु वंदीए—ए राग.

प्रेमे यशोविजय गुरु वंदीए, जे पंचमहाव्रतधारीरे;
साल सत्तरशतमां जे थया, उपाध्याय पदवी जयकारीरे. प्रेमे. १
बारवर्ष काशीमां जे भण्या, वैयाकरण नैयायिक मोटारे;
तार्किक शिरोमणि पद लह्युं, काढी नाखे मिथ्यात्वना गोटारे. २
देशोदेश विहार कर्या घणा, गुर्जर मालव हिंदुस्थानरे;
मरुधरमांहि विचर्या घणा, टाळे परवादि अभिमानरे. प्रेमे. ३
विजयप्रभसूरीश्वर राज्यमां, जिनशासन उन्नति कीधीरे;
अष्टोत्तरशत शुभ ग्रंथने, रची कीधी धर्म प्रसिद्धिरे. प्रेमे. ४
आनन्दघन मुनिवरने मळ्या, अष्टपदी त्यारे बनाइरे;
तेम आनन्दघनजीए रची, जुओ ज्ञानतणी अधिकाइरे. प्रेमे. ५
अध्यात्मस्वरूपमां झीलता, निश्चय व्यवहारमां पूरारे;
वैरागी त्यागीशिरोमणि, ज्ञान ध्यान समाधिमां शूरारे. प्रेमे. ६
सत्तरशतीपस्तालीशमां, मौन एकादशी सुखकारीरे;
स्वर्गगमन डभोइमां कर्युं, एवा गुरुनी जाउं बलिहारीरे. प्रेमे. ७

ओगणीस पांसठनी सालमां, एकादशी फागण अजुवाळीरे;
भेटी यशोविजय गुरु पादुका, मारा मनतो आज दीवाळीरें. प्रेमे.८
एवा सद्गुरुना गुण गावतां, थाउ अनुभव अमृत भोगीरे;
बुद्धिसागर संयम श्रेणिपर, चढे समता समाधिए योगीरे. प्रेमे. ९

उपाध्याय गुंहळी.

सजनी मोरी पास जिनेश्वर—ए राग.

गुरु म्हारा यशोविजय जयकारीरे,
गुरु म्हारा दर्शननी बलिहारीरे;
गुरु म्हारा प्रतिबोध्यां नर नारीरे,
गुरु म्हारा जगमांहि उपकारीरे. १

गुरु म्हारा उपाध्याय पद धारीरे,
गुरु म्हारा जगमां महा अवतारीरे;
गुरु म्हारा अनुभव अमृत क्यारीरे,
गुरु म्हारा वाणी जग हितकारीरे. २

गुरु म्हारा ग्रंथ रच्या सुखकारीरे,
गुरु म्हारा धर्मनी देशना सारीरे;
गुरु म्हारा ध्यान समाधि प्यारीरे,
गुरु म्हारा मिथ्यातम हरे भारीरे. ३

गुरु म्हारा वाणी दुःख हरनारीरे,
गुरु म्हारा शिवपद ध्रुवताभारीरे;

गुरु म्हारा त्यागी दुनियादारीरे,
गुरु म्हारा परिणति त्यागी नठारीरे. ४

गुरु म्हारा दर्शन द्यो निरधारीरे,
गुरु म्हारा स्हाय करो अणधारीरे;
गुरु म्हारा तुज आणा शिव वारीरे,
गुरु म्हारा मळजो भक्ति विचारीरे. ५

गुरु म्हारा उत्कृष्टा अनगारीरे,
गुरु म्हारा वर्ते पाद विहारीरे;
गुरु म्हारा अरजी लेजो स्वीकारीरे,
गुरु म्हारा भक्ति एक तमारीरे. ६

गुरु म्हारा आव्या डभोई चित्तधारीरे,
गुरु म्हारा मळीया मंगलकारीरे;
गुरु म्हारा बुद्धिसागर अनगारीरे,
गुरु म्हारा वंदन वार हजारीरे. ७



श्री यशोविजय पादुका–दर्शन वंदन.

लावणी.

धन्य धन्य दीवसने धन्य घडी छे आजे,
भेट्या यशोविजयजी भवजल तरवा काजे;
गुरु भेटीने हरखित थयुं मन मारु अपार,
जिनशासन वर्ते सदाय जयजयकार. १

गुरु अष्टोत्तर शत ग्रंथ रच्या जयकारी,
तार्किक शिरोमणि पदवी जगमां धारी;
गुरु उपाध्याय पदवीना धारक प्यारा,
श्वेतांबर संघे प्रगट्या जयजयकारा २
संवत सत्तर पिस्तालीश मागशिर मास,
उज्जवल आगियारस गुरुनो स्वर्गे वास;
दर्भावती नगरी गुरुजी जग हितकारी,
बुद्धिसागर वन्दे छे वार हजारी. ३
गुरु मळीया प्रेमे वीनति उर स्वीकारी,
दीठा चक्षुथी करुणाना भंडारी;
गुरु भक्ति वशमां अनुभव द्यो निर्धारी,
क्षणक्षणमां वंदन होशो वार हजारी. ४
जय मंगलकारी मूर्ति तव मनोहारी,
देशो दर्शनने पुनः पुनः उपकारी;
जे प्रेम धरी आ गाशे नरनें नारी,
बुद्धिसागर सुख पामे मंगलकारी. ५

श्री यशोविजयजी आवाहन मंत्र स्तवनम्.

द्वारकांना वासीरे अवसरीए व्हेला आवजोजी—ए राग.

मन मंदिरना वासीरे, सद्गुरुजी वहेला आवशोजी;
आवो आवो भक्तिवशे भगवान्. मन.
वाचक पदना अधिकारीरे, यशोविजयजी आवशोरे;
नहिं आवो तो थाशे सेवकना बेहाल. मन. १

कामने हठावीरे, स्थिरता शुद्ध आपजोजी;
टाळो टाळो मन चंचलताना वेग. मन. २

लोभने हठावीरे, संतोष गुण आपीनेजी;
आपो आपो सुख समाधि अपार. मन. ३

शान्ति तुष्टि दातारे, वृद्धि करो बुद्धिनीजी;
टाळो टाळो विषय वासनाना दोष. मन. ४

भक्तिना भेर्यारे, व्हेला प्रभु आवशोजी;
करो लीला ल्हेर गुरुजी अपार. मन. ५

साची भक्ति जाणीरे, वार न लगाडशोजी;
देशो दर्शन कृपा करी साक्षात्. मन. ६

बुद्धिसागर प्रेमेरे, दीठा गुरु देवताजी;
फळी फळी मननी सघळीरे आश. मन. ७

उपाध्याय स्तवनम्.

धनघटा भुवन रंग छाया—ए राग.

नमुं यशोविजय गुरुराया, जिनशासन जय वर्ताया;
सत्तर पिस्तालीश आया, मौन एकादशी सुखदाया.
तमे स्वर्ग गमन सिधाव्या नमुं—जिन. १

वाचकनी पदवी पाया, संवेगी मुख्य कहाया;
शुभ तार्किक ग्रंथ रचाया. नमुं—जिन. २

श्वेतांबर संघ सुहाया, दर्भावती नगरी आया;
धन्य धन्य गुरु महाराया, नमुं-जिन. ३
कीर्तिथी त्रिभुवन छाया, करो स्हाय गुरु मन भाव्या;
बुद्धिसागर गुण गाया. नमुं-जिन. ४

शुद्ध ब्रह्मज्ञान.

मन मोह्या जंगल केरी हरणीने-ए राग.

शुद्ध चिद्घनरुपने ध्यावुंरे, शुद्ध चिद्घन रंगने ध्यावुंरे; शुद्ध.
कामने मारी मोहने हठावी, ब्रह्मरुप होइ जाउरे. शुद्ध. १
अलखनी अवधूत दशामां, क्यांइ न जावुं आवुंरे; शुद्ध.
अनहद तुर बजावी ध्याने, मोहनुं जोर हठावुंरे. शुद्ध. २
अन्तरनो अलबेलो भेटी, परमानंदमय थावुंरे; शुद्ध.
श्वासोश्वासे अजपाजापे, चिदानंदघन गावुंरे. शुद्ध ३
सुरता लागी कबु न छूटे, प्रभु मळे हरखावुंरे; शुद्ध.
इंडा पिंगला सुषुम्णा साधी, ब्रह्मरन्ध्रमां जावुंरे. शुद्ध. ४
ध्यान समाधि शुद्ध जगावी, परमब्रह्म थइ जावुंरे. शुद्ध.
बुद्धिसागर अलख निरंजन, शक्ति अनंत जगावुंरे. शुद्ध. ५

उपाध्यायजी स्तवनम्.

ए गुण वीरतणो न विसारुं–ए राग.

वंदु सद्गुरुना पदपंकज, यशोविजय जयकारीरे;
उपाध्यायजी ज्ञानी ध्यानी, भावदया उपकारीरे. वंदु. १
अष्टोत्तर शत ग्रंथ अधिक शुभ, संस्कृत रचना सारीरे;
जिन शासननी उन्नति कीधी, संविग्न पक्ष वधारीरे. वंदु. २
दर्शन ज्ञानचरणमां लीना, पंच महाव्रत धारीरे;
द्रव्य क्षेत्र काल भाव प्रमाणे, परम प्रभावनाकारीरे. वंदु. ३
निश्चयने व्यवहारमां पूरा, साधन साध्य विचारीरे;
ज्ञान क्रियाना साधक शूरा, प्रगट्या महा अवतारीरे. वंदु ४
तुज वाणी अमृत गुण खाणी, अनेकान्त नयधारीरे;
तुज ग्रंथोना अभ्यासक जन, अनुभव ले निर्धारीरे. वंदु. ५
जिनशासनना धोरी कलियुग, गीतारथ अनगारीरे;
दीर्घदृष्टि जिनशासन रक्षक, ध्याने घट उजियारीरे. वंदु ६
प्राणजीवन मुज हृदयना स्वामी, जंगम तीर्थ सुधारीरे;
तुज विरहे मुज चेन पडे नहि, दर्शन द्यो सुखकारीरे. वंदु. ७
अनेकान्तनयज्ञान वतावी, सेवक श्रद्धा वधारीरे;
ए उपकार तमारो न भूलुं, भवोभव तुं हितकारीरे वंदु. ८
अष्ट सिद्धि रूद्धि शुभदायक, सेवाग्रही एक तारीरे;
बुद्धिसागर स्हाय करो गुरु, वन्दु वार हजारीरे वंदु ९



उपाध्याय स्तवन.

सुमतिनाथ गुणशुं मळीजी. ए राग.

ज्ञान दाता दाता गुरुजी, वाचकवर जयकार;
यशोविजयजी भेटीयाजी, गाम डभोइ मजार.
मनमोहन स्वामी, धन्य धन्य तुम अवतार. १
चार अनुयोगे करीजी, देशना अमृतधार;
अन्तर अनुभव दाखवोजी, श्रुतवाणीनुं सार. मन० २
चउ निक्षेप प्रमाणथीजी, सातनयोथी विचार;
षड्द्रव्यो दर्शावताजी, गुणपर्यायाधार; मन० ३
उपादेय चेतन खरोजी, पुद्गल वस्तुथी भिन्न;
असंख्यप्रदेशी आतमाजी, ज्ञान आनन्द छे चिन्ह. मन ४
भूत चतुष्के ते नहिजी, ज्ञान आनन्द स्वभाव;
ज्ञानानन्द स्वभावथीजी, चेतन निजगुणदाव. मन. ५
अन्तरदृष्टि शोधतांजी, स्थिरतायोगे जणाय;
परम प्रभुता परखतांजी, आनन्द चित्त न माय. मन ६
अन्तर दुःखने बाहिर दुःखडां, योगारंभे जणाय;
बाहिर दुःखने अन्तर सुखडां, स्थिरता योगे सुहाय.मन.७
अन्तर सुखनी श्रद्धा वण तो, बाहिर सुख न त्यजाय;
यदि तजे पण ज्ञान विना जीव, पाछो तिहां भटकाय.मन.८
अनुभव रंग मजीठ समो ज्यां, लाग्यो त्यां बहु सुख;
अन्तरमां रंगातां ज्ञाने, नासे अनादिनां दुःख. मन. ९
शुद्ध चेतना ध्यानथीजी, अनुभव अमृत स्वाद,
बुद्धिसागर योगथीजी, प्रगटे अनहद नाद मन. १०

अध्यात्म वचनामृत ग्रन्थ.

दुहा

ऐन्द्रवृन्दनतवीर जिन, नमतां आत्मप्रकाश;
अध्यात्म सुखमां मग्नता, शाश्वत शिवपुरवास. १
आत्माने उद्देशीने, पंचाचार प्रधान;
शब्द अर्थ योगे सदा, लहीए आतमज्ञान. २
मैत्रादि वासित चित्त, निर्मळ बाह्याचार;
अध्यात्म तत्त्व निर्मळ कहुं, रुढयर्थी जयकार ३
एवंभूतनये भलो, प्रथम अर्थ सुखकार;
यथायोग्य बीजो कह्यो; अर्थ ऋजु व्यवहार ४
विगतनय भ्रांति जना, स्वरूप सन्मुख चित्त;
स्याद्वाद दृष्टि दृश्य तत्त्व, आत्मपात्र गुणवित्त. ५
युक्ति धेनुने अनुसरे, मनोवत्स धरी प्रेम.
तुच्छाग्रह मन वांदरुं, खेंचे पुच्छने तेम. ६
अनर्थ माटे युक्तियो, हठ कदाग्रह जोरः
बुद्धि अवळी परिणमे, हस्ति हणे मत तोर. ७
पामी हणे नहीं पामीने, करे विकल्पो मूढ;
हस्ती हणे ए न्यायमां, समजो साचुं गूढ. ८
हेतुवादथी जाणीए, अतीन्द्रिय सहु ज्ञेय;
काळे निश्चय तत्त्वमां, हेय ज्ञेय आदेय. ९
आगमवादे आप्तनी, करो परीक्षा सत्य;
परोक्ष वस्तु सद्दहो, चेतन आदि सुकृत्य. १०
छद्मस्थ केवलज्ञान वण, चक्षु रहित कहेवाय;
हस्तस्पर्श सम शास्त्र ज्ञान, युक्ति मनधर न्याय. ११

शास्त्राज्ञा निरपेक्षने, शुद्ध नहि हितकार;
जेम भींतहण नारने, नहि पदस्पर्श विचार. १२

वचन अहो वीतरागनां, वर्ते छे जयकार;
कयुं प्रयोजन ज्ञानिने, वदे जूठ दुःखकार. १३

रागद्वेषाभावथी, भाखे केवली सत्य;
सत्य वचन श्रद्धा थतां, प्रगटे उत्तम कृत्य. १४

जिनवाणी आगळ करे, कर्या अग्र जिनराज;
श्री जिनवर आगळ करे, सर्व सिद्धि साम्राज्य १५

चर्म चक्षुधारी सहु, अवधि चक्षु छे देव;
सर्व चक्षु सिद्धो कह्या, शास्त्र चक्षु मुनि सेव. १६

कष छेदने तापथी, यथा स्वर्ण परखाय;
सूत्र तथा परखाय छे, पंडित समजो न्याय. १७

विधि अने प्रतिषेधनी, कष शुद्धि कहेवाय;
अधिकार ज्यां वर्णव्या, शास्त्र सदा सुखदाय १८

ध्यानाध्ययन विधि व्रज, हिंसादिकना त्याग;
निषेध मार्गो जाणीए, प्रगटे सद्गुण राग १९

अर्थ काम विमिश्र जे, कूटस कथा भरपूर;
आनुषंगिक मोक्षमां, कष शुद्धि दुःख दूर. २०

विधि मार्ग निषेधनी, क्रिया क्षेमकर योग;
वर्णन यत्र ते शास्त्र छे, छेद शुद्धिमत् भोग. २१

सर्वनय सापेक्षथी, पामे जन परमार्थ;
ताप शुद्धि ते जाणीए, लगे न दोषनो सार्थ. २२

नयसापेक्ष विचारणा, करतां दोष विलाय;
सम्यग्दृष्टि जीवने, परमबोध घट थाय. २३

आत्मतत्त्व उद्देशीने, करे क्रियाओ सर्व;
पण हुं तुं नहि बाह्यमां, टाळे सघळा गर्व. २४
हुं तुं वृत्ति बाह्यमां, वर्ते तो अज्ञान;
आत्मतत्त्वना ज्ञानथी, नासे मिथ्या भान. २५

चक्षु थकी देखाय जे, पौद्गलिक पर्याय;
जडता तेमां व्यापी छे, समजुने समजाय २६
जड वस्तु चेतन नहि, जडथी चेतन भिन्न;
आत्मरूपने ध्यावतां, शुद्ध समाधि लीन. २७

जडमां सुख न होय छे, सुख नहि जडनो धर्म;
जडना मोहे प्राणिया, बांधे निशदिन कर्म. २८
क्षणिक जड वस्तु अहो, ते पर शानो राग;
ज्ञानदृष्टिथी देखतां, प्रगटे छे वैराग्य २९

भेदज्ञान प्रगटया थकी, प्रगटे अन्तरदृष्टि;
गुणपर्याय विचारणा, प्रगटे निजगुण सृष्टि. ३०
अन्तरदृष्टि धारणा, अन्तरदृष्टि ध्यान;
अन्तरदृष्टि समाधिमां, प्रगटे छे भगवान ३१

अन्तरदृष्टि योगथी, प्रगटे वीर्य अनंत;
चिदानन्दनी पूर्णता, परमब्रह्म भगवंत. ३२
शोधकदृष्टि जो जगे; तो तुं अन्तरशोध;
स्थिरोपयोगो शोधतां, प्रगटे साचो बोध. ३३

हुं तुंनो अध्यास जे, जडमां ते सहु फोक;
जड धर्मो नहि आत्मना, भूले दुनिया फोक- ३४
देहादिकनां कृत्यने, माने आत्मिक कृत्य;
आत्म धर्म नहि जाणतो, शुं पामे ते सत्य. ३५

धामधूम पुद्गलतणी, तेमां माने धर्म;
बाह्यदृष्टिजन भूलता, बांधे उलटां कर्म. ३६
कर्मयोगथी भोगवे, पुद्गलना पर्याय;
अन्तरथी न्यारो रहे, ज्ञानी नहि लेपाय. ३७
ज्ञानी अने अज्ञानिनां, बाहिर् कृत्य समान;
भोजन आदि जाणीए, अन्तरथी असमान. ३८
खावे पीवे ज्ञानी पण, रहे अन्तरथी भिन्न;
पण अज्ञानी मोहथी, बाह्य भाव लयलीन. ३९
दयाक्षमा आचारथी, ज्ञानीजन व्यवहार;
जगमां साचो जाणीए, परोपकृति करनार. ४०
विवेकदृष्टि रत्नवण, अन्तर बाह्याचार;
अज्ञानिना फोक छे, सापेक्षाए धार. ४१
अहंभाव जडमां जगे, अन्तरमां अंधेर;
अहंभाव जडनो टळे, चिदानंदनी लहेर. ४२
पुद्गलना पर्यायने, चुंथ्याथी शुं सुख;
सुखबुद्धि भ्रांति थकी, अन्ते दुःखनुं दुःख. ४३
करो उपायो कोटिपण, जडमां सुख न लेश;
अहंभाव जडमां थतां, मोहादिकनो क्लेश. ४४
अहंभाव जडमां जगे, राग दोषनुं जोर;
अहंभावमां मग्नता, त्यां अंधारुं घोर. ४५
जे जे अंशे नासतो, अहंभाव त्यां धर्म;
समजु सत्य विचारीने, टाळे सघळां कर्म. ४६
जड वस्तुमांहि वस्यो, जड वस्तुनो भोग;
अन्तरथी न्यारो रहे, धरी शुद्ध उपयोग. ४७

रागदोष परिणाम वण, कर्मनो होय न बंध;
विवेक दृष्टि देखतां, लागे पुद्गल बंध. ४८
अन्तरदृष्टि योगथी, रागद्वेष नहि होय;
हुं छुं शुद्ध स्वभावमां, नडे न कोने कोय. ४९
शुद्धरूपमां हुं सदा, परमां नहि तलभार;
अहंभाव जडमां ग्रही, भूल्यो हुं संसार. ५०
पण पुद्गल ते हुं नहि, जाण्युं निश्चय सर्व;
कर्त्ता भोक्ता भावनो, टल्यो अनादि गर्व. ५१
हुं कर्त्ता भोक्ता खरो, शुद्ध गुणपर्याय;
परमां म्हारु कंइ नहि, निश्चय ए सुखदाय. ५२
अन्तरदृष्टि योगथी, चिदानंदनी मोज,
भोगवता ते जन अहो, जेणे कीधी खोज. ५३
खंडन मंडन शुं करुं, चिद्घन नहि खंडाय;
बाकी जे खंडाय ते, पुद्गलना पर्याय. ५४
आत्मधर्म जिन धर्म छे, बाकी जडना धर्म;
आत्मधम समज्या विना, होय न शाश्वत शर्म. ५५
आत्मधर्ममां जिनपणुं, बाकी जड जंजाळ;
जडमां धर्म नहि कदा, करशो ज्ञानी ख्याल. ५६
जड लक्ष्मीनी लालचे, मूर्खजनो ललचाय;
मायाना कीडा बनी, चतुर्गति भटकाय. ५७
चिदानन्द चेतन प्रभु, निर्भय नित्य महान्;
परमज्योति सुखमय सदा, इष्टदेव भगवान्. ५८
सचाए अरिहंत तुं, वसियो पिंडमझार;
सिद्धसूरि वाचक मुनि, परमेष्ठि निर्धार. ५९
अतीन्द्रिय अक्षर तुं हि, निरक्षर गुणवान्;

वचनागोचर तुं प्रभु, धरु हुं मनमां ध्यान. ६०
ध्याता ध्येयाभिन्नतुं, कथंचित् तुं भिन्न;
शुद्धस्वरुपाधारमां, अन्तरयोगे लीन. ६१
म्हारु त्हारु सहु मटयुं, टळ्या विषयना खेद;
स्थिरोपयोगे आत्ममां, निज धर्मोंथी अभेद. ६२
शुद्ध रमणता आत्ममां, चिदानन्द भंडार;
बाह्य रमणता त्यां टळे, निश्चय मनमां धार. ६३
निश्चयनय निज रूपमां, जन्मजरानो नाश;
अनुभव अन्तर धारीए, छोडी भवनी आश. ६४
अनुभवामृत स्वादतां, धन्य सफल अवतार;
परम प्रभुता संपजे, निश्चय धर्म विचार. ६५
अनन्त धर्म छे आत्ममां, जडमां न रहे लेश;
धामधूममां धर्म नहि, बाह्य विषयमां क्लेश. ६६
बाह्य विषयनी मोजमां, माने धर्म गमार;
उपादान निजधर्म छे, चेतनमां जयकार. ६७
उपादाननी शुद्धिनी, परिपूर्णता सिद्ध;
स्याद्वादी मन जाणशो, प्रगट अक्षय ऋद्धि. ६८
जडनी ताणाताणमां, वादाविवादे कर्म;
समज्ञु समजे ज्ञानथी, साधे शाश्वत धर्म. ६९
स्याद्वाददृष्टि थकी, नासे वादविवाद;
अनुभवीने ध्यानमां, प्रगटे अनहदनाद. ७०
बहुल जनो व्यवहारमां, राचे माचे नित्य;
अल्पजनो साचुं वरे, अनेकांतनयरीत. ७१
अनेकान्तनय पारखे, ते पामे परमार्थ;
द्रव्यानुयोगे करी, पामे शिवपुर सार्थ. ७२

आत्मद्रव्य आदेयछे, शुद्ध समय पण तेह;
अनन्तगुण पर्यायमय, आत्मद्रव्य सुखगेह. ७३
आत्म द्रव्यमां लीनता, सहजयोग निर्धार;
परमपन्थ जिनवर कह्यो, अन्तरंग सुखकार. ७४
अनन्त ज्योति झळहळे, भासे लोकालोक;
आत्मद्रव्य जाण्या विना, पामे जगजन शोक. ७५
आत्मद्रव्यना ज्ञानथी, आनन्द हर्ष अपार;
आत्म धर्म अन्तर रह्यो, जगमां जयजयकार. ७६
यम नियम आसन अने, प्राणायाम विचार;
प्रत्याहारने धारणा, ध्यान समाधि सार. ७७
योगाष्टकनी साधना, निर्मल आत्म प्रकाश;
जैनागम गुरुगम थकी, परम प्रभुता वास. ७८
षड्द्रव्योमां आत्मद्रव्य, स्वपर प्रकाशक जाण;
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न, अनंत चेतन आण. ७९
केवलज्ञान प्रत्यक्षथी, लोकालोक जणाय;
देखे तेवुं जिन कहे, श्रद्धा मोक्षोपाय. ८०
जडनी शक्ति अनन्त पण, जडमां रही समाय;
चेतनशक्ति अनन्त पण, जडमां कदी न जाय. ८१
अनाद्यनन्ति भंगीथी, षड्द्रव्यो वर्ताय;
आत्मद्रव्य चित्शक्तिथी, प्रगटपणे परखाय. ८२
दर्शन ज्ञानानन्दगुण, चेतन तेनुं पात्र;
सर्वतीर्थ शिरोमणि, चेतन द्रव्य सुपात्र. ८३
नवधा भक्ति आत्मनी, षट्कारकनी शुद्धि;
सम्यग् ज्ञान चारित्रथी, प्रगटे क्षायिक शुद्धि. ८४
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां, परमेश्वर कहेवाय;

व्यापे ज्ञाने विष्णु ते, सापेक्षे सुखदाय. ८५
रागद्वेष प्रणाशथी, महादेव जयकार;
अनंत केवलज्ञानथी, ब्रह्मा जग मनोहार. ८६
क्षायिक भावे खेंचतो, अनंत गुण तेहेत;
कृष्णरूप पण आतमा, अभिधेय संकेत. ८७
कर्म हण्याथी जीवते, शिवरूप सोहाय;
आतम ते परमात्मा, व्यक्ति अनंत ग्रहाय. ८८
नाम रूपथी भिन्नछे, निश्चयथी निर्धार;
अहं ममत्व विनाशथी, सिद्ध बुद्ध जयकार. ८९
अन्तरदृष्टि देखतां, प्रगटे वीर्य अनंत;
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां, सुख विलसे भगवंत. ९०
अनेकान्तनयदृष्टिथी, सम्यक् जीव जणाय;
जिनदर्शनमां आत्मना, भेदो सर्व समाय. ९१
सप्तनयोना ज्ञानथी, सापेक्षा समजाय;
सापेक्षाए सर्व धर्म, जिनदर्शनमां माय. ९२
अनेकान्तनयमां अहो, भेद न किंचित्मात्र;
अनेकान्तनय आत्मज्ञान, समजे सज्जन पात्र. ९३
नित्य अनित्य विभेदथी, वेद बौद्धनो वाद;
जिन दर्शनमां बे मळे, अनेकान्तनयवाद. ९४
कर्तृत्वेतरवाद पण, अनेकान्तनय मान्य;
सर्वधर्म ग्राहक अहो, जिनदर्शन प्राधान्य. ९५
मतना खेद टळे सहु, जो समजे नयवाद;
सापेक्षाए सर्व धर्म, माने नय स्याद्वाद. ९६
स्याद्वादनयदृष्टिथी, समता प्रगटे वेश;
समकित चरित्र योगथी, आनन्द होय हमेश. ९७

क्षायिक केवलज्ञानमां, भासे सर्व पदार्थ;
केवलज्ञानाधार जीव, परम प्रभु परमार्थ. ९८
चिदानन्द चेतन प्रभु, मळता सुरता प्रेम;
सुरता अन्तर लावीए, प्रगटे मंगल क्षेम. ९९
ध्यान धारणातानमां, देखो चेतन देव;
शुद्ध समाधियोगमां, अनुभवामृतमेव १००
उपयोगी चेतन तरे, भवोदधिने खास;
चिद्घनअसंख्यप्रदेशनो, रोम रोम विश्वास. १०१
परमशुद्ध परमार्थ छे, आत्मतत्त्व आदेय;
सर्व द्रव्यतो ज्ञेय छे, पुद्गलकर्म छे हेय. १०२
आत्मरमणता धर्म छे, बाह्यरमणता कर्म;
आविर्भावे आत्ममां, प्रगटे शाश्वत शर्म. १०३
अन्तरथी न्यारा रही, करे बाह्यनां कर्म;
ज्ञानी सहजदशा थकी, पामे शाश्वत शर्म. १०४
जे जे अंशे जाय छे, कर्म उपाधि दूर;
ते ते अंशे जाणशो, चिदान्द भरपूर. १०५
शब्दब्रह्मथी भिन्न छे, परमब्रह्म जयकार;
परमब्रह्म अन्तर रह्युं, अन्तरदृष्टि धार. १०६
निश्चयने व्यवहारथी, ध्यावो अन्तर्देव;
अनन्त सुखनुं पात्र छे, क्षण क्षण कीजे सेव. १०७
श्वासोश्वासे ध्याइए, रही ध्याने गुलतान;
पूर्णानन्दी प्रगटशे, सहजशुद्ध भगवान्. १०८
अष्टोत्तरशत दोहरा, परिपूर्ण आ ग्रन्थ;
वांचे ध्यावे जे जनो, पामे निश्चय पन्थ. १०९
संवत ओगणिस पांसठे, प्रतिपदा दिन खास;

चैत्र मासमां ए रच्यो, वडोदरामां खास. १९०
मंगलमाला आत्ममां, सकल सुख भरपूर;
बुद्धिसागर ध्यानमां, वाजे मंगल तूर. १११

ब्रह्मरन्ध्रमां सुरता प्रवेश.

श्री राग.

सुरता जापे गगनगढ जाउरे, मेरुदंड मूल पाउरे; सुरता.
सिद्धासनवाळी गुरुगमथी, प्राणायाम चित्त लाउरे; सुरता.
मुद्राबीजथी, भेदी चक्रो, त्रिवेणी चढी जाउरे. सुरता. १
उलटवाटथी ब्रह्मरन्ध्रमां, ज्योतिमां ज्योति मिलावुंरे. सुरता.
असंख्यप्रदेशीआत्मसुखनी, लीला अपार सां पावुंरे. सुरता. २
जिनागम गुरुगमना ज्ञाने, साचुं न भूली हुं जाउरे. सुरता.
आपस्वरुपे आप प्रकाशे, पोते पोताने हुं ध्याउरे; सुरता. ३
एकान्तमांहि प्रभु प्रगटता, भेटीने हरखीत थाउरे; सुरता.
पट्कारकनी शुद्धि थाती, अनुभवथी एहि जणावुंरे. सुरता. ४
आव्यो अनुभव रहे न छानो, भिन्नपणे परखाउरे; सुरता.
बुद्धिसागर साहिब मळीया, ज्ञाने तेना गुण गाउरे. सुरता. ५

अजितात्म स्वरूप खुमारी.

श्री राग.

चिदानन्दस्वरूप छे म्हारुरे, क्षण एक कदी न विसारुरे, चि.
अनेक नाम पण नामथी न्यारो, तारे अने पोते छे तारुरे. चि. १
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता धारी, शुद्धरूप न मुजथी न्यारुरे; चि.
ब्रह्मा विष्णु खुदा स्वयंभु, नाम रूपथी भिन्न विचारुरे. चि. २
हरिहर बुद्धने कृष्ण स्वरूपी, शुद्ध अर्थथी चित्तमां धारुरे; चि.
काल अनादि कर्मनो भोक्ता, ज्ञान ध्याने हुं कर्म संहारुरे. चि. ३
नात जात नहि अलख स्वरूपी, भेद ज्ञानथी समकित सारुरे;चि.
जड प्रकाशे जडथी न्यारो, मारु शुद्ध स्वरुप छे प्यारुरे चि. ४
ज्ञानगुणमां सुख अनंतुं, जाणे अळपायुं म्हारु त्हारुरे; चि.
बुद्धिसागर भेटयो साहिब, तत्त्व शोधी लीधुं बहु सारुरे. चि. ५

अनुभवामृत खुमारी.

श्री राग.

शुद्ध सहज स्वरूप सुहायोरे, में तो अनुभवानन्द पायोरे;शुद्ध.
जावुं न आवुं लेवुं न देवुं, शुद्धब्रह्मस्वरूप समायोरे. शुद्ध. १
मंगळ मूर्ति आनन्दकारी, अनुभव मनमां आयोरे; शुद्ध.
सुखसागरमां झीलुं ध्याने, हुंतो परम महोदय पायोरे. शुद्ध. २
स्याद्वाददृष्टि जयकारी, जाणंतां समता लायोरे; शुद्ध.
कर्ता हर्ता बाहिर अन्तर, अशुद्ध शुद्धनय थायोरे. शुद्ध ३

सम्यग् ज्ञाने खेद टळ्या सहु, शुद्ध चेतन रत्न ग्रहायोरे. शुद्ध.
जिनागम गोपयने पीतां हुंतो अजरामर दर्शायोरे. शुद्ध. ४
हूं तुंनो बहु खेद टळ्यो झट, क्षयोपशमज्ञानथी गायोरे. शुद्ध.
बुद्धिसागर उपशमभावे, रोम रोम आनन्दथी छायोरे. शुद्ध. ५



अधिकारी समजी शके.

श्री राग.

म्हारु गायुं जाणे अधिकारीरे, नहितो होय ताणंताण भारीरे;म्हारु.
सातनयोना सम्यग् ज्ञाने, जाणे तत्त्व विचारीरे. म्हारु. १

सापेक्षाए वस्तु विचारे, तेनी छे बलिहारीरे; म्हारु.
मतियाओए वाडा बांध्या, एकांत पक्ष वधारीरे. म्हारु. २
वाडामांहि बकरां रहेशे, सिंह न रहे क्षणवारीरे; म्हारु.
स्याद्वादनय जाणे त्यारे, हठ न रहे तलभारीरे. म्हारु. ३

अलख खलकमांहि शांतिकारक, स्याद्वाद जयकारीरे; म्हारु.
आतम ते परमातम साचो, शोधो अन्तरदृष्टि उतारीरे. म्हारु. ४
मनमोहन ईश्वर अविनाशी, जीव ते शिव सुखकारीरे. म्हारु.
बुद्धिसागर नित्य निरंजन, अजरामर पद भारीरे. म्हारु. ५



आश्चर्यज्ञान.

श्री राग.

एक अचरिज मनमां आयुंरे, सिंह पाछळ ससलुं धायुंरे; एक.
साधुजन वेश्याथी रमतो, गावे राजा प्रजानुं गायुंरे. एक. १
उलटी नदीमां योगी झीले, अंधाथी रतन परखायुंरे; एक.
वहाणमांहि समुद्र समायो, सूर्य चोमेर वादळ छायुंरे. एक. २
गर्भमांहि तो बहु बहु बोले, जन्म्या पछी ते मौन रहेवायुंरे;एक.
अंधकजन अंधकने दोरे, धूळ ढगलामां रत्न ढंकायुंरे. एक. ३
गुरु करे चेलानी सेवा, इन्द्रजाळे जगत् भरमायुंरे; एक.
ज्यां त्यां वानर पूजा थाती, एक बाइथी नगर आ वसायुंरे. ४
उपजे विणसे ध्रुव कहावे, ज्यां त्यां जोवुं त्यां एह छवायुंरे;एक.
बुद्धिसागर सन्तो राया, जेणे राज्य त्रिभुवननुं पायुंरे. एक. ५

शुद्धभक्ति.

श्री राग.

शुद्धभक्तिना रंगमां रमीशुंरे, प्रभु भक्तिनां भोजन जमीशुंरे; शुद्ध.
भक्तिथी अन्तर नहि प्रभुनुं, आडुं अवळुं जनोनुं खमीशुंरे. शुद्ध. १
जिनवरनी आज्ञा भक्तिथी, लक्ष चोराशीमां न भमीशुंरे. शुद्ध.
अनुभवरंगे रंगाइने, इन्द्रि पंचने शिघ्र दमीशुंरे. शुद्ध. २
भक्ति मशालो ज्ञानाग्निथी, भावमन पाराने धमीशुंरे शुद्ध.
बुद्धिसागर तन्मय थइने, प्रभु देखीने प्रेमे नमीशुंरे. शुद्ध. ३

स्वानुभव निश्चयः

श्री राग.

ज्ञान ध्यानमां जीवन गाळुंरे, शुद्ध होवे अन्तर अजवाळुंरे; ज्ञान.
उपाधि संयोगो आवे, शमभावथी नहि कंटाळुंरे ज्ञान. १
पुद्‍गलधनथी कदी न शान्ति, शुद्धऋद्धि अन्तरमां भाळुंरे; ज्ञान.
स्थिर उपयोगे रेहेवुं निशादिन, रागद्वेष उदयने टाळुंरे. ज्ञान. २
मनमोहन अलबेलो भेटुं. योग प्रमत्तने नित्य खाळुंरे; ज्ञान.
उपशम, आदि भावमां राचुं, परभावतणुं बीज बाळुंरे. ज्ञान. ३
निन्दाविकथा इर्ष्या त्यागी, द्रव्यभाव दयाने पाळुंरे; ज्ञान.
समता सरोवरमांहि झीली, सत्य अनुभव सुखमां म्हाळुंरे. ज्ञान. ४
असंख्यप्रदेशी चिद्‍घन व्यक्ति, जडपुद्‍गल जाणुं निराळुंरे; ज्ञान.
बुद्धिसागर परम महोदय, शुद्ध लक्ष्मी अनंत संभाळुंरे. ज्ञान. ५

सर्वनी उन्नति थाओ ॥

श्री राग.

सर्व जीवोनी उन्नति थाशोरे, शुद्ध ब्रह्मस्वरूप कमाशोरे; सर्व.
आत्मवत् जीवोमां दृष्टि. मैत्रीभावना सर्व प्रकाशोरे. सर्व. १
पोताना सम अन्य जीवोना, प्राणो सहु प्रिय जणाशोरे. सर्व.
मातृदृष्टिथी सर्व जीवोनुं, भलुं माराथी कराशोरे. सर्व. २
सर्व जीवोना सद्‍गुण देखी, प्रमोद मन प्रगटाशोरे; सर्व.
उच्चभावना सर्व जीवोपर, भाव माध्यस्थ सर्व पमाशोरे. सर्व. ३
दुःखिजीवपर करुणा दृष्टि, चार भावना नित्य भवाशोरे. सर्व.

मनना दोष टळो सहु मेळा, दयादृष्टिथी नित्य चलाशोरे. सर्व ४
वेगे माया फंदो टळशो, प्यारा प्रभु हृदय परखाशोरे; सर्व.
बुद्धिसागर आनंद मंगल, जय जय जगत वर्ताशोरे. सर्व. ५



समभाव.

श्री राग.

समभावे रहेवुं सुखकारीरे, उपाधि भिन्न विचारीरे; समभावे.
नहि कोइ व्हालुं नहि कोइ वैरी, अहो ममता दुःखनी क्यारीरे. सम. १
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, अरति रति बहु दुःखकारीरे. सम.
जे जे थावे ते सहु थावो, दृष्टि तटस्थ में निर्धारीरे. सम. २
मन कल्प्युं इष्टानिष्टत्व, ते सहु दूर निवारीरे; सम.
अन्तरमां रमशुं मन प्रेमे, बाह्य परिणति दूर निवारीरे. सम. ३
राग द्वेष बेथी छे बंधन, मुक्ति छे ध्यानथी सारीरे. सम.
परम प्रेम धारीशुं निजमां, शाश्वत सुख घट धारीरे; सम. ४
मुक्तिनां सुख मुक्तिमां छे, समता सुख अहीं महा भारीरे; सम.
बुद्धिसागर समता प्रगटी, आनंद मंगलकारीरे. सम. ५



सत्य शोधी लीधुं.

श्री राग.

में शोध्युं जगत्मांहि सारुंरे, मने लाग्युं अन्तरमां प्यारुंरे. में.
पुद्गल शोध्युं सुख न भास्युं, में चेतनमां सुख धार्युंरे. में. १

स्वरूप शोधी लीधुं मारु, म्हारुं त्हारु में मनथी वार्युंरे. में.
जडमां रहुं पण जडथी न्यारो, हवे इन्द्रिय सुख विसार्युंरे. में. २
रागद्वेषवृत्तिथी न्यारो, शुद्ध चेतन हुं ए विचार्युंरे. में.
रमुं हवे हुं चिदानन्दमां, श्रद्धा भक्तिमां मन ठार्युंरे. में. ३
मोजमझामां मन नहि लागे, मन मर्कट तो हवे हार्युंरे. में.
प्रेमना प्याला पीधा प्रेमे, सुख शाश्वत दिल उतार्युं रे. में. ४
तेजतणु पण तेज लह्युं में, मने रत्न जडयुं अणधार्युंरे. में.
बुद्धिसागर मंगल लीला, शोध्युं ब्रह्म स्वरूप मुज सारुरे. में. ५

नात जात विसारी,

श्री राग.

में नात जाति सहु त्यागीरे, हुं तो थइयो अन्तर गुणरागीरे. में.
सद्गुरुए सत्य बताव्युं, मने अन्तरमां लयलागीरे. में. १
नर के नारी नहि नपुंसक, बन्यो ज्ञानगर्भित वैरागीरे. में.
बाह्य भोगनी इच्छा विरमी, थाउ सद्गुणथी सौभागीरे; में. २
वस्तुस्वभाव ते धर्म ग्रह्यो घट, शुद्ध अन्तर सुरता जागीरे; में.
बुद्धिसागर अन्तर सुखडां, स्वादे राग न जग पण रागीरे. में. ३

इष्टदेव निमंत्रण ॥

श्री राग.

इष्टदेव व्हेला स्हाये आवोरे, दया दृष्टि हृदयमांहि लावोरे; इष्ट
नाम मंत्र तुज निशदिन स्मरु, हुं गाउं तमारो वधावोरे. इष्ट १

मनमोहन अन्तर अलवेला, इष्ट सिद्धि कृपालु बतावोरे; इष्ट
जाप जपुं हुं निशदिन तारो, तुज ध्याने हुं जगमां चावोरे. इष्ट २
मंत्र कल्प सिद्धि सहु थावे, मळ्यो मळेछे इष्टनो ल्हावोरे; इष्ट
वचन सिद्धि ऋद्धि सहु होवे, एम निश्चयथी करु दावोरे. इष्ट ३
शासन सानिध्यकारी देवा, ज्यां त्यां मंगळ माळा रचावोरे; इष्ट
नाम न बोलुं हृदये स्थापुं चिदानंद प्रभुता भिलावोरे. इष्ट ४
अनंत सुखनी ल्हेरो प्रगटे, प्राणजीवन दीलमांहि मावोरे; इष्ट
बुद्धिसागर अनुभव सुखनी, लीला हृदयमां ठावोरे. इष्ट ५



श्री यशोविजय उपाध्याय आमंत्रण ॥

श्री राग

यशोविजय उपाध्याय आवोरे, आवो सद्गुरु व्हेला आवोरे, य०
इष्ट गुरु तुं सानिध्यकारी, मने सत्य समाधि बतावोरे. य० १
शुद्धोपयोगे साह्य करे तुं. क्षणमात्र न वार लगावोरें; य०
परम महोदय लक्ष्मी दाता, अनेकान्तस्वरूप जणावोरे. य० २
मन मंदिरमां दीपक सम तुं, शुद्ध अनुभव हृदयमां ठावोरें; य०
चोल मजीठनो रंग लगावो, गुरु ज्यां त्यां जय वर्तावोरे. य० ३
दर्शन देइ आनंद आप्यो, मने मळ्यो चिदानंद ल्हावोरे; य०
रोम रोम आनंद बहु प्रगट्यो, हुं तो गावुं गुरुनो वधावोरे. य० ४
देवता थइने दर्शन देता, मन मंदिरमां गुरु च्हावोरे; य०
बुद्धिसागर जय गुरु देवा, शुद्ध दर्शन घट प्रगटावोरे. य० ५



परोपकार

परोपकारे रीजीए, परोपकारे धर्म;
परोपकाराभ्यासथी, नासे सघळां कर्म. १
द्रव्य भाव बे भेदथी, परोपकार कहाय;
निश्चयने व्यवहारथी, तेना भेद ग्रहाय. २
परोपकारे ज्ञातृता. परोपकारे मुक्ति;
परोपकारे सत्य धर्म, तत्त्व वातनी युक्ति. ३
परोपकारे उच्च भाव, जगमां कीर्ति गवाय;
परोपकार सद्गुण विना, नीचा सर्व गणाय. ४
उपकारे जे रक्त छे, धर्मी सत्य विचार;
परस्पर उपकार छे, तत्त्वार्थ सूत्र मझार ५
उपकारी अरिहन्त छे, परमेष्ठीमां मुख्य;
परोपकार कर्या विना, कोइ न होय प्रमुख. ६
उपकृति दुर्लभ अहो; शुभोन्नति करनार;
धन्य धन्य ते प्राणिया, तरे अने तरनार. ७
सम्यक्त्वज्ञान प्रदानथी, परोपकार महान्
उत्तम जन सौ राचता, भाखे छे भगवान् ८
ज्ञान दान उपकार छे, देवो पर उपदेश,
मोटो परोपकार छे, टळता सघळा कलेश. ९
करे एकेन्द्रिय उपकृति, निज शक्ति अनुसार;
मनुष्य थई जे नहि करे, तेनो धिक् अवतार. १०
तन मन धनने ज्ञानथी, करवो परोपकार;
बुद्धिसागर सुख लहे, चिदानन्द जयकार. ११

६३
परमब्रह्म निराकरण ॥

छप्पय छंदः

प्रणमुं श्री परमेश जगत्मां केवळ ज्ञानी,
पूजे चोसठ इन्द्र चरण पण नहि जे मानी;
महिमा अपरंपार जगत्मां शक्ति अनन्ति,
घातक कर्म व्यतीत प्रभुनी निर्मळ व्यक्ति;
द्रव्य क्षेत्रने काळभावे स्थिति अनादि अनन्त छे,
एक व्यक्ति अपेक्षताथी स्थितिहि सादि सांत छे. १
अरिहंत ते बुद्ध तत्त्वनुं ज्ञान लह्याथी,
अरिहंत ते विष्णु ज्ञानमां सर्व ग्रह्याथी;
भासे ज्ञेय अनंत ज्ञानमां ब्रह्मा माटे,
राग द्वेषनो नाश महेश्वर जिनवर माटे;
आत्मोन्नतिनी प्राप्ति करवा मार्ग तेनो अनुसरो,
माध्यस्थ दृष्टि राखी भव्यो सिद्धि शाश्वत सुखवरो. २
षड्द्रव्योनुं ज्ञान कर्याथी विवेक दृष्टि,
सम्यग्दृष्टि प्रगटे भासे गुणगण सृष्टि.
नव तत्त्वो पण षड् द्रव्योमां समाय जाणो,
अष्ट पक्षनुं ज्ञान करी साचुं मन आणो;
सप्त नयने सप्त भंगीथी द्रव्य षट्नें धारीए,
बुद्धिसागर अनेकान्तथी तत्त्व सत्य विचारीए. ३
स्यात् अव्यय छे अनेकान्त नयद्योतक सारो,
सापेक्षाए वस्तु धर्म छे चित्त उतारो;
सापेक्षाए षड्दर्शन जिन दर्शन अंगो,
सापेक्षाए वस्तु ज्ञानना सत्य तरंगो;

द्वैत अने अद्वैत मत पण निरपेक्षाए भिन्न छे,
स्याद्वादनी सापेक्षताथी अनेकांत अभिन्न छे. ४
जड चेतन बे तत्त्व विचारे द्वैत कहावे,
त्रण काळमां जड चेतन बे भिन्न सुहावे;
चेतनथी नहि जगदुत्पत्ति न्याय विचारे,
ब्रह्मथकी प्रगटे नहि जडता ज्ञानी धारे;
जीव अजीव बे भिन्न तत्व छे धर्म बेना भिन्न छे,
भिन्न धर्मी भिन्न रहेवे सत्य ए आकीन छे. ५
काळ अनादि कर्म जीव संयोगे विचारो,
अशुद्ध परिणति योगे कर्त्ता कर्मनो धारो,
कर्मभेद छे आठ पुद्गल द्रव्य कहावे;
कर्म प्रयोगे चेतन चतुर्गतिमां जावे;
जन्म जराने मरण हेतु कर्म भेदो धारीए,
एक चेतन कर्म बे एम द्वैततातो विचारीए. ६
कर्मयोगथी द्वैतभाव भवमांहि निरखो,
कर्मटळे अद्वैत भाव शुद्धातम परखो;
प्रथम द्वैत पश्चात् अहो अद्वैतपणुं छे,
सापेक्षाए आम ज्ञानिए सत्य भण्युं छे;
माया असती कही अरे जे अद्वैतपणाने थापता,
सम्यक्त्व ज्ञान विना अहो ते सत्यतत्त्व उथ्थापता ७
ब्रह्म एकने तेमांथी सहु प्रगट्युं थापे,
एकोऽहंबहुस्याम् श्रुति आधारज आपे;
जडनुं उपादान कहो केम ब्रह्म ज थावे,
विरुद्ध धर्मनुं उपादान नाहि ब्रह्म सुहावे;
ब्रह्म विकारी जो कहो तो बहुपणुं तेनुं घटे,

पण नित्य ब्रह्मने कहो विकारी दोप एतो नहि मटे. ८
ब्रह्म विकारी कारण तेनुं कहेवुं पडशे,
नहि कारण वण कार्य दोप ए मोटो नडशे.
ब्रह्म विकारी स्वयं मानशो तो बहु दोपो;
कदा टळे न विकार फोक निजमतने पोपो,
परथी ब्रह्म विकार हेतु त्यां कर्म खरे अरे मानशो;
मानो मत स्याद्वाद त्यारे शुद्ध श्रद्धा आणशो. ९
नित्य एक जो ब्रह्म बहु ते शाथी थावे;
मानो भ्रांति दोप श्रुति तत्र व्यर्थ कहावे
भ्रांति कारण ब्रह्म कहो तो ब्रह्मज भ्रांति,
भ्रांति कारण कर्म कहो तो कर्मनी कांति;
कर्म ब्रह्म बे वस्तुमाने अद्वैत ब्रह्म ते क्यां रह्युं,
ब्रह्म शाथी अनेक थावे ज्ञानिए कहो शुं कह्युं. १०
ब्रह्म कहो सक्रिय यदि तो पक्षनी हानी,
ब्रह्म कहो अक्रिय तदा बहुता केम मानी;
इच्छाविशिष्ट ब्रह्म कहो तो भ्रमणा आवे,
इच्छा ब्रह्मनो गुण एम तो कोइ न गावे;
एक वस्तु थावे बहु त्यां कर्म कारण जो कहो,
कर्म ब्रह्मथी भिन्न माने द्वैतता मनमां लहो. १०
कर्म ते ब्रह्म स्वरूप मानतां सत्य टळे छे,
ज्ञान ध्यानने सदाचार सहु धर्म गळे छे;
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं जो काळ अनादि,
एकपणुं नहि थावे माने सम्यग्वादी.
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं ते काळ भेदे जो कहो,
हेतु विना नहि कार्य भन्यो वाद ए मिथ्या लहो. ११

ब्रह्म नित्य तो अनेक धर्मी कदी न थावे,
भिन्न धर्म न रहे एकमां व्यासज गावे;
नैकस्मिन् ए सूत्रदोष निज मतमां आवे,
सापेक्षा ए यदि कहो स्याद्वाद सुहावे,
स्वयं एक अनेक थावे वृथा प्रयासो धर्मना,
एक आतम बहुपणुं त्यां हेतु भेदो कर्मना १२
बहुत्व प्रति जो एकपणाने कारण मानो,
पाप पुण्यमय ब्रह्म दोष ए महापिछानो;
ब्रह्म एकने बहुपणुं तेनुं जो थावे,
ब्रह्म कर्युं एकांत नित्य ए मिथ्या भावे;
ब्रह्म विकारी अनित्यता त्यां कथंचित् मानशोयदा,
स्याद्वादने अवलंबवाथी पक्ष रह्यो नहि तुम तदा. १३
इच्छा रहित जो ब्रह्म कहो तो बहु केम थावे,
इच्छा विशिष्ट ब्रह्म कहो तो दोषज आवे;
इच्छा हेतु ब्रह्म कहो तो कदी न शान्ति,
इच्छाथी यदि ब्रह्म भिन्न तो करो न भ्रांति;
ब्रह्मचे समज्या विना तो भ्रांतिमां जीव झूलतो,
एक एवाहि ब्रह्म मानी भ्रांतिथी बहु फूलतो १४
एकोऽहं बहु स्याम् श्रुतिनी इच्छा कोने,
इच्छा कहो जो ब्रह्मने त्यारे दोषज जोने;
ब्रह्म एकने अनेक रुपा इच्छा शाथी,
व्यापक कहो जो ब्रह्म तदा ते प्रगटी क्यांथी;
सर्वत्रथी जो प्रगट थांती हेतु तेनो शुं अहो,
ब्रह्ममांहि ब्रह्म हेतु दोष ब्रह्मनो तो कहो. १५
उपादानने निमित्त कारण भिन्न कहावे,

समजे तेने सम्यग् न्यायज मनमां भावे;
उपादान ते निमित्त नहि छे न्याय विचारे,
ब्रह्म स्वरूपने समज्या वण तो दोष वधारे;
शक्तिने तेम व्यक्ति भावे ब्रह्म भेदो अनुसरो,
बुद्धिसागर ब्रह्म सम्यक् समजवाथी सुखवरो. १७
कर्माच्छादित ब्रह्म अने तेम कर्मथी भिन्न,
स्यात् जीवो ते ब्रह्म ब्रह्मथी जीवो अभिन्न;
मुक्ति अने संसारी द्विविध जीवो जाणो,
करे कर्मनो नाश मुक्तिना जीव वखाणो;
अष्ट कर्मावरण जेने जीवो तेहि अशुद्ध छे,
संग्रहनय सत्ता ग्रह्याथी परम इश्वर शुद्ध छे. १८
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न छे जीव अनंता,
जीव ते शिव स्वरूप ज्ञानियो एम वदंता;
कर्म प्रयोगे जीव ब्रह्म ते अशुद्ध होवे,
कर्म नाशथी जीव ब्रह्म ते शुद्धज जोवे;
कर्म कारण अशुद्ध परिणति काळ अनादि जाणीए,
बुद्धिसागर शुद्ध परिणति कर्म नाशे वखाणीए १९
अशुद्ध गुण पर्याय कर्मना योगे थाता,
लक्ष चोराशी जीव योनिमां देह ग्रहाता;
एक जीव पण अनेक कायारूपे थावे,
कारण तेनुं कर्म ज्ञानियो सम्यग् गावे;
द्रव्यरूपे जीव एकज पर्यायरूपे अनेक छे,
स्याद्वाद सापेक्षताथी श्रुति सत्य विवेक छे. २०
अनेक जीवनी सापेक्षाए जीव अनंता,
भिन्न भिन्न कहे व्यक्ति जीवनी देव भदंता;

सापेक्षाए जिनवर गायुं घटतुं सवळुं,
वक्र जीवोने परिणमे छे मनमां अवळुं;
ज्ञान एकत्र द्रव्यरूपे अनंत ज्ञेयो भासता,
एक ज्ञान अनंतरूपे एक समय प्रकाशता. २१

केवल ज्ञाने शुद्ध ब्रह्ममां श्रुतिं सुहाती,
एक समय पर्यायरूप अनंत प्रमानी;
जीव द्रव्य ते एक बहु ते एणीपेरे थावे,
शुद्धपणे परिणमतां षट्कारक जिन गावे,
शुद्धमांहि शुद्ध हेतु, अशुद्ध पुद्गल योगथी,
बुद्धिसागर अनेकांतनय समजशो श्रुत भोगथी. २२

षड्गुण हानि वृद्धि समयें समये थावे,
एकोऽहं बहुस्याम् श्रुति त्यां लेखे आवे;
ज्ञानगुण छे एक अनेक पर्याय सुहावे,
उत्पत्तिव्यय ध्रुवतासंगी श्रुति सुभावे;
आत्मशुद्धि थया पछी तो अशुद्धत्ता थावे नहीं,
शुद्धचेतन शुद्धरूपे परिणमे गुणानिज ग्रही. २३

ब्रह्मसत्ने असत् जगत् एम बहु जन बोले,
सापेक्षा समज्या वण वाक्यने कोई न तोले;
आकाशकुसुमवत् जगत् असत् जो मनमां धारो,
अनेक दोषो प्रगटे त्यारे चित्त उतारो;
असत्भाव न दृष्टि देखो ज्ञानी गावे ज्ञानथी,
नभोकुसुमवत् असत् मानो जाण्युं ए बेभानथी. २४

एकांते नहि असत् जगत् एम जिनवर कहेवे,
सापेक्षाए समजे ते शिवसुखने लेवे;
सापेक्षावण श्रुतिवाक्यमां दोष अनेक

सापेक्षा समज्याथी प्रगटये सत्य विवेक;
आत्मद्रव्यसापेक्षताथी असत् वस्तु कही सहु.
आत्मरूपे न थाय बाकी शेष द्रव्यो मन लहु. २५.
ब्रह्ममांहि जे भासे ते सहु भिन्नाभिन्न,
सद्असत् समजी अनेकांतनय थावो लीन;
ब्रह्मरूप नविहोय भासतीज वस्तु सर्व,
सापेक्षाए असत् तेहथी वस्तु अगर्व;
भूतएष्यत् पर्यवो पण असत् अपेक्षाथी कह्या,
बुद्धिसागर गहनशैली समजतानर सुख लह्या. २६
आत्मस्वरूपे असत् पदार्थो जडता भावे,
जडताभावे अजीव भावो समज्या जावे;
ब्रह्मज्ञानपर्याय हंस वा समजी लेशो,
ज्ञाने भासे सर्व भाव पण भिन्नज कहेशो;
ज्ञानज्ञेय स्वरूप जाणे सर्व संशय जाय छे,
ब्रह्म माया भिन्न समजे तत्त्व धर्म पमाय छे. २७
परभावरुप जे जगत् इश तेनो छे कर्ता,
परभावरूप जे जगत् इश तेनो छे हर्ता;
देह जगत्नो स्रष्टा आतम इश्वर जाणो,
रागद्वेषप्रयोग कर्मनो कर्त्ता आणो;
रागद्वेषविनाशथी जीव देह जगत् हर्ता कह्यो,
कर्म हर्ता जीव इश्वर सिद्ध बुद्ध शाश्वत लह्यो. २८
कृत्स्न कर्मनो नाश थयाथी सद्यज मुक्ति,
जीव परमेश्वररूप पछी नहि कर्मनी युक्ति;
देहरूप जे जगत् पछी नहि तेनो कर्ता,
आत्मिक शुद्ध स्वभाव थकी छे तेनो हर्ता;

सापेक्षताए देह सृष्टि कर्ता हर्ता मानीए,
व्यवहार निश्चयनयथकी अहो जीव इश्वर जाणीए. २९
सापेक्षा वण कर्त्ता हर्ता इश्वरमाने,
लहे न आत्मस्वरूप सत्य ते शुं मन जाणे;
निराकार साकार हंस इश्वर छे जाणो,
व्यवहारे साकार इतर निश्चयनय आणो;
साकार कर्म संबंधथी छे चतुर्गति जीव जाणजो;
कृत्स्न कर्मातीतयोगे निराकार शिव आणजो. ३०
लडालडी नहि सापेक्षाए तत्व विचारे,
विना विचारे धर्म भेदनां युद्ध वधारे;
धर्म भेदनो खेद टळे सहु नयना ज्ञाने,
आत्मधर्म स्याद्वाद लहे छे सत्यपिछाने;
लडालडी नहि धर्ममां कंइ सापेक्षवातो सहु अहो,
समजीने अरे आत्मतत्त्वे साम्यभावे सुख लहो. ३१
माया कहो के कर्म कहो किस्मत पण ते छे,
सांख्य प्रकृति कोइ कहे पण वस्तु ए छे.
प्रारब्धादिक भेद कर्मना समजी लेवा.
करवो कर्म विनाश ध्यानथी धरीने सेवा;
चिदानन्द स्वरूप परखी शुद्धरूप विचारीए;
ब्रह्म माया भेद समजी माया कर्म निवारीए, ३२
नय सापेक्षे धर्म एक छे गुरुगम लेशो,
खंडन मंडन करो केम अरे समता वहेशो;
समजावो सापेक्षवाद तो भेद न एके,
करी कदाग्रह त्याग समजल्यो सत्य विवेके
अनेकान्तनय सत्य बोधे सर्व साचुं परिणमे,

स्थूलदृष्टि जे जना तेने अहो आ नहि गमे. ३३
षड्दर्शन जिन अंग कह्यां छे वातज साची,
अनेकान्त नय सहज लह्याथी वात न काची;
गंभीरनय उदार धर्ममां सर्व समातुं,
समज्यो ते छे स्थिर कांई नहि आतुं जातुं;
रागदोष जीते गमे ते जैनधर्मी जाणीए,
नात जातनो भेद नहि अरे सत्यधर्म पिछाणीए. ३४
नातजातनो भेद पडे त्यां धर्मनी पडती,
नातजातनो भेद नहि त्यां धर्मनी चडती;
लिंग वेषमां धर्म नहि निश्चय नय जोशो,
जड वस्तुमां अहंभावथी धर्मज खोशो.
ज्ञानयोगे धर्म चडती सर्व लोको आदरे,
नीच जन पण उच्चभावे धर्म योगे जग तरे. ३५
धर्म खरेखर आत्म विषेछे सत्य विचारे,
वाडा बांधी रह्या जीवो ते सत्य न धारे;
सापेक्ष दृष्टि प्रगट थतां तो सत्यज लेशो,
आत्मोन्नतिमां भव्य अरे बहु राची रहेशो।
आत्मोन्नतिमां अनेकान्तनय धर्म साचो अनुसरो,
सर्व धर्म समाय तेमां मूढ दृष्टि परिहरो. ३६
धन्य धन्य वीतराग वचन रस जेणे चाख्यो,
धन्य जीव छे तेह कदाग्रह काढी नाख्यो;
सत्य खरेखर धर्म हृदयमां जेणे धार्यो,
धरी ध्यान वैराग्य मोहने जेणे मार्यो;
आत्म धर्मे नित्य सुखने साधता सिद्धज थया,
बुद्धिसागर विजयी मुनिवर सिद्ध शाश्वत सुख लह्या. ३७

वीर जिनेश्वर वचन विचारी धर्म विचारो;
समजी मन स्याद्वाद तत्त्वने कार्य सुधारो;
प्रगटावो सामर्थ्य आत्मनुं ध्यान करीने.
धरो शक्ति विश्वास चिदानंद शर्म वरीने;
सहज शुद्ध स्वभाव पामो बाह्य ममता परिहरी,
नित्य विष्णु जीव पोते सत्य श्रद्धा मन धरी. ३८
अनेक नामथी वाच्य खरेखर छे निर्नामी,
रह्यो रूपमां अरूप भिन्न तुं सुख गुणरामी;
क्यां शोधे तुं बाह्य बाह्यमां जडता भासे,
अन्तरमां यदि शोध करे तो तत्त्व प्रकाशे;
शक्ति अनंतिनाथ आतम परम प्रभुता गेहरे,
विश्व व्यापक व्याप्य पण तुं अन्यने शुं करगरे. ३९
चिदानन्द चेतन तुं ज्यारे निजघर आवे,
सहजानंद स्वभाव खरेखर घटमां थावे;
नासे देहाध्यास वासना मूळ बळे छे,
परम प्रभु विश्वास कर्मनुं जोर टळे छे;
आत्म शक्ति प्रगट करवा ध्यान अंतर धारीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन शुद्ध धर्म विचारीए ४०
धरो आत्मनी टेक बाह्य सहु भूली जाशो,
धरी सत्यपर प्रेम ब्रह्म सुख हृदय विकासो;
ध्यान दृष्टिथी तन्मय थाओ स्वयं प्रभु छो,
ज्ञान शक्तिथी सर्व प्रकाशो स्वयं विभु छो;
जीव इश्वर भेद हेतु कर्म टाळो ज्ञानथी,
अलिप्तभावे बाह्य वर्तन राखशो शुभ ध्यानथी ४१
आत्मगुणनी शुद्ध प्रवृत्ति ध्याने करीए,

शुद्धगुणउत्पाद दोष ते अंशे हरीए;
आत्मगुणोमां प्रेम दया गुण बहु वधारो,
सत्यधर्मने ग्रहण करीने आतम तारो;
आत्मरमणतापरम भक्ति योगी निश्चय घट वरे,
बुद्धिसागर गुरू कृपाथी परम सुख शिष्योवरे। ४२
स्वप्नसमी दुनियादारी सहु दूर निवारी,
परम प्रेमथी रटन करो आतम जयकारी;
पुरूषोत्तमने परमब्रह्म आतम छे पोते,
भूली निजनुं भान अरे केम बाहिर गोते;
आत्म शक्ति आत्ममां छे ध्यानथी झट जागती,
मोह निद्रा दुःखमय खरे ध्यान योगे लागती. ४३
परमब्रह्म जगदीश जीव तुं मंगळकारी,
क्यां शोधे तुं बाह्य हृदयमां देख विचारी;
निराकार भगवान् कहुं जे जे ते तुं छे,
धर निश्चय विश्वास चिदानन्द ईश्वर तुं छे;
विज्ञानघन तुं हंस निश्चय देह देवळमां रह्यो,
सत्यभानु परम महोदय कदी न जावे तुं कह्यो. ४४
सामर्थ्य प्रगटाव खरेखर मळीयुं टाणुं,
सामर्थ्य प्रगटाव मळ्युं नृभवनुं नाणुं;
सामर्थ्य प्रगटाव मोहनी खटपट वारी,
सामर्थ्य प्रगटाव ध्याननी दृष्टि धारी;
सामर्थ्यने प्रगटावरे जीव हार हिम्मत नहि जरा,
आत्मशक्ति प्रगट करी ते जगत्मां जन्म्या खरा. ४५
अद्भूत महा सामर्थ्य आत्मनुं योगाभ्यासे,
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूरो झळहळ भासे;

शक्ति अपरंपार आत्मनी प्रगट करो झट,
वाणी अगोचर नाथ तेहनुं ध्यान धरो घट;
आत्मशक्ति प्रगट करवा योगविद्या आदरो,
जैनशैली गहन जाणी गुरुपदेशे मन धरो. ४६
कुटुंबसम दुनिया जीव भासे भेद टळे छे,
वैर झेर ने क्लेश बुद्धि सहु दूर टळे छे;
आनंद अपरंपार अनुभव निश्चय आवे,
अशुद्ध भावनो नाश शुद्धता सहज सुहावे;
आत्मशक्ति प्राप्त करवी आत्म श्रद्धापर रही,
बुद्धिसागर आत्मशक्ति दीलमां व्यापी रही. ४७
स्वस्ति श्री खंभात नगरमां प्रेमे आवी,
भेट्या स्तंभन पार्श्वजिनेश्वर ध्यान जगावी;
अचळ महोदय देव प्रेमथी दीठा भावे;
परम प्रभु विख्यात जिनेश्वर हृदय सुहावे;
परम प्रभुनुं ध्यान धरीने ग्रंथ रचना आ करी,
परमब्रह्म नामथी शुभ जगत्मां कीर्ति वरी. ४८
भणे गणे ते परम प्रभुता निश्चय पामे,
अजरामर थइ वेश ठरे ते निर्भय ठामे;
नासे मिथ्या रोग धर्मना ध्यान प्रभावे,
अष्टसिद्धि साम्राज्य हृदयमां वेगे आवे;
ओगणीस पांसठ चैत्र पुनम ज्ञानी जय सुख पामशे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी सत्य सुखडां जामशे. ४९



७५
उपदेश रत्न.

झूलणा छंद.

वित्त आप्युं नहि दुःखियाने अरे, नाम प्रभुनुं अरे केम तारे;
दोषिना दोष टाळ्या नहि प्हेमथी, जन्मीने ते अरे जन्म हारे. वि.१

सुजननी संगति सर्व मानव करे, सुजनने मान सर्वेज आपे;
सद्गुणीनी प्रशंसा जगज्जन करे, सन्तनुं वेण को न उथापे. वि.२

सुजनना वेळी सहु कोण एवुं थशे, प्हेम दृष्टिथकी ते विचारो;
दोषीना दोषहृत् सत्य धर्मी खरो, पापीनुं पाप प्रेमे निवारो. वि.३

दोषीना दोष धोवा दयागंगथी, सन्त साचा करे कार्य एवुं;
चंड कौशिक अरे समज सद्ज्ञानथी, वीरनुं वाक्य ए चित्त लेवुं वि.४

सर्वना श्रेयमां श्रेय म्हारू रह्युं, दोषीपर प्रेमनी वृष्टि वरसो;
भलुं करे मानवी सत्य साधु खरो, दुःख मोहाब्धिने शिघ्रतरशो.वि.५

उच्चने नीचनो भेद सहु टाळीने, ऐक्यता कीजीए सर्व साथे;
उच्च ने भेद भासे नहि सर्वमां, एम भाख्युं अहो विश्वनाथे. वि.६

वचन काया अने ज्ञान सत्ता थकी, प्राणियोने पड्यां दुःख वारो;
सर्वनी उन्नति कीजीए प्रेमथी, कार्य उपकारनां धर्म धारो. वि.७

उच्च जीवन करो पुण्य करणी करो, कार्य उपकारनां साथ आवे;
बुद्धिसागर खरी धर्म करणी करो, सुजनना चित्तमां सत्य भावे वि ८



देहस्थ आत्मानी परमात्मावस्थानुं स्मरण.

झूलणा छंद.

समजी ले भव्य तुं समजी ले भव्यतुं खीलवजे आत्मशक्ति प्रभुनी;
आत्म सामर्थ्यथी सर्व कर्मो टळे,शक्ति हृदये धरो चिद्विभुनी स.१

आत्ममां रमणता ध्यान दृष्टि थकी, दुःखनां कारणो सर्व नाशे.
शरीर व्यापी रह्यो देह भिन्नज लह्यो,ज्ञान सामर्थ्यथी सहु प्रकाशे स.२

स्वाश्रयी थइ रहो सत्यशांति लहो, करणी जेवी तथा कार्य थावे
चिंतना दोषवारो महाशक्तिथी, परम आनंद पद भव्य पावे. स. ३

शुद्ध निर्भय प्रभु कृष्ण रहेमान् तुं, सूर्यने विष्णु तुं प्रभु सवायो;
तेजनो पार नहि वाणी गोचर नहि,ध्यानिना ध्यानमां तुंज आयो.

झळहळे ज्योति आत्मप्रभुनी सदा, दुःखनी भ्रांतियो दूर नासे;
वीर विश्वेश तुं पिंड वसतां छतां, योगियोना हृदयने प्रकाशे. स. ५

तेजनुं तेज तुं देवनो देवतुं. ज्ञानसागर प्रभु तुं मजानो;
दृश्य दृष्टा तुंहि वचन सापेक्षथी, परम ध्याने रहे प्रभु न छानो.स.६

अलख निर्भय प्रभु विष्णुने बुद्ध तुं, शुद्धज्ञाने प्रभु था प्रकाशी;
देव वीतराग तुं शुद्ध सत्ता ग्रहे, व्यक्तिथी था प्रभो धर्मवासी स ७

सारमां सार तुं पूज्यमां पूज्य तुं, जागतो देव तुं देह दीठो;
बुद्धिसागर नमुं ज्ञान दातारने, रोम रोमे अहो नित्य मीठो. स. ८

७७

परना सारामां सारू.

थाळ राग.

परना सारामां सारुंरे, समजो नरनारी;
पण बुरामां अंधारुंरे, समजो नरनारी.

परना सारामां मीठुं, ज्यां त्यां जगमां दीठुं;
परनुं बुरु अनीठुंरे. समजो. १

परने आळ देतो, हिंसक जन छे तेतो;
दुर्गतिमां दुःखडां सहेतोरे. समजो, २

निंदाछे बुरो दारु, तेथी न थाय सारु;
आ वचन मानी ले मारुंरे. समजो ३

दया धर्म जयकारी, अन्तरमां ल्यो उतारी;
हिंसकभाव निवारीरे. समजो. ४

शत्रु मित्र समभावे, चतुर्गतिमां नावे;
चिदानन्दपद पावेरे. समजो ५

दुःखिजन उगारो, नीति धर्म विचारो;
आवे भवदुःख आरोरे. समजो. ६

भलुं सर्वनुं कीजे, साचुं ते मानी लीजे;
बुद्धिसागर घट रीझेरे. समजो. ७

करवुं तो न डरवुं.

थाळ राग.

करवुं तो नहीं डरवुंरे, समजो नरनारी;
डरवुं तो नहि करवुंरे, समजो नरनारी;
आगळ विजय विचारी, कृत्य करो नरनारी;
जाओ न हिंमतहारीरे. समजो. १
चितिशक्ति खीलवत्री, बाह्यवृत्ति सहु दमवी;
शुद्धप्रवृत्ति भजवीरे. समजो. २
दुनिया अरे दीवानी, वात करे दुःख खाणी;
डरो नहि गुण जाणीरे. समजो. ३
दुःखो सामे लडवुं, पाछा कदी न पडवुं;
जरा नहि लडथडवुंरे. समजो. ४
हिंमत कदी नहि हारो, धार्युं पार उतारो;
चेतन शक्ति वधारोरे. समजो. ५
धैर्य धरी सहु करीए, पाछां पगलां नहि भरीए;
बुद्धिसागर सुखवरीएरे. समजो. ६

कर्यां कर्म भोगववां.

थाळ राग.

कर्यां कर्म भोगववांरे, समता घट धारो;
उदास भावे सहवांरे, समता घट धारो.
कायर न थावुं व्हाला, वागे जो तन भाला;
थाशे मंगलमालारे. समता. १

कर्म कदी नहि मूके, दलीकनो रस फुंके;
पण ज्ञानी शूर न चूकेरे. समता, २
कोइ दिन काजी पाजी, ने कोइ दिन राजी राजी;
एक वेळा नहि छाजीरे. समता. ३
कर्मे आळ जे आवे, बहु फटफट जगमां थावे;
कोइ दिन कीर्ति भावेरे. समता. ४
कोइ दिन नृप भिखारी, कोइ दिन मित्रनी यारी;
क्षुधा उदरमां भारीरे. समता. ५
दुनिया पाये लागे, कांटा तो पगमां वागे;
कोइ दिन भिक्षा मागेरे. समता. ६
बांध्यां कर्म नचावे, ज्ञानी तो समता लावे;
बुद्धिसागर एम गावेरे. समता. ७

खरी वखत आवी.

थाळ राग.

खरी वखत आ आवीरे, ज्ञानी मन भावी;
देशो कर्म हठावीरे. ज्ञानी मन भावी.
मळीयुं उत्तम टाणुं, परखी ल्यो धर्मनुं नाणुं;
द्यो गुरूजीने नजराणुंरे. ज्ञानी. १
अवळी नदी उतरवी, पार पेले जावुं;
दया गंगमां न्हावुंरे. ज्ञानी. २
प्रभु प्रभु स्मरी जे, शरण प्रभुनुं कीजे;
दया दान बहु कीजेरे. ज्ञानी ३

परमां चित्त न देवुं, चिदानन्द पद लेवुं;
पाप वचन नहि कहेवुंरे. ज्ञानी. ४
जीवो मित्रज म्हारा, आतम सम सर्वे प्यारा;
अन्तरमां अवधार्यारे. ज्ञानी. ५
वैरी न कोइ मारू, सर्व जगत् छे प्यारू;
मुजथी सर्वे न्यारुरे. ज्ञानी. ६
क्यां आवुं के जावुं, शुं त्यागुं के लावुं;
चेतनता घटमां भावुंरे. ज्ञानी. ७
प्रभु भजननी हेवा, ज्योतिमां भळवुं सेवा;
बुद्धिसागर शुभ मेवारे. ज्ञानी. ८

चेतन हुंशियारी धर.

थाळ राग.

चेतनजी धर हुंशियारीरे, हिंमत बहु धारी;
शिक्षा धरजे सारीरे, मंगल पदकारी.
जीवो सर्वे खमावो, समताना घरमां आवो;
लेजो धर्मनो ल्हावोरे. हिंमत. १
चार शरणां कीजे, ज्ञानामृत रस पीजे;
भवमां नहि भमीजेरे, हिंमत. २
माया ममता त्यागो, अनुभवथी घटमां जागो;
चिदानन्द पद मागोरे, हिंमत. ३
अजर अमर सुखकारी, चेतन ता जो जे त्हारी;
धर्मे सुख तैयारीरे, हिंमत. ४

कर्म विपाको सहेजे, तुं आप स्वरूपे रहेजे;
कोईने कांई न कहेजेरे, हिंमत. ५
शक्ति अनंति स्वामी, राख हवे नहि खामी;
बुद्धिसागर सुख रामीरे, हिंमत. ६

झटपट चेत.

थाळ राग.

चेतनजी झटपट चेतोरे, घटमां झट जागी;
अरे काळ झपाटा देतोरे, थाशो वैरागी.
दुःख सघळां सहीए, समभावमांहि रहीए;
परमानंदपद लहीएरे, घटमां. १
चेतन अमर कहेवायो, चिदानन्द गुण छायो;
घटमां छे दरमायोरे, घटमां. २
मोह खटपट मेली, वखत सुधारो छेल्ली;
करो न चिंता हेलीरे, घटमां. ३
छेवट वखत सुधारो, टाणुं मळ्युं न हारोः
ब्रह्मस्वरूप अवधारोरे. घटमां. ४
क्षणमां थाशे सारु, पुद्गल नहीं छे म्हारू;
मान नहि मन म्हारूरे. घटमां. ५
क्षणमां पाप जाशे, परम प्रभु परखाशे;
समभावे सुखडां थाशे रे. घटमां. ६
हिंमत हैयडे धारो, मळयो वखत सुधारोः
बुद्धिसागर सारोरे; घटमां. ७

बाह्यधर्मक्रियाडंबर.

पैसा पैसा पैसा त्हारी.

बाह्य क्रियाडंबरमां भूल्या, भोळा नरने नारीरे;
उपरं उपरनी धर्मनी बुद्धि, भटके जग बहु भारीरे. बाह्य. १
साध्य साधननुं ज्ञान न होवे, मूढमतिथी चाले रे;
सत्य वातने निश्चयनय कहे, मन आवे त्यां म्हालेरे. बाह्य. २
सम्यग् आत्मस्वरूप न जाणे, बाह्य क्रियामां फूलेरे;
साध्य शून्य अरे करे क्रियाओ, धामधूममां भूलेरे. बाह्य. ३
मन सुधर्यांवण शिर मुंडावे, वेष प्रभुनो लजावेरे;
एक एकनां छिद्र ज शोधे, मूढनी आगळ फावेरे; बाह्य. ४
व्रत लीधा वण व्रत आलोवे, ज्ञान दशावण घहेलारे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, समजो समजु वहेलारे बाह्य. ५

धामधूममां धर्म

राग उपरनो.

धामधूममां धर्म मनायो, भूल्यां नरने नारीरे;
चिदानन्द नहि शोध्यो घटमां, खाइ मति हुशियारीरे. धामधूममां. १
धर्म धूतारा केइ फरे छे, बग शांति बहु धरतारे;
भोळा जनने भरमावीने, उदर पोषण अरे करतारे. धामधूममां. २
पोप लीला चलवे छे भारी, राखी बहु हुशियारीरे;
लोभी वसे त्यां धूर्तो फावे, जोशो चित्त विचारीरे. धामधूममां. ३
क्रियाकांडमां साध्य शून्य थई, मूर्ख जनो भटकायारे;

सम्यग् ज्ञानक्रियाथी मुक्ति, कोईक वीरला पायारे धामधूममां. ४
अलख खलकमां साचो समजो, देह पिंडमां वसियोरे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, अन्तर अनुभव रसियोरे.धामधूममां.५

शुद्धपरमात्मस्वरुपस्मरण.

पैसा पैसा ए राग.

परमबुद्ध परमेश्वर स्वामी, रुपारुप प्रकाशीरे,
चिदानन्द चेतन निर्दोषी, शाश्वत सिद्धि विलासीरे परम. १
सात नयोथी आत्मधर्मनी, स्थिति शुद्ध विचारोरे;
द्रव्यार्थिकनय नित्यपणेछे, एकरुप ध्रुव प्यारोरे. परम. २
पर्यायार्थिकनय अनित्य, पर्याय शुद्धि प्रजानीरे;
सोऽहं सोऽहं प्रभु गुण गावो, सिद्धि रहे नहि छानीरे. परम. ३
रत्नत्रयीनी स्थिरता छाजे, आनन्द अनहद राजेरे;
परम महोदय लीला प्रगटे, त्रण भुवन शिर गाजेरे. परम. ४
तत्त्वमसि निश्चयनय निर्मल, घटमां गंगा काशीरे;
बुद्धिसागर घटमां शोधो, आनन्दघन अविनाशीरे. परम. ५

चितिशक्ति सामर्थ्य.

राग उपरनो.

चितिशक्ति अनंत खीलववी, योगाभ्यास वधारीरे;
बाह्य भाव सहु दूर हरीने, सेवो धर्म सुधारीरे. चिति. १

परिपूर्ण हुं पुरुषोत्तम छुं, वीर्य अनन्तनो स्वामीरे;
जे धारु ते करी शकुं हुं, मिश्रक्षायिक गुणरामीरे. चिति. २
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, मन आवे ते धारोरे;
पण तेथी मुज कांइ न जातुं, शुद्ध स्वभावे प्यारोरे. चिति. ३
दुनिया खोटी तो शुं मारे, सारी तो शुं मारेरे;
समभावे आनन्दमां झीलुं, निश्चय शुद्ध विचारेरे. चिति ४
निश्चयनय आनंद स्वभावी, शोधो घट नरनारीरे;
बुद्धिसागर वीर्योत्साहे, परमब्रह्म पद भारीरे. चिति. ५

परमज्योति पद.

राग उपरनो.

परमज्योति परमेश्वर स्वामी, चिदानंद जयकारीरे;
आतम ते परमातम साचो, व्यक्तिपणे बलिहारीरे. परम. १
नित्यनिरंजन निर्भय निश्चय, व्यक्ति जीव अनंतारे;
कर्म खप्याथी जीव ते शिवरुप, भाखे छे भगवंतारे. परम. २
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता संगी, समये समये वखाणोरे;
सापेक्षाए धर्म अनंता, समजी शिव सुख आणोरे. परम. ३
नहि हुं कर्ता नहि हुं हर्ता, नहि हुं नर के नारीरे;
वृद्ध युवा के नहि नपुंसक, ज्ञात भात नहि मारीरे. परम. ४
स्याद्वाद सत्तामय पूर्ण, परमानंद पद भोगीरे;
बुद्धिसागर सुरता साधी, थावे निश्चय योगीरे. परम. ५

आश्चर्य पद.

राग उपरनो.

अचरिज मोटुं दीठुं संतो, साधु सरोवर झीलेरे;
अनहदनादे मुनिवर नाचे, दाणा घंटीने पीलेरे. अचरिज. १
वाहाण मांहि समुद्र समायो, राजा करे रंक सेवारे;
खरा वपोरे लेश न सुझे, पूजे पूजारीने देवारे. अचरिज. २
लक्ष्मीदारो भीक्षा मागे, भिक्षुक शेठ कहावेरे;
उलटो चोर कोटवाळने दंडे, जूठुं जनने भावेरे. अचरिज. ३
नपुंसकना वशमां सहु दुनिया, दुःखने सहु पंपाळेरे;
पोताने दुनियामां शोधे, छती आंखे नव भाळेरे. अचरिज. ४
धामधूममां धर्म मनायो, भोगी जन संन्यासीरे;
जूठा बोला जग पूजाता, देखी आवे बहु हांसीरे. अचरिज. ५
पति सतीनी जोडज वीरली, अंधा अंधने दोरेरे;
बुद्धिसागर घटमां शोधो, आंबो शोभे मोरेरे. अचरिज. ६

जाग्रति सदुपदेश पद.

राग उपरनो.

जागीने तमे जुओ सन्यासी, जोगी, जाति, विश्वासीरे;
खाखी, फकीर, वैरागी, त्यागी, साधु संत उदासीरे. जागीने १
समजी साचुं अंतर धारो, खटपट मनथी वारोरे;
साचुं ते पोतानुं मानी, आतमने झट तारोरे. जागीने. २
जड चेतन बे तत्त्व अनादि, कर्म ते जीव ग्रहेछेरे;

मिथ्यात्वादिक हेतुयोगे, चार गतिमां वहेछेरे. जागीने. ३
कर्म जतां आतम परमातम, ज्योति ज्योत मिलावेरे;
सादि अनंतिस्थिति सिद्धि, संसार फरी नावेरे. जागीने. ४
जीव ते इश्वर कर्मनो कर्ता, हर्ता पण ते थावेरे;
शरीर जगत्ने रचतो हरतो, ध्याने शिवपुर जावेरे. जागीने. ५
संग्रहनयथी ब्रह्म अनादि, सर्व जीवोमां सारुरे;
सत्ताव्यक्तिथी एक अनेक, अनेकांतनय प्यारुरे. जागीने. ६
देह जगत् अज्ञाने रचतो, इश्वर आतम पोतेरे;
असंख्य प्रदेशी देहे व्याप्यो, वीजे शीदने गोतेरे. जागीने. ७
भेद अभेद स्वरुप सुहायो, सूक्ष्म बुद्धिथी ध्यायोरे;
बुद्धिसागर करुणानो घर, परमप्रभु परखायोरे. जागीने. ८

सोऽहं.

राग उपरनो.

सोहं सोऽहं सोऽहं सोऽहं, सोऽहं रटना धारीरे;
रेचक पूरक कुंभक साधी, केवल कुंभक भारीरे. सोऽहं. १
इंडा पिंगला सुषुम्णा नाडी, पवनाभ्यास संचारीरे;
द्रव्यभावथी ध्यान पिंडस्थ, थयुं हृदय जयकारीरे. सोऽहं. २
षट् चक्रोनो भेद करीने, वंकनाल अवतारीरे;
जई गगनगढ आसन कीधुं, अन्तरदृष्टि वतारीरे. सोऽहं. ३
स्थिरोपयोगे आनंद लहेरी, प्रगटी महागुणकारीरे;
अनुभवामृत पीधुं प्रेमे, अलख दशा अवधारीरे. सोऽहं. ४
चढवुं उतरवुं क्षयोपशमथी, करवी क्षायिक सिद्धिरे;
बुद्धिसागर सोहं सोहं, स्मरण करे सुखऋद्धिरे सोऽहं. ५

उच्चभाव.

राग उपरनो.

उच्च भावना उच्च करे छे, दोषो सर्व हरेछेरे;
आतम ते परमातम थावे, समजु चित्त धरेछेरे. उच्च. १
सद्गुणदृष्टिथी गुण लेवा, निन्दा दोष निवारीरे;
पिस्तालीश आगमने समजी, लेशो आतम तारीरे. उच्च. २
सम्मग्दृष्टि गुण ग्रहे छे, सद्गुण चित्त वहेछेरे;
दोषीना पण दोष न बोले, गुणिनो गुण लहेछेरे उच्च. ३
अवगुण उपर गुण करे छे, उच्च भावनाभ्यासीरे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावथी, धर्म तत्त्व मन वासीरे. उच्च. ४
आतम ते परमातम ध्यावो, उच्च भावना सारीरे;
बुद्धिसागर उच्च भावना, चित्त धरो नर नारीरे उच्च. ५

जुओ तपासी.

राग उपरनो.

जुओ तपासी जुओ तपासी, अन्तरमां सुख साचुंरे;
अनुभवामृतसागर आतम, बाकी सघलुं काचुंरे. जुओ. १
क्षणिक दुनियाना सहु रंगो, चेन पडे नहि चारुंरे;
हुं मारु ए मुजथी न्यारु, समज्या वण अंधारुंरे. जुओ. २
झळहळ ज्योति जागी रही छे, लोकालोक प्रकाशीरे;
ज्ञाता, ज्ञेयने ज्ञानविलासी, जोतां टळती उदासीरे. जुओ. ३
द्रव्य गुणपर्यायमयी जीव, निश्चय निज गुण भोगीरे;

परमब्रह्म पुरुषोत्तम स्वामी, योगीना पण योगीरे. जुओ. ४
शक्ति अनंति समय समयमां षट्गुण हानिवृद्धिरे;
बुद्धिसागर चेतन चिन्हे, थावे जिनपद शुद्धिरे. जुओ. ५

मैत्रीभावना धारो.

राग उपरनो.

ज्यां त्यां मैत्रीभावना धारो, इर्ष्या दोष निवारोरे;
दुश्मन कोइ न जीवो मारा, साचुं तत्त्व विचारोरे. ज्यां त्यां. १
स्वार्थ धरी कोइ जीव न मारो, मरता जीव उगारोरे;
दया धर्ममां मूल खरु छे, मैत्री भावमां धारोरे. ज्यां त्यां. २
सर्व जीवो जो मारा मित्रो, तो केम अन्यने माहरे.
मैत्रीभाव त्यां कदी न हिंसा, सत्यतत्त्व अवधारुरे. ज्यां त्यां. ३
द्रव्यभावथी मैत्रीभावना, शाश्वत सुख करनारीरे;
मोह दोषनो नाश करेछे, परमधर्म धरनारीरे. ज्यां त्यां. ४
चंडकोशिया सर्पनी उपर, मैत्री भावना सारीरे;
वीरजिनेश्वरना मनजाणो, बुद्धिसागर प्यारीरे. ज्यां त्यां. ५

निन्दा त्याग.

उठो चेतन आळस छंडी—ए राग अथवा प्रभात राग.

कर्माधीन छे संसारी जीव, निन्दा कोईनी न करशोरे;
निन्दा करतां नीचपणुं छे, शिक्षा दिलमां धरशोरे कर्मा. १

तरतमयोगे दोषी दुनिया, करशो तेवुं भरशोरे;
निन्दक जन चंडाल समो छे, निन्दाने परिहरशोरे. कर्मा. २
पोतानामां दोष घणा छे, तेने कोई न पेखेरे;
परनां चांदां खोळे पापी, सद्गुण दृष्टि उवेखेरे. कर्मा. ३
निन्दकनी दृष्टि छे अवळी, परने आळ चढावेरे;
पोते सारो परने खोटो, कहेवामां ते फावेरे. कर्मा. ४
त्रियोगे निन्दक जन पापी, परनुं भूंडुं धारेरे;
बुद्धिसागर सद्गुण दृष्टि, धारी दोष निवारेरे. कर्मा. ५



एक स्वप्न.

राग—प्रभात.

स्वप्न समी आ दुनियादारी, समजो नरने नारीरे;
बाजीगर बाजी सम दुनिया, सुख नहि तलभारीरे. स्वप्न. १
जन्म्या तेने जावुं अन्ते, माया सर्व विसारीरे;
चेत चेत चेतनजी मनमां, मायामां दुःख भारीरे. स्वप्न. २
हाजी हा सहु स्वार्थतणी छे, मोहे मारामारीरे;
स्वारथनुं सगपण जगमांहि, निश्चय देख विचारीरे. स्वप्न ३
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र चवेछे, राणा रंक विहारीरे;
अमर रहे नहि कोई आ जगमां, फुले शुं संसारीरे. स्वप्न. ४
ज्ञान ध्यानथी अन्तर शोधो, आतम सुखनी क्यारीरे;
बुद्धिसागर धर्मि जननी, हुं जाउ बलिहारीरे. स्वप्न. ५



परिग्रहममता.

राग उपरनो.

परिग्रहनी मूर्च्छा छे भारी, मोह्यां नरने नारीरे;
परिग्रह ग्रहछे अभिनव जगमां, आपे दुःखडां भारीरे. परिग्रह. १
सर्व उपाधि मूळ परिग्रह, नरकगतिनी क्यारीरे;
परिग्रह मोहे धर्म न सुझे, जोशो दिल विचारीरे. परिग्रह. २
परिग्रह सन्निपात समो छे, चिंता दुःख संचारीरे;
बाह्य भावमां मनडुं भटके, जावे नरभव हारीरे परिग्रह. ३
अन्तर्धनमां विघ्न परिग्रह, जोशो मनमां धारीरे;
ज्ञान ध्यानमो भंग करे छे, चेतन शक्ति खुवारीरे. परिग्रह. ४
परिग्रहमां मोटाइ धारे, भूल्या ते जन भारीरे;
बुद्धिसागर अन्तर्धनथी, चिदानंद तैयारीरे. परिग्रह. ५

शामाटे वाद करवो,

उठो चेतन आळस छंडी—ए राग

शा माटे अरे वाद करो छो, वादे सत्य न सुझेरे;
धर्मवाद पण ताणंताणा; आतम तत्त्व न बुझेरे. शा माटे. १
सातनयोनुं ज्ञान थया पण, सापेक्षा नहि आवेरे;
सापेक्षा समज्या पण चेतन, स्थिरताभाव न पावेरे. शा माटे. २
स्याद्वाद सम्यक् जे समजे, ज्ञानी तेह कहावेरे;
सद्गुण दृष्टि मनमां धारी, परमानंदपद पावेरे. शा माटे ३
इष्टानिष्टपणुं नहि परमां, समता सहज कहावेरे;

त्याग ग्रहण नहि पुद्गल वस्तु, योगी सत्य सुहावेरे, शा माटे. ४
चिदानन्दमां लीन थइने, कर्म कलंक हठावेरे;
बुद्धिसागर निर्मल चेतन, परम महोदय पावेरे; शा माटे. ५



कपटक्रियामां पाप.

राग—उपरनो.

कपट क्रियामां पाप घणुं छे, मुख मधुर मन कातीरे;
बक शान्ति कपटी मन धारे, कपट कळायुत वातीरे. कपट. १
कपटे तप जप किरिया निष्फल, मौनपणुं पण खोटुंरे;
गगन उपर चित्रामनी पेठे, कपटीनुं सहु छोटुंरे. कपट. २
काष्ठ परे सुकाइ जावे, तो पण कपटी बूरोरे;
कपटीनुं छे काळुं मनडुं, पर निन्दामां शूरोरे. कपट. ३
फल किंपाकना सरखो कपटी, अहि सम संग निवारोरे;
बाहिर जुदु अन्तर जुदु, तेनो संग निवारोरे. कपट. ४
आप स्वार्थमां निशदिन रातो, धर्मि डोळ जणावेरे;
बुद्धिसागर आत्मज्ञानथी, समजी साचुं पावेरे. कपट. ५



हे आत्मा तुं वस्तुतः सिद्ध छे.

राग उपरनो.

शुद्ध बुद्ध हुं सिद्ध सनातन, जिनवर शिवमय काशीरे,
सत्ताथी छुं त्रिभुवन स्वामी, चिदानन्द पद वासीरे. शुद्ध १

शिव इश्वर पुराण महोदय, पुद्गलद्रव्यथी न्यारोरे;
रत्नत्रयी विश्रामी नामी; गुण पर्यायाधारोरे. शुद्ध २
अविनाशी अकलंक स्वरूपी, परम मंगल पद धारीरे.
नित्य निरंजन निर्भय देशी, अक्रियने अणाहारीरे; शुद्ध. ३
परपुद्गल कर्त्ता हर्ता नहि, सहजस्वरूप सुखकारीरे;
आनन्दघननी मोजमझामां, रमण करु जयकारीरे. शुद्ध. ४
निश्चयनय एम मनमां द्वारी, व्यवहारे व्यवहारीरे.
बुद्धिसागर परम ज्योतिमां, मंगल पद घट धारीरे. शुद्ध. ५

गाडरीया प्रवाहनी अंधाधुधी.

राग उपरनो.

गाडरीया प्रवाहमां दुनीया, अंधाधुधी चालेरे;
सत्य वातनो शोध करे नाहि, मन माने त्यां म्हालेरे. गाडरीया. १
सूक्ष्म बुद्धिवण गहन वातने, समजे नाहि अज्ञानीरे;
आपमति त्यां युक्ति खेंचे, समजे शुं तें भाणीरे. गाडरीया. २
सर्वज्ञ वाणीने गुरुगम, समज्या वण दुःख खाणीरे;
परम बोध प्रगटे नाहि मनमां, समजे कोइ जिन वाणीरे. गाडरीया. ३
ज्ञान विना नहि भान लहे निज, अज्ञानी बहु भटकेरे;
सद्गुरु वाणी न मनमां धारे, लक्षचोराशी अटकेरे. गाडरीया. ४
अज्ञानी पशुसम अवतारी, ज्ञाने ते सुधरेछेरे;
बुद्धिसागर शुद्ध दशा लही, परमानंद वरेछेरे. गाडरीया. ५

आपबडाइ.

राग उपरनो.

आप बडाइ जे जन बोले, तेह टकाने तोलेरे;
आप बडाइ जे जन मारे, पुस्तक जळमां बोळेरे. आप. १
आप बडाइ गुण नवि संचे, अभिमान मन आवेरे;
निजगुण निजमुखथी नव बोले, ज्ञानी जन एम गावेरे. आप. २
आप बडाइ त्यां हलकाइ, समजो नरने नारीरे;
हुं त्यांथी सद्गुण छे आघा, उच्चदशा नहि धारीरे. आप. ३
उत्तम जननी नीति उंची, करे न आप बडाइरे;
उगे सूर्य सहु हर्ष धरे छे, बोल्या वण सुखदाइरे. आप. ४
मोटाइथी जळधर गाजे, त्यारे जल नहि वरसेरे;
बुद्धिसागर रहे न छानो, सूर्य उग्यो झळहळशेरे. आप. ५

शा माटे चिंता करवी.

राग उपरनो.

शा माटे अरे चिंता करवी, चिंता दुःख वधारेरे;
चिंताथी चतुराई टळे छे, जीवंतां अहो मारेरे. शा माटे. १
चिंता चितासम दुःखदाई, धैर्य त्यजावे भारीरे;
चिंतातुरने सत्य न सुझे, जोशो चित्त विचारीरे. शा माटे. २
चिंता कर्म वधारे पुष्कळ, चिंता दुःखनी क्यारीरे;
चिंतासागरमां जे पडिया, नीच गति अवतारीरे. शा माटे. ३
चिंता कारण मोह खरो छे, चिंताथी नहि शांतिरे;

चिंता अग्नि मन घर बाळे, प्रगटे दुःखकर भ्रान्तिरे. शा माटे. ४
ज्ञान धैर्यथी चिंता नासे, प्रगटे छे हुंशियारीरे;
बुद्धिसागर अवसर आवे, धैर्य धरो नरनारीरे. शा माटे. ५

क्लेश त्याज्य छे.

राग उपरनो वा. प्रभात.

क्लेश तजो अरे क्लेश तजो अरे, क्लेशे लक्ष्मी टळेछेरे;
क्लेशे पर पोतानुं भूंडुं, दुःखना वृन्द मळेछेरे. क्लेश. १
क्लेशे वैर विरोध वधे बहु, सुख दहाडा परवारेरे;
क्लेशी जन संसारे कडवो, आप मरे पर मारेरे. क्लेश २
क्लेशे कुटुंबमां नहि शान्ति, नातजातमां जोशोरे;
बळता अग्नि सम छे क्लेशज, पडतां निज सुख खोशोरे.क्लेश.३
क्लेशे देश राज्य अवक्रान्ति, धर्म राज्य अवक्रांतिरे;
क्लेशे काळुं ज्यां त्यां दीठुं, क्लेशे बहु विध भ्रान्तिरे. क्लेश. ४
क्लेशी जन पर दुःखनां वादळ, क्षणमां मारा मारीरे;
बुद्धिसागर शिक्षा पामी, क्लेश तजो नरनारीरे. क्लेश ५

९५

ज्ञानी.

छप्पय छंद.

सत्य ज्ञानी छे तेह खरेखर समता राखे,
उलट आंखथी ध्यान धरी सुख रसने चाखे;
करे उपाधि दूर खरेखर मननी सघळी,
परिहरे छे दुःखकर सघळी चिंता सगडी;
द्रव्य क्षेत्रने काळ भावेज वस्तु धर्मने जाणतो,
दुर्गुणो सहु दूर करीने सद्गुणो मन आणतो. १
विस्तृतदृष्टि राखी जननुं भव्य विचारे,
सदाचार धरी आप तरेने परने तारे;
कपट क्रियामां रंगातो नहि मोह धरीने,
धामधूममां रंगातो नहि मान करीने;
स्थिरोपयोगे नित्य रहेवे पर रमणता परिहरे,
बुद्धिसागर ज्ञानी जनने धन्य छे सुखडां वरे. २
भणे भणावे ज्ञान ज्ञानिनी छे बलिहारी,
ज्ञानिनी शुभ संग ज्ञानी छे महावतारी;
ज्ञानी निर्मल वाण सुणीने सहु जन बुझे,
ज्ञाने सत्य विवेक ज्ञानथी सत्यज सुझे;
ज्ञानी सेवा जे करे ते चिदानंद पदवी वरे
बुद्धिसागर ज्ञानि जनने दुनिया वंदन करे. ३
करो ज्ञानिनुं मान ज्ञानिथी शासन चाले,
करो ज्ञानिनी सेव ज्ञानीजन शिवमां म्हाले;
आत्मज्ञानिनी आण धरंतां सुखडां पासे,
करे कुमतिनो नाश उपाधि सर्व विनाशे;

कामकुंभ सुर द्रुमथी अहो ज्ञानी उपकारी बहु,
सम्यक्त्व दर्शन जीव पामे ज्ञानी शोभा शी कहुं ४
ज्ञानि जनने स्हाय करे ते प्रभुता पामे,
ज्ञानिनी बहु भक्ति करे ते ठरतो ठामे;
परखे ज्ञानी कोइ जेहने ज्ञान प्रकाश्युं,
परखे ज्ञानी कोइ चित्त समताए वास्युं;
चंद्र सूर्यने मेघथी अहो ज्ञानि महिमा बहु कह्यो,
बुद्धिसागर ज्ञानि संगे आतमा निजपद लह्यो. ५
पंच महाव्रत धरे हृदयमां समता धारे,
ज्ञानतणुं फल विरति निश्चय एम विचारे;
निश्चयदृष्टि चित्त धरे व्यवहारे चाले,
स्थिरोपयोगे अनुभव सुखमां निश्चय म्हाले;
अनुभवीए अनुभव्युं छे ज्ञानफळ शिव धर्म छे,
बुद्धिसागर सत्य ज्ञानी परम शिवपुर शर्म छे. ६

कहेणी रहेणी.

छप्पय छंद.

कहेणी सम रहेणी राखे ते वक्ता साचो,
कहेणी सम रहेणी नहि जेनी ते जग काचो;
कथनी कथनारा वर्ते छे जगमां लाखो,
मासाहस पंखी सम कहेणी काढी नाखो;
कहेणी सम रहेणी खरेखर कोइ ज विरला धारता,
बोली वणगां फुंकता ते चेतनने नहि तारता. १

नीति सद्गुण खरा जगत्मां सहु जन कहे छे,
कहेणी सम रहेणीनी वाटे विरला वहेछे;
धर्म मार्गने जाणीने वर्तनमां मूके,
विरतिनी रहेणीने विरला कदी न चूके
धर्म तत्त्वज जाणीने जे उच्च वर्तनमां रहे,
बुद्धिसागर तेह साचा सिद्ध शाश्वत सुख लहे. २
थोडी कहेणी रहेणी बहु ते सज्जन डाह्या,
धन्य धन्य ते वीर जगत्मां जननी जाया;
पाडानी पेठे पोकारें दया न पाळे,
गद्धानी पेठे भूंके पण दोष न टाळे;
शुद्ध आत्मस्वभावमां जे रमणता करता खरे;
बुद्धिसागर तेज वक्ता सत्य सुखडां झट वरे. ३
उपर उपरथी फोनोग्राफनी पेठे बोले,
बोले पण पाळे नहि ते जन रासभ तोले;
ज्यां त्यां भापण भवाइ उठी कह्युं न पाळे,
परोपदेशे पंडित जग शुं ते अजुवाळे;
सदाचार जेमां नहिने स्वार्थथी ज्यां त्यां फरे,
उच्च सद्गुण प्राप्ति वण ते उच्च आतम शुं करे. ४
जैन मुनिवर जोशो जगमां व्रतने पाळे,
कहेणी सम रहेणी राखीने कूळ अजवाळे;
कहेणी समजे रहेणी राखे जग जयकारी,
सहस्रमांहि एक जगत्मां महोपकारी;
बुद्धिसागर कहेणी समजे रहेणी राखे ते खरा.
धन्य धन्य ते नर जगत्मां जननी कूखे अवतर्या. ५

विद्या.

छप्पय छंद.

विद्या सुखनुं मूळ सज्जनो जाणी लेशो,
विद्याभ्यासी सज्जन सत्वर साचुं कहेशो;
सर्व देशमां सर्व काळमां विद्या सारी,
विद्याथी छे सत्य सुधारो जग जयकारी;
सर्व सुखनुं मूळ जगत्मां विद्या वृद्धि ज जाणीए,
विद्वान् जन छे सर्व पूज्य ज सत्य मनमां आणीए. १
सर्वोन्नतिनुं मूळ जगत्मां विद्या साची,
चक्षु विना जेम काया उम्मर तद्वत् काची;
मूढपणुं अळपावुं विद्या तेजे जगमां,
विद्यानो शुभराग ज्ञानीने छे रगरगमां;
सर्वभाषा जाणवाथी ज बुद्धि विकसे छे खरी,
उन्नतिने शोधवामां सत्य विद्या जयकरी. २
विद्याथी सर्वत्र पूज्यछे नरने नारी,
विद्याथी नीतिनी वृद्धि छे सुखकारी;
आत्मतत्त्वनुं ज्ञान करावे विद्या साची,
टळे अविद्या विद्यायोगे रहेशो राची;
ज्ञातिधर्म देशोन्नतिमां भव्यविद्या मूळ छे,
जन्मी विद्या ग्रही नहि तो सर्व उमर धूळ छे. ३
चडती पडती सर्व पिछाणे विद्यायोगे,
तन धन सत्तानी प्राप्ति छे विद्यायोगे;
विद्यावण जन पशु समाना आर्यो होवे,
विद्या पामें म्लेच्छोदय पण अधुना जोवे;

नीच जन पण उच्च थावे धारीने विद्या खरे,
उच्च कूळ पण नीच थावे समजशो सज्जन अरे. ४
विद्यार्थी अवसरने जाणे प्राणी प्रेमे,
विद्यार्थी सुकृत्य करे छे निश्चय नेमे;
विद्वज्जननी संगति थातां पाप टळे छे,
महामुनिवर ज्ञानी संगे धर्म मळे छे;
वात साची खरेखरी आ सज्जनो मन धारशो,
बुद्धिसागर जिनागमे सहु वस्तु तत्त्व विचारशो. ५



हासी.

छप्पय छंद.

हांसीथी खांसी प्रगटे छे जगमां भारी,
हांसी जननी घात करावे दुःख करनारी;
परनी हांसी करनारो जन मूर्ख कहावे,
उत्तम जननी शोभा तेथी लेश न थावे;
हास्यथी छे युद्ध भारी वैर वृद्धि छे घणी,
मूढ जनने हास्य प्रगटे होय जे अवगुण घणी. १
हांसी करतां पाप घणुं छे ज्ञानी गावे,
सत्य धर्मनो लोप हांसीथी शिघ्रज थावे;
हांसी परने क्रोध करावे समजी लेशो,
हांसी दुःखनुं मूळ जाणीने दूरे रहेशो;
हांसी करतां जगत् जन सहु द्वेषनुं पोषण करे,
यत्र तत्र अपमान पामे दुःख कारण मन धरे. २

कुटुंबमां कंकास हासीथी राज्य विनाशे,
आवे दुर्मति पास रहे नहि सुमति पासे;
सदाचरणनो नाश हांसीथी छोकरवादी,
पामे नहि सन्मान कहे जन छे उन्मादी;
हास्य करतां जगत्मां अहो दोष श्रेणि जन लहे,
हास्यमां अहो सार शुं छे उच्च तेने शुं वहे. ३
ठठ्ठा हांसी दुर्गुण हेतु परखी लेशो,
परनी हांसी करवामां जन लक्ष न देशो;
परनी हांसी करवामां छे निजनी हांसी,
विद्वज्जन अरे पाद उपर केम मारे वांसी;
उच्च सद्गुण धारीने अहो सत्य वाणी दिल धरो,
बुद्धिसागर सत्य शिक्षा पामी प्राणी सुख वरो. ४

दया

छप्पय छंद.

दया सर्वथी श्रेष्ठ दयामां धर्म समाया,
दया धर्मनुं मूळ दयाथी सुरनरराया;
दया धर्मथी सुख दयाथी पाप टळे छे,
दया धर्मथी मोक्ष दयाथी पुण्य मळे छे;
द्रव्य भाव बे भेदथी अहो दया जगत्मां सार छे,
उच्चमां ते उच्च भव्यो धन्य तस अवतार छे. १
प्रिय स्वकीय प्राण अन्यनो तेम खरे छे,
पोताने जेम दुःख अन्यने तेम अरे छे;

प्रिय पोताने सुख अन्यने तेमज व्हालुं,
परने नावे दुःख अहो हुं तेमज चालुं;
आत्मवृत्ति दयामयी तो मुक्ति करमां जाणशो,
समजीने अहो भव्य लोको दया धर्म मन आणशो. २
पोताना सम अन्य जीवोने निश्चय धारे,
प्राण पडे पण अन्य जीवोने कदी न मारे;
गृहस्थ धर्मने योग्य दयानी रहेणी राखे,
साधु निज पर हेतु दयाथी शिव सुख चाखे;
दया धर्मनी माहात्म्यथी अहो देवता पाणी भरे,
बुद्धिसागर दया वहाणथी जगत्मां सहु जन तरे. ३
दया धर्मनी कहेणी समजे रहेणी राखे,
दया धर्मना सुख खरेखर ते जन चाखे;
दया धर्मनी परोपकारि वृत्ति मोटी,
दया धर्मविण धर्मनी कहेणी लागे खोटी;
दया धर्मविण जगत्मां अहो सुख नहि तलभार छे,
बुद्धिसागर दया धर्मथी जगत्मां जयकार छे. ४
जेवुं वावो तेवुं लणशो दया कर्याथी,
दया धर्मथी उच्च भावना सत्य वर्याथीः
दया धर्मथी परम प्रभुता घटमां जागे,
इंद्र चंद्र नागेन्द्र खरेखर पाये लागे;
दयाना बहु भेद भाख्या एक पण जे आदरे,
बुद्धिसागर सिद्ध पदवी प्राणी ते प्रेमे वरे. ५
दया धर्ममां उच्च खरेखर जूठ न बोले,
दया धर्ममां उच्च खरेखर कूट न तोले;
ब्रह्मचर्यना भेद दयामां सर्व भळे छे,

धन मूर्छानो त्याग दयामां सर्व मळे छे;
स्वकीय परना शर्म माटे दया जगत्मां वेश छे,
बुद्धिसागर दया धर्मथी परम शर्म हमेश छे. ६

वेश्या संग.

छप्पय छंद.

वेश्या संगे पाप जगत्मां मोटुं भाख्युं,
वेश्या संग कर्याथी मूर्खोए दुःख चाख्युं;
वेश्या संगी वित्त विनाशे भलुं न जोवे,
निज पत्नीनो प्रेम हणीने मूढज होवे;
कुटुंब वर निज देशनी अहो अवनतिनुं घर अहो,
जगत्मां ते मूर्ख मोटो हृदयमां समजी रहो. १
वेश्याना नाचे मोह्या ते लहे खुवारी,
कूतर सम तेनी वृत्ति जोशो नरनारी;
वेश्याना घरमां जावाने हृदय निवारे.
पण समजे नहि मूर्ख सत्यने नहीं विचारे;
वीर्यकीर्तिनो नाश थावे मोहथी ते करगरे,
धिक् तस अवतारने अहो समजीने नहि आचरे. २
करे आयुनो नाश लोकमां मान न पामे,
वेश्या संगी अहो जगत्मां ठरे न ठामे;
वेश्यानो शो प्यार विचारी जोशो प्राणी,
करे देशनो नाश वात नहि कोई अजाणी;
जीवननी साफल्यताने टेकथी करशो अहो,

ब्रह्मचर्यनी वृत्ति धारी जगत्मां सुखकर रहो. ३

ऐंठ समो वेश्यानो संग करे ते खोटो,
वेश्या संगे निश्चय आवे छे बहु तोटो;
वेश्या संगे शरीर कांति घटशे नक्की,
वेश्या संगे अल्प आयुनी समजो वकी;
संग वेश्यानो जे करे ते कार्य सारुं शुं करे,
देश दोलत धर्म खोवे दुःखना दहाडा वरे. ४

वेश्या संगी अज्ञाने दुःखमां सपडातो,
अल्प सुखने हेत मीन ज्युं गोळी खातो;
वेश्या संगे अनेक जीवो संपत् हार्या,
वेश्याए लक्ष्मीना लोभे जन बहु मार्या;
त्याग वेश्यानो करीने शीयलमां जे मन धरे,
बुद्धिसागर धन्य ते नर सिद्ध शाश्वत सुख वरे. ५

परनारी संग.

छप्पय छंद.

परनारीनो संग करे ते कर्म वधारे,
परनारीनो संग करे ते बळने हारे;
परनारीनो संग करे ते ठरे न ठामे,
परनारीनो संग करे ते दुःखडां पामे;
परनारी संगे जे रम्या ते दुःखे रौरव भोगवे,
परनारी संगी जे जनो ते चित्त आव्युं ते लवे. १

परनारीना प्रेमे रावण राजज हार्यो,

वस्त्राकर्षक कीचकने तो भीमे मार्यो;
परनारी संगे जन दुःखी ज्यां त्यां होशे,
परनारीना फंद फसीने अंते रोशे;
वित्त वीर्यने प्राणनो अहो नाश थावे छे खरो,
किंपाक फळने भक्षतां तो प्राणिया अंते मरो. २
लंपट लुच्चो परनारीना संगे थावे,
कीर्तिनो धूमाडो करीने कांइ न पावे;
लागे कूळ कलंक लोक जन म्हेणां मारे,
आयुः प्राणनो नाश पामीने नरभव हारे;
परनारी संगे घात थावे केदमां पडतो अरे,
क्षणिक भ्रांति सुख माटे सत्य धर्मने परिहरे. ३
परनारीनी संगे रोगो केइक थावे,
चित्त न ठरतुं ठाम भटकतुं ज्यां त्यां जावे;
चिंता रोग विकार दोष सहु व्हेला प्रगटे,
कायानुं बहुं जोर खरेखर व्हेलुं विघटे;
लक्ष्मीसत्ता तोरमां जे विषय संगे म्हालता,
पर प्रियानो संग करीने दुःख पंथे चालता; ४
परनारीनी संगत बूरी शास्त्र कहे छे,
परनारीथी हसतां मानव आळ लहे छे;
परनारीनी संगे कूळमां लागे बट्टो,
करो मोहने दूर धर्मनो दुश्मन कट्टो;
पर प्रियाना पाशमांहि पशु परे जे जन रह्या,
हाय हाय करता अरे ते दुःखना दहाडा लह्या. ५
परनारीनी संगे चेतन शक्ति हणाती,
परनारीनी संगे मनमां कुमतिक्राती;

परनारीनी संगे जगमां कोण उगरीया,
परनारीनी संगे सुखडां कोइ न वरिया;
परनारी त्यागे धन्य ते नर द्रव्यभावे बेश छे;
बुद्धिसागर वचन सिद्धि परम सुख हमेश छे. ६

समाधिलय.

धीराना पदनो राग.

समाधिलय लागीरे, आनंदघन परखायो;
झळहळ ज्योति जागीरे, चिदानंद घर पायो;
धरी धारणा ध्यान धर्युं निज, तन्मयता थइ आज;
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूर्युं, पाम्यो भुवननुं राज;
सुखसागरनी ल्हेरोरे, देखी बहु हरखायो. समाधि. १
हरवुं फरवुं खावुं पीवुं, करूं सर्व व्यवहार;
अन्तर सुरता अन्तर रहेती, लय लागी निर्धार;
उलटी आंखे देख्युंरे, कदी न जायो हुं आयो. समाधि. २
जन्म मरण नहि मुजने जाण्युं, निश्चयनयथी बेश;
कर्मलगी व्यवहारदशा छे, आनंद ध्याने हमेश;
सिद्ध बुद्ध स्वामीरे, दया गंग घट न्हायो. समाधि. ३
त्रिपुटी काशीनी अंदर, निर्मल आतम ज्योत;
आतम शंकर महादेवजी, देखंतां उद्योत;
मनना मेळा मळीयारे, आनंद रोम रोम छायो. समाधि. ४
जाण्युं अनुभव्युं मन निश्चय, हुं आनंद स्वरूप;
समभावे अन्तरमां खेलुं, नावे भवभय धूप;
क्षयोपशमना ध्यानेरे, बुद्धिसागर घट आयो. समाधि. ५

१०६

सदाचार.

छप्पय छंद.

सदाचारथी उच्च खरेखर सर्वे थावे,
सदाचार वण उच्च जाति पण नीच कहावे;
सदाचारथी नीच जनो पण उच्च विचारो,
सदाचार वण धर्म खरेखर ढोंग ज धारो;
सदाचार त्यां धर्म साचो समजशो समज्ञ जनो,
अशुभ आचारो तजी झट सदाचारी झट बनो. १
सदाचार वण सन्त न शोभे ज्ञानी ध्यानी,
सदाचार वण प्रभुपूजा पण कर्मनिशानी;
सदाचार वण ज्ञातिवंश ने कूळ न शोभे,
सदाचार वण दुष्ट विचारो कदी न थोभे;
सदाचारथी जाणशो अहो जगत्मां कीर्ति खरी,
सदाचारथी योग्य पुरुषे शर्मलीला घट वरी. २
सदाचार वण पोपट सम अहो विद्या परखो,
सदाचारिजन देखी भव्यो मनमां हरखो;
सदाचारिनुं ज्ञान खरेखर समजो साचुं,
सदाचार वण ज्ञान खरेखर समजो काचुं;
धामधूम पण सदाचार वण शोभती नहीं छे जरा,
सदाचारने पाळता जन धन्य जगमां अवतर्या; ३
सदाचार वण धर्म क्रियाथी ढोंग जणातो,
सदाचार वण ढोंगी अरे दुर्गतिमां जातो;
सदाचार वण शेठ न शोभे वेठ बरोबर,
सदाचार वण सन्त न शोभे जगमां दुःखहर;

सदाचार वण पोपलीला जगत्‌मां प्रसरी रही,
धामधूमे मूर्ख राच्या सदाचार वण सुख नहीं. ४
सदाचार वण नगर शेठिया नीच कहाया,
सदाचार वण धामधूममां ढोग कहाया;
सदाचार वण भक्ति नकामी शुष्क विचारो,
टीलांटपकां करो हजारो पण नहि आरो;
सदाचारथी उच्च थाता जगत्‌मां सहु जन अहो,
बुद्धिसागर सदाचारमां भव्य जन राची रहो. ५

नगरशेठ पुत्रो.

छप्पय छंद.

नगरशेठना पुत्र थइ केइ धर्म न पाळे,
नाम मोटुं पण दर्शन भूंडुं शुं अजुवाळे;
नगरशेठना पुत्र अहो केइ कूतर पाळे,
कूतर संगी जन्मी खरेखर सत्य न भाळे;
ढोंगी जनथी प्रेम करता छेल छबीला थइ फरे,
श्वान सरखी हिंमत नहि मन वायला केइ अवतरे. १
धर्म क्रियाने व्हेम कहीने कांइ न करता,
नहि देशनी दाझ लाजवण ज्यां त्यां फरता;
साधु गुरुनी पासे जातां बहु शरमाता,
परनारी वेश्याना संगे मन मकलाता;

जनक जननी नमन करे नहीं ठाठमाठमां रत रहे,
धर्म कर्मनी समज नाहि अरे धर्म करणी शुं लहे. २
दारूमां बेभान रहे मन आव्युं बोले,
नहि प्रभुपर प्रेम खरेखर टका तोले;
लोक लाजथी धर्म करे छे सत्य न धारे,
नहीं धर्मनी दाझ घरणीने भारे मारे;
धामधूममां ढळी पडे छे सदाचारने परिहरे,
प्रभु उपर नाहि प्रेम किंचित् जन्मीने ते शुं करे. ३
नगरशेठना पुत्र अहो केइ धर्म करे छे,
नगरशेठना पुत्र अहो केइ सुख वरे छे;
नगरशेठना पुत्र अहो केइ धर्म सुणे छे,
नगरशेठना पुत्र अहो केइ ज्ञान भणे छे;
नगरशेठना पुत्र सारा कीर्ति तेनी सहु करे,
सदाचारमां मग्न रहेवे धर्मनी सिद्धि वरे. ४
साधु गुरुने वंदन करता भाव धरीने,
धर्म झनून धरे बेश हृदयमां सत्य वरीने;
करे धर्मिजन स्हाय संग सारानो राखे,
धर्म टेक धरी बेश अनुभव अमृत चाखे;
धन्य धन्य अहो ते जगत्मां श्रेष्ठ पुत्रो जाणीए,
बुद्धिसागर योग्य न्यायी धर्मी भव्य वखाणीए. ५



आत्मशक्ति खीलववी.

म्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

खरेखर शक्ति अनंति चेतननी वखणायछेरे,
ध्यानथी शक्ति अनंति अंश अंश प्रगटायछेरे;
आत्मज्ञानथी ध्यान धरो घट, अनुभव अमृत स्वाद लहो झट;
आत्मनुं सुख अनंतु ध्यान विना न जणायछेरे, खरेखर. १
बाह्यदृष्टिथी बाह्य घसो छे, आत्मदृष्टिथी मांह्य वसोछो;
दृष्टि जेवी तेवा मानव थायछेरे, खरेखर. २
रत्नत्रयीनो धर्म खरो छे, अनुभवीए मनमांहि वर्यो छे;
रत्नत्रयी वण कूलाचार गणायछेरे, खरेखर. ३
बाह्य क्रियाथी केईक राच्या, साध्य शून्य थई केईक माच्या;
आत्मज्ञानवण सत्य अरे न ग्रहायछेरे, खरेखर. ४
आत्मज्ञानथी शक्ति प्रकाशे, आनन्दमय जीवन झट भासे;
जिनपद निजपदनो त्यां ऐक्यभाव वर्तायछेरे, खरेखर. ५
जे जाणे तेने छे प्रीति, आत्मज्ञानथी जाय अनीति;
प्रेमे बुद्धिसागर शाश्वत सुख प्रकलायछेरे. खरेखर. ६

दुःख समयमां समता.

म्हाला वीर जिनेश्वर–ए, राग.

अरे जीव दुःख समयमां समता मनमां धारजेरे,
दुःखनुं कारण जाणी मूळथी तेह निवारजेरे;

यश अपयशमां चित्त न देशो, सम्यग्दृष्टि निज घर रहेशो;
परम धन अन्तरनुं छे तेने सख विचारजेरे. अरे जीव १
संकट समये सत्य न चूको, हिंमत धारी धर्म न मूको;
आत्म धर्ममां मनडुं प्रेमे ठारजेरे, अरे जीव. २
कोइक निंदे देवे गाळो, करीश नहि निन्दानो चाळो;
अन्तर चेतन शक्ति पामीने नहि हारजेरे. अरे जीव. ३
दुःख समय पण उत्सव सरखो, खरी कसोटीए मन परखो;
दुनिया दीवानीनुं बोल्युं नव संभारजेरे. अरे जीव. ४
आत्मधर्मनी खरी कमाणी, आत्मधर्मनी सत्यज ल्हाणी;
चेतन धामधूमथी मनडुं पाछुं वाळजेरे. अरे जीव. ५
स्थिरोपयोगे अन्तर समजे, पुद्गलमांहि कदी न रमजे.
प्रेमे शुद्ध समाधि बुद्धिसागर धारजेरे. अरे जीव. ६

सुखनी शोध.

म्हालो वीर जिनेश्वर—ए राग.

सुखना माटे दुनिया ज्यां त्यां बहु भटकायछेरे,
खरेखर आत्मधर्म वण स्थिरता लेश न पायछेरे;
वर्ण गंधमय पुद्गल शोध्युं, नित्य सुख पण त्यां नहि बोध्युं;
खरेखर निद्रावस्थामांहि जन भटकायछेरे. सुखना. १
धामधूमना बहु तमासा, क्षणिक सुखना त्यां छे वासा;
दुःखनी पाछळ दुःखो एक पछी एक आयछेरे, सुखना. २

धीरवीर धारे नहि ममता, सम विषममां धारे समता;
चेतन चेतनभावे जडमां जडत्व ग्रहायछेरे, सुखना. ३
समनिस्सरणिथी शिव महेले, चढतां अनहद आनंद रले;
शुद्ध समाधि चेतन घर परखायछेरे, सुखना. ४
पुद्गलमां छे दुःखना दरिया, अनंत सुख चेतनमां भरिया;
मेमे बुद्धिसागर परमानन्द हृदयमां ग्रहायछेरे, सुखना. ५



परोपकार.

छप्पय छंद.

प्राण लक्ष्मीने सत्ताथी उपकार भलेरो,
धन्य धन्य उपकारीनो जगमांहि चेरो;
सूर्य चंद्र घन पृथ्वी सरखो उपकारी जन,
दुःख पडे पण उपकृतिने धरशो सज्जन;
तृणथकी पण तुच्छ मानुं अनुपकारी जन अरे,
तृण रक्षण करे पशुनुं भीरु जननुं जग खरे. १
आत्मार्थ तो सर्व जनो जगमांहि जीवे छे,
आत्मार्थ तो सर्व जीवो शीत नीर पीवे छे;
परोपकारे जीव्यो ते जगमांहि वखाणुं,
अनुपकारी पामर जीवन लेश न जाणुं;
उपकृतिथी शून्य जीवनुं जीवन निष्फल जाणवुं,
समजीने अरे भव्य जीवो साचुं मनमां आणवुं. २

चर्म वडे उपकार करे ते पशुओ सारा,
करे नहि उपकार जगत्मां तेह नठारा,
मनः वचनने काया शोभे परोपकारे,
स्वार्थ विषे जे लीन तरे शुं परने तारे;
परोपकारे जीवन जातुं उच्च तेने मानीए,
स्वार्थ लंपट मूड जननो जन्म फोकट जाणीए. ३
वित्त छतां पण दान न आपे ते जन पापी,
शक्ति छतां पण स्हाय न आवे व्यर्थ विलापी;
खाय नाहि ने खावा नाहि आपे ते खोटो,
उपकृति वण जाणो परभव नक्की तोटो;
नदी वृक्षने सज्जनोनो धन्य धन्य अवतार छे,
धन्य धन्य उपकारी जगमां जीवन जयजयकार छे. ४
परोपकारी आप तरे ने परने तारे,
परोपकारीनो यश जगमां वर्ते भारे;
परोपकारी निर्धन पण जगमां छे डाह्यो,
परोपकारी सन्त खरेखर विश्व गणायो;
उपकृति कृत सन्त शूरा दान शूरा जयकरा,
बुद्धिसागर परोपकारी सन्त साचा अवतर्या. ५

धीर प्रशंसा.

छप्पय छंद.

धन्य धन्य नर तेह विपद्मां धीरता धारे,
रही तटस्थस्वभाव शोकने हर्ष निवारे;

चळे सूर्यने मेरु गिरि पण धीर न चळतो,
संकट पडे हजार कदी नहि पाछो वळतो;
धैर्य धारी धीर पुरुषो कार्य सिद्धिज झट करे,
साहसगुणने खीलवता मन कदी नहि पाछा फरे. १

निंदे निंदक लोक शत्रुओ पूंठ न मूके,
तोपण तजे न टेक धीरता धीर न चूके;
विघ्न थाय कई लाख राख तेनी ते करतो,
धरे सिंहनी वृत्ति अन्यने नहि करगरतो;
लक्ष्मी जाओ के रहो पण धीर धैर्यथी नहि चळे,
धन्य धन्य ते धीर जगमां परोपकारे पग भरे. २

धन्य धन्य ते धीर जगत्‌मां परोपकारी,
लजवी जननी कूख धीरता लेश न धारी;
धर्म कृत्यमां धीर खरेखर ते अवतारी,
समजी धीरता गुण धरो मन नरने नारी;
धन्य धन्य ते धीर जनने मोक्ष नगरी संचरे,
सदाचरणने धरी जगत्‌मां कीर्ति कमळा कर वरे. ३

धैर्य धरे ते शिव नगरी जावानो पहेलो,
धैर्य सद्गुण सत्य खीलववो ते नहि स्हेलो;
सत्ता लक्ष्मी धीर वरे छे जगमां जोशो,
धीर जनोनुं धैर्य सुणीने सद्गुण लेशो;
धैर्य सद्‌गुण खीलवीने धर्म कृत्यो बहु करो,
धर्म अर्थने काम लक्ष्मी चार वर्गो सुख वरो. ४

अधोमुख यदि वन्हि करो पण शिखा ज उंची,
धैर्यवृत्ति कदी दुःख पडे पण थाय न नीची;

धैर्य वृत्तिने खीलववाथी धैर्य सवाया,
धीर जगत्मां धन्य खरेखर कृत्यथी डाह्या;
धैर्यतानुं अतुल वर्णन अनुभवीए अनुभव्युं,
बुद्धिसागर धन्य साचुं धैर्य फळ मनमां लह्युं. ९

सतपुत्रप्रशंसा

छप्पय छंद.

सत्य पुत्र ते धन्य जगत्मां सद्गुण धारी,
मात पिताने नमन करे छे प्रेम वधारी;
भाइ बेननी साथ प्रेमथी संपी चाले,
केळवणीनी रीति लहीने सुखमां म्हाले;
उचित विनयने साचवीने जगत्मां उन्नत रहे,
पर प्रियाने बेन जाणे वाणीथी साचुं कहे. १
लडे नहि कोइ साथ विचारी वाणी बोले,
सत्य असत्य जे वात न्यायथी तेने तोले;
ब्रह्मचर्यने धरी वपुने पुष्ट करे छे,
धरी पूर्ण उत्साह कार्यनी सिद्धि वरे छे;
सगां संबंधी स्नेह धारे लडे नहि समता धरे,
मात पितानी भक्ति करीने उच्च शाश्वत पद वरे. २
न्याय नीतिथी करे कमाणी पाप निवारी,
धर्मसूत्र अभ्यास करे छे न्याय विचारी.
मोटा जननो विनय करीने संप वधारे,

धरी भावना चार कर्मना फन्द निवारे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे गृहिधर्मने आदरे,
अचळ श्रद्धा अचळ भक्ति धर्मनी लही सुखवरे. ३
धरे प्रभु पर प्रेम गुरुनी भक्ति करे छे,
सदाचारथी पाछो अरे ते नहि फरे छे;
सत्य सुधारा करे कुधारा दूर करीने,
प्रभु आज्ञानो लोप करे नहि प्रेम धरीने;
सत्य प्रभुनो धर्म पाळे सत् क्रियाओ सहु करे,
कलेश कजीया परिहरीने धर्म रीति दिल धरे. ४
करी शक्तिनो तोल बलाबल कार्य करे छे,
आत्मिकशुद्धस्वभाव दृष्टिथी शर्म वहे छे;
वंदे गुरुना पाय गुरुनी आज्ञा पाळे
करी धर्म अभ्यास दोषना वृन्दने वाळे;
धन्य धन्य ते पुत्र सारा जननी कुखे अवतर्या,
बुद्धिसागर अनेकान्तनयज्ञानपाथोधि भर्या. ५



पितृलक्षण.

छप्पय छंद.

करे कुंटुंब प्रतिपाल न्यायथी वित्त वधारे,
करे सुधारा बेश कुधारा दूर निवारे;
दया सत्य धरी चित्त शक्तिनो तोल करे छे,
उच्चभाव धरी बेश अनीति दोष हरे छे;

धरे धर्मपर प्रीतिरीतिने दुःखिजननां दुःख हरे,
धन्य धन्य ते जनक जगमां कीर्ति कमळा कर वरे. १

पुत्र पुत्रीपर प्रेम धरीने शिक्षा आपे,
केळवणी दे्इ सत्यपुत्रनां दुःखडां कापे;
धार्मिक विद्या सत्य अपावे गुरुनी पासे,
आपी विद्यादान प्राणिनां हृदय विकासे;
सगां संबंधी साचवेने देश अभ्युदय करे,
गरीब जनने स्हाय आपी दुःख मळथी उद्धरे. २

परस्त्रियाने वेश्यासंगथी दूर रहेछे,
लक्ष्मी जाय ने दुःख पडे पण सत्य कहेछे;
लाभालाभ विचारी सर्वे कार्य करेछे,
समभावे सहु कर्म भोगवी शर्म वरेछे;
धर्म अर्थने काम मोक्षज वर्ग चारे आदरे,
धर्म श्रद्धा अचळ धारी उच्चचेतन झट करे. ३

खर्च नकामां करे नहि धन नाश करीने,
धामधूममां धर्म न धारे सत्य वरीने;
रत्नत्रयीमां धर्म खरेखर चित्त विचारे,
गुरुवचनविश्वास भक्तिथी धर्म वधारे;
सत्य धर्मनो तोल करीने बोल पाळे टेकथी,
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे वर्ततोज विवेकथी. ४

योग्यकाळे जे योग्य जाणे ते आदरतो नित्य,
योग्य नीतिथी ग्रहण करेछुं जाणे शुभवित्त;
करे पुण्यनां कृत्य पापनां परिहरे छे,
विवेक दृष्ट्या सत्य ग्रहीने धर्म धरे छे;

पिताना जे योग्य धर्मो साचवे संपद्वरे,
बुद्धिसागर जनक साचा सत्य करणी जग करे. ५



जननी प्रशंसा.

छप्पय छंद.

माता ते कहेवाय प्रजानुं पालन करती,
पुत्र पुत्री पर प्यार धर्म निज सहु अनुसरती;
करे न कजीया क्लेश द्वेष नहि धारे मनमां,
पतिव्रता व्रत धरे सदा गुणकारी तनमां;
आवक देशने काळ जाणी खर्च करती विवेकथी,
भणे भणावे पुत्र पुत्रीओ वर्तती शुभ टेकथी. १

पति आज्ञा धरे शिर विचारी वाणी बोले,
हिताहित जे कार्य विचारी सत्यज तोले;
क्षण क्षण करे न क्रोध बोध बाळकने आपे,
दुखी जनने स्हाय करी दुःखडांने कापे;
धर्म उपर सत्य श्रद्धा गुरुदेव भक्ति करे,
कुटुंबनो निर्वाह करती अशुभ स्थाने नहि फरे. २

करे पतिने स्हाय सुधारा शास्त्राधारे,
मीठा बोले बोल कदि नहि जीवने मारे;
संकटमां धरे धैर्य आळ पण आव्युं सहती,
कर्म करे ते थाय विचारी समता वहती,

धर्म अर्थने काम मोक्षनी चीवट राखे चोगणी,
सत् कथाओ करे सदा ते जननी छे सोहामणी. ३
सगां संबंधी साथ संपथी निशदिन चाले,
अवसरनी बहु जाण शुभाशुभ कार्य निहाळे;
नवरी रहे न वेश वेष धारे गुणकारी,
गंभीरता धरे दिल वहे जे शुभ हुंशियारी;
धर्म करतां धाड आवे तोपण धर्म न त्यागती,
देवगुरुने नमन करती रात्री वहेली जागती. ४
द्विधा केळवणी वेश बाळकने प्रेमे आपे,
सदाचार धरे वेश प्रजानुं संकट कापे;
करे दया उपकार संपीली सहुनी साथे,
सत्य प्रभु विश्वास धरे आज्ञा निज माथे;
धन्य धन्य ते जननी जगमां स्वपर हित करती रहे,
बुद्धिसागर जननी शिक्षा पामी सर्वे सुख लहे. ५

पुत्री प्रशंसा.

छप्पय छंद.

पुत्री ते कहेवाय धर्मनी श्रद्धा धारे,
जननी शिख धरे चित्त नीतिपर प्रेम वधारे;
देशकाळ निज धर्म विचारी वेष धरे छे,
अपकीर्ति नाहि थाय योग्य ते स्थान फरे छे;
बहुविध केळवणी लहीने उन्नति करे आपनी,
उपकृतिने चित्त आणी भक्ति करे मावापनी. १

भणेगणे देइ चित्त रडे नहि क्लेश करीने,
संपी रहे सहु साथ हृदयमां सत्य धरीने;
सर्व साहेली साथ प्रेमथी वर्ते निशदिन,
सद्‌वाचारमय अंग सुजनता जेना छे मन;
सर्व जीवनुं भव्य इच्छे दया हृदयमां धारती,
यतनाथी सहु कार्य करती त्रसजीवो नहि मारती. २
धार्मिक विद्या धरे हृदयमां श्रद्धा राखे,
मातपिता गुरु देव विनयथी शिवसुख चाखे;
विकथानो करी त्याग क्लेशमां कदी न पडती,
करे दान बहु रीत करे निज धर्मनी चडती;
शियल धारे धैर्यधारी सर्व विद्या जाणती,
सर्व दोषो परिहरीने धर्म उत्साह आणती. ३
कुटुंब जातिने देशतणुं जे भव्य विचारे,
दीपावे कूळवंश सर्वनुं दुःख निवारे;
नीतिथी सहु उच्चसूत्र ते साचुं धारे,
दुःखिजन उद्धार करे छे निजने तारे;
धर्म सेवा साचवेने जननी आज्ञा पाळती,
अशुभ विचारो प्रगटे तेने धैर्यथी झट टाळती. ४
घरनां करती कार्य धर्मनां तत्त्व विचारे,
यथाशक्ति अनुसार सन्तनी सेवा सारे;
लडे नहि कोइ साथ हृदयमां समता राखे,
सत्य तत्त्व स्याद्वाद भणीने अनुभव चाखे;
धन्य पुत्री जगत्‌मां जे धर्म कृत्यो बहु करे,
बुद्धिसागर शुभ विनयथी जगत्‌मां सुखडां वरे. ५



१२०
मित्रप्रशंसा

छप्पय छंद.

मित्र खरेखर तेह दुःखमां साह्य करे छे,
मित्र खरेखर तेह सुजनता चित्त धरे छे;
मित्र खरेखर तेह विपद्मां दूर न रहेतो,
मित्र खरेखर तेह सदा जे साचुं कहेतो;
मित्र खरेखर जाणीए ते धर्म विद्या आपतो,
दोष बुद्धि टाळीने जे दुःखवल्लि कापतो. १

गुह्य मित्रनी वात कोइनी अग्र न कहेवे,
करे मित्र गुण प्रकट वित्तने अवसर देवे;
देशकाळ अनुमान मित्रनुं भव्य विचारे,
स्वार्थ तजीने मित्रपणामां निजमन ठारे;
सूक्ष्म बुद्धि वापरीने भलुं करे छे मित्रनुं,
हाजीहाना मित्र खोटा शुं कहुं रे विचित्रनुं. २

वात वातमां लडी पडी ते मित्र न साचा,
निन्दा करता अन्यनी आगळ ते जन काचा;
स्वार्थ धरी मित्राइ करे ते मित्र न होवे,
खरा प्रेमथी मित्र करे ते सुखज जोवे;
मित्र हक ने साचवीने उच्च कृत्यो जे करे,
परोपकारे रक्त रहेवें मित्र एवा भवतरे. ३

सदाचरणमां प्रेम नेम छे सारा माटे,
व्हेम अनीति त्याग करे जे शिवपुर वाटे;
व्रत धरे छे वेश कलेशथी दूर रहे छे,
सज्जन एवा मित्र उदयनुं चिन्ह लहेछे;

मित्र सद्गुण धारतो मन उच्च जीवन गाळतो,
बुद्धिसागर मित्र सज्जन सर्वनां दुःख टाळतो. ४

हितवचन.

छप्पय–छंद.

करो क्रियानुं कष्ट ज्ञान वण धर्म न परखो,
उपर उपरनी शून्य क्रियाथी लेश न हरखो;
अन्तरना उपयोग विना नहि कर्म टळे छे,
अन्तरना उपयोग विना नहि मुक्ति मळे छे;
माळा मणका फेरवो पण ज्ञान विना नहि मुक्ति छे,
आत्मज्ञाने सहज शांति ध्याननी त्यां युक्ति छे. १
पूजानां पाखंड करो पण सुख न मळशे,
टीलां टपकां करे अरे कंई कर्म न टळशे;
मननी स्थिरता थया विना सुखडां नहि पावे,
बाह्य वेशने क्रिया कपटथी धर्म न थावे;
अन्तरमां यदि धर्म छे तो बाह्य क्लेशे शुं थयुं,
अन्तरमां यदि धर्म नहि तो बाह्य क्लेशे शुं रह्युं. २
सम्यग् नहि आत्मार्थपणुं तो मौन रहे शुं,
सम्यग् यदि आत्मार्थपणुं तो वचन वदे शुं;
हृदय सरळ नहि यदि तदा तो क्रिया करे शुं,
हृदय सरळ यदि नित्य सदा तो क्रिया करे शुं;
धर्म धार्यो नहि हृदय तो ढोर हरायां सम गणो,
जाण्युं तो केम भटकवुं अरे तत्त्व विद्या द्विज भणो. ३

गुरु गुरु करी बहु भटक्याथी पार न आवे,
गुरु मळ्या यदि आत्मज्ञानी तो अन्य न जावे;
जाण्युं जो यदि आत्मरूप तो तीर्थ न रहेतुं,
जाण्युं यदिहि आत्मतत्त्व तो शिव सुख वहेतुं;
समानदृष्टि सर्व जीव पर आनंद उभरा घट अहो,
बुद्धिसागर समजे ज्ञानी तत्त्वमां निर्भय रहो. ४

धर्मभेद

छप्पय छंद.

धर्म भेदमां खेद घणो छे विना विचारे,
धर्म भेदमां वसी पड्या केइ कर्म वधारे;
दया धर्मथी दूर रहीने पक्ष ज ताणे,
अनेकान्तनयवस्तु विचारे सत्य ज जाणे;
म्हारु र्‍हारु करी घणा जन क्लेश कजीया बहु करे,
युक्तिथी निज पक्ष ताणी हठ कदाग्रह मन धरे. १
सत्ता तर्कनी शक्ति विशेषे पक्ष सबळ छे,
सत्ता तर्कनी शक्ति अभावे पक्ष अबळ छे;
उदय जेहनो ते जन फावे पक्ष वधारे,
जळ तरंगो पेठे कोइ न कार्य सुधारे;
जन्म्या त्यारें कंइ नहिने भण्या गण्याथी मत पड्या,
ज्ञाननो नहि दोष तेमां मोह योगे लडथड्या. २
जे जे पासे जइ पुछो ते कहे निज साचुं,
बाकीनुं सहु जूठ बतावे छे बहु काचुं;

आप आपनो पक्ष वधारे मत रंगाणा,
तर्क शक्ति अनुसार करे छे ताणंताणा;
हठ कदाग्रह पोषवाने अन्य दोषो उच्चरे,
भाषानो बहु डोळ राखे कोइक साचुं अनुसरे. ३
बाह्य क्रियाना भेद अनेको नजर पडे छे,
करीने ताणंताण अन्यने बहु कनडे छे;
साधनयोगो बाधक रूपे करता प्राणी,
आत्मधर्मनी वात हृदयमां लेश न आणी;
हेय वातो आदरे छे उपादेयने त्यागता,
अनुभवामृत परिहरीने मोह भिक्षा मागता. ४
एक एकनो पक्ष उथापे मनमां माचे,
धामधूममां धसी पडीने मन बहु नाचे;
अनेकान्तनय पक्ष विचार्या वण सहु भूल्या,
समता राख्या विना जगत्मां सहु जन झूल्या.
सापेक्षदृष्टि मन रहे तो पक्षपात हणाय छे,
बुद्धिसागर नय अपेक्षा समजुने समजाय छे; ५

दयाभाव.

छप्पय छंद.

दयाभाव नहि चित्त अरे ते क्यांथीज उंचो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते निशदिन नीचो;
दयाभाव नहि हृदय अरे धर्मीज शानो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते मूढ पिछानो;

टीलां टपका बहु करे ने प्राणी अंगो कापतो,
धर्म ढोंगी कदी न निर्मल दुःख जीवने आपतो. १
प्रभु दर्शननी होंश धरे पण जूठ न मूके,
नाम प्रभुनुं मुखथी बोले गुणथी चूके;
घंट वगाडे प्रभु भजनमां कपट न त्यागे,
दुःखी उपर नहि दया तो दूरज भागे;
भलुं करे नहि अन्यनुं लव भक्त नामे शुं थयुं,
रासभ उपर रत्न पोठी ज्ञानवण त्यां शुं रह्युं. २
ओ इश्वर तुं तार प्रार्थना मुखथी बोले,
पशु पक्षीनां रक्त पीवे ते राक्षस तोले।
सर्व जीवनो नाश करीने हिंसक थावे,
ओ इश्वर तुं तार मुखथी जूठ जगावे;
प्रार्थना प्रभुनी करे बहु पाप कृत्यो बहु करे,
इश तेने केम तारे नरकमां ते अवतरे. ३
दया दया पोकार्याथी भाइ कांइ न वळतुं,
दया कर्या वण पाप कर्म तो लेश न टळतुं;
सर्व जीवनी दया करे ते धर्मी विचारो,
मनथी पण कोइ जीव न मारे धर्मी सुधारो;
दया भावथी जगत् सघळुं कुटुंब भासे छे अहो,
बुद्धिसागर दया विचारो धर्मथी शिवसुख लहो. ४



२५

भलुं करनार.

छप्पय छंद.

भलुं करे ते भक्त जगत्मां संपत् पामे,
भलुं करे ते भव्य जगत्मां ठरतो ठामे;
भलुं करे ते नदी चंद्र सम जगमां प्यारो,
भलुं करे ते सुजन अन्य सहु दुर्जन धारो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते धर्मी साचो जाणशो,
धर्म झघडा जे करे ते भला न जगमां आणशो. १

भलुं सर्व करनार दयाथी मन उभरातो,
भलुं सर्व करनार खरेखर उत्तम थातो;
भलुं सर्व करनार खरेखर पूज्य गणातो,
भलुं सर्व करनार भक्तमां मुख्य भणातो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते उच्च जाति विचारीए,
भलुं कर्यामां भाव साचो राखी चेतन तारीए. २

दुःखि जीवनुं भलुं करे नहि ते केम धर्मी,
सर्व जीवनी घात करे ते होय अधर्मी;
मुख थकी प्रभु नाम रटेने मनमां कातो,
स्नान करे शतवार पापमय वर्ते छातो;
भलुं करे शुं अधमजीवो नास्तिको भवमां भमे,
पापमां सहु जीवन जातुं रौरव दुःखडां ते खमे. ३

भलुं करे ते जीव जगत्मां जन्म्यो सारो,
भलुं कर्या वण जीव जगत्मां जाण नठारो;
धिक् तेनो अवतार स्वात्म पर भलुं न कीधुं,
धिक् तेनो अवतार जन्मीने सत्य न लीधुं;

धन्य धन्य ते नर जगत्मां भलुं करे शुभ टेकथी,
बुद्धिसागर धन्य मानव वर्ते जेह विवेकथी. ४

उत्तमजाति

छप्पय छंद.

उत्तम तेनी जात मधुरी वाणी बोले,
उत्तम तेनी जाति अन्यनां मर्म न खोले;
उत्तम तेनी जात पडया पर पाद न मारे,
उत्तम तेनी जात बोलीने कदी न हारे;
जाति उत्तम ते जनोनी दोषीना दोषो हरे,
अभक्ष्यनुं भक्षण करे नहि स्वार्थ माया परिहरे. १
उत्तम तेनी जाति दीनता दिल न राखे,
परनी निंदा कलंक वचनो कदी न भाखे;
उत्तम तेनी जात अन्यने दुःख न आपे,
उत्तम तेनी जात प्राणिनां अंग न कापे;
सत् क्रियामां शूर रहेवे अशुभ वर्तन परिहरे,
नीचने पण उच्च करतो दया हृदयमां बहु धरे. २
उत्तम तेनी जाति कोइने गाळ न देवे,
उत्तम तेनी जाति गुरुनां पदकज सेवे;
उत्तम तेनी जाति न्यायथी वृत्ति चलावे,
उत्तम तेनी जात परस्त्री संग न जावे;
मांस दारु परिहरीने उच्च वर्त्तन धारतो,
गरीब जनने स्हाय आपी दुःखथी उद्धारतो. ३

दुर्जननुं पण दया भावथी भव्य विचारे,
स्वार्थ धरीने अन्य जीवोने कदी न मारे;
बोले निशदिन सत्य चोरीथी दूर रहे छे,
उत्तम तेनी जाति भावना उच्च लहे छे;
प्रभु गुरुनी भक्ति करतो चिदानंद राजी रहे,
बुद्धिसागर जाति उत्तम सदाचरण ज्ञाने वहे. ४

गुरुनिन्दा.

छप्पय छंद.

गुरू निन्दाथी नाश कूळनो प्रथम विचारो,
गुरू निन्दाथी मूढ बन्या केइ दिलमां धारो;
गुरू निन्दाथी वित्त विनाशे ज्ञान न प्रगटे,
गुरुनिन्दाथी उच्चमति पण क्षणमां विघटे;
सद्गुरु निंदक जनोनुं चित्त ठामे नहि ठरे,
नीचमां पण नीच निंदक चतुर्गतिमां अवतरे. १
गुरू निंदा करनार बुडे ने अन्य बुडाडे,
गुरू निंदा करनार भमे ने अन्य भमाडे;
गुरू निन्दा करनार पापनो पुंज ग्रहे छे,
गुरू निन्दा करनार दुःखना दीन लहे छे;
गुरू निन्दा करनारनुं अहो पाप जीवन जाय छे,
उपकार घातक जाय भवमां भटकीने दुःख पाय छे. २
गुरू निन्दा करनार खरेखर अधम कह्यो छे,
गुरू निन्दा करनार खरेखर दुःख लह्यो छे;

गुरू निन्दा करनार थकी इश्वर छे आघा,
गुरू निन्दा करनार थकी उत्तम छे ढाघा;
गुरुनी निंदा पाप मोटुं गुरू भजीने वारीए,
बुद्धिसागर सत्य समजी उच्च सद्गुण धारीए. ३

कलंक पाप.

छप्पय छंद.

आळ चढावे जेह अधम नर पापी पूरो,
धरे साधुनो वेष तोय पण पाप सनुरो;
परने देतां आळ अन्यना प्राणज लीधा,
परने देतां आळ पापमय प्याला पीधा;
परने आळ चढाववाथी घातकी नर घोर छे,
पर पोतानुं कार्य बगडे जगत्मां महा चोर छे. १
परने आळ चढावे ते नर परभव दुःखी,
परने आळ चढावे ते जन थाय न सुखी;
आळ चढावे जे जन तेनुं मुखडुं काळुं,
आळ चढावे ते जन साचुं द्रुम कंटाळुं;
रीस इर्ष्या लोभथी अहो कलंक जेह चढावतो,
वावे तेवुं लणे ते न्याये करणी परभव पावतो. २
कळंक चढावे पापभोगी ते खूब नठारो,
आळ चढावी पामे नहि अंते भव आरो;
कसाई जेवो कलंक चढावे ते नर होवे,
परना प्राण हरे ने वळी ते निजना खोवे;

आळ देतां जे न अटके तेह पापी जाणवो,
कर्म आधीन जीव जाणी दयाभाव मन आणवो. ३
कलंक चढावे तेमां सघळा दोष प्रवेशे,
कलंक चढावे ते जन ठरीने ठाम न बेसे;
धिक तेनो अवतार कलंक चढावे बुरु,
धिक् तेनो अवतार दोषनुं घर छे पुरु;
कलंक दाता दुःख पामे जाणी दोषज्ञ परिहरो,
बुद्धिसागर सत्य समजी मोहपाथोधिं तरो. ४



सहुनुं सारुं इच्छो.

छप्पय छंद.

इच्छो सहुनुं वेश द्वेष मनमांथी काढी,
इच्छो सहुनुं भव्य वैरनी वह्नि वाढी;
सर्व जीवो मुज मित्र चित्र तेमां शुं देखुं,
जेवुं मारुं इष्ट तेवुं हुं सहुनुं लेखुं;
सारु इच्छो सर्वनुं मन चित्त शुद्धि उपाय छे,
सारु इच्छे सारु थाशे मलीन बुद्धि जाय छे. १
शुभ इच्छक जन उच्च विचारे धर्म वरे छे,
शुभ इच्छक जन भव्य मोहाब्धि शिघ्र तरे छे;
शुभेच्छक जन आप तरेनें परने तारे,
उच्च नीचनो भेदभाव सहु दूर निवारे;
भलुं करंतां अन्य जननुं कठीण कर्म हणाय छे,
प्रेम भक्ति खीलवणी शुभ धर्म मर्म जणाय छे. २

सहुनुं सारु इच्छे ते जन सन्त मजानो,
सूर्य किरणवत् कदी न रहेशे ते जग छानो;
सहुनुं सारु इच्छे नहि ते शानो साधु,
ढोंगी जनोए समज्या वण जग फोली खाधुं;
सहुनुं सारु इच्छवाथी परम प्रभुपद झट मळे,
सर्वनां दुःख टाळवामां द्वेष क्लेश इर्ष्या टळे; ३
सहुनुं सारु इच्छे तेनुंज सारु थाशे,
धर्मे जय पापे क्षय वाक्यज सत्य प्रकाशे;
सर्व शुभेच्छक त्रिभुवन पूज्य प्रतिष्ठा पामे,
सर्व शुभेच्छक जनने जग जन मस्तक नामे;
सर्व शुभेच्छक मनुष्य मोटो देवता पाये पडे,
सूर्य चंद्रने दृष्टि सरखो कोइ साथे नहि लडे. ४
सर्व शुभेच्छक थया विना नहि उच्च थवातुं,
दया धर्मनुं मूळ वाक्य पण अत्र ग्रहातुं;
सर्व शुभेच्छक सत्य प्रकाशे सत्यज बोले,
सर्व शुभेच्छक न्याय वधारी साचुंज तोळे;
परप्रियाने मात लेखे चिदानंद पद झट वरे,
बुद्धिसागर सारु थाशो सर्वनुं एम उच्चरे. ५

क्लेश न करवो.

छप्पय छंद.

क्लेश न करीए कुटुंब वर्गमां शिख मजानी,
क्लेश न करीए नात जातमां थईने मानी;

क्लेश न करीए पंडित साथे विद्या नावे,
क्लेश न करीए शिक्षक साथे सद्गुण जावे;
क्लेश करीए नहि कदि अरे मातपितानी साथमां,
जाणी शिक्षा धारशो तो सुख जीवन हाथमां. १
प्रिया साथे पण क्लेश न करीए लक्ष्मी टळे छे,
भाइ साथे पण क्लेश न करीए प्रीति गळे छे;
मित्र साथे पण क्लेश न करीए टळे विसामो,
सन्तनी साथे क्लेश करे पण दुःखडां पामो;
क्लेश दुःखनुं मूळ जाणी परिहरो शुभ टेकथी,
क्लेश जातां सहु टळ्युं अरे समजशो विवेकथी. २
जेना घरमां क्लेश थयो त्यां वित्त न रहेतुं,
क्लेशे धर्म विनाश क्लेशथी सुख न रहेतुं;
क्लेशे संप विनाश जंप पण क्यांथी होवे,
देश राज्यमां क्लेश प्रवेशे क्षयता जोवे;
धर्मना बहु पन्थमां जो क्लेश पेठो जो खरे,
वित्त सत्ताज्ञान नाशज लडीलडीने जन मरे. ३
क्लेश कर्याथी सुख टळे छे प्रगट विचारो,
क्लेश कर्याथी महाजन मंडल भेदज धारो;
क्लेश प्लेगथी महा हठीलो सहुने मारे,
द्वेष भूतडुं पेठुं ते जन सत्य न धारे;
क्लेश करे ते तुच्छ जगमां क्लेश टाळे दुःख टळ्युं,
बुद्धिसागर संप धरतां पूर्ण साश्वत सुख मळ्युं. ४



बाळलग्न.

छप्पय छंद.

हानिकारक रीति तजो अरे उन्नत थावा,
पडी कुटेवो परिहरो झट सत्य स्वभावा;
बाळलग्नने देशवटो द्यो वव्वना माटे,
बाळलग्नथी अवनति सहु अवळी वाटे;
बाळलग्नथी देशनी बहु पायमाली थइ अरे,
आर्य पुत्रो त्वरित जागो आदरो सद्गुण खरे. १

बाळलग्नथी संतानो निर्बळने रोगी,
बाळलग्न परिहार कर्याथी प्रजा निरोगी;
बाळलग्नथी वित्त हानिने धर्मनी हानि,
बाळलग्नथी लहे न विद्या सत्य मजानी;
रोग क्षय जे दुष्ट पापी बाळलग्नथी संपजे,
शरीर दुर्बळ तामसीमन समजीने सज्जन तजे. २

बाळलग्नथी कोम बायली धरे न हिंमत,
बाळलग्नथी मूर्ख कोमनी थाय न किंमत;
बाळलग्नथी कोम रांकडी वधे न आगळ,
बाळलग्नथी देश रांकडो रहेज पाछळ;
बाळलग्नथी बुद्धि हानि पवैयासम कोम छे,
बाळलग्न ते जाणजो अरे मनुष्य जाति होम छे. ३

बाळलग्नथी निर्वंशी थइ जे केइ मरिया,
बाळलग्नथी भण्या न केइक चिंता भरिया;
बाळलग्नथी केइक दुःखी विश्व जणाता,
बाळलग्नथी दोष अनेकज प्रगट भणाता;

बाळलग्नने कदी करो नहि सत्य शिक्षा मानशो,
बुद्धिसागर धैर्य धारी सत्य मनमां आणशो. ४

खंडमंडनमां सार नथी.

छप्पय छंद.

करो न वादंवाद धर्ममां क्लेश करीने,
नहि सत्यनो नाश कदापि दील धरीने;
बुद्धिवाळो जय मेळवतो जगमां देखो,
मिथ्या नाहक वाद कर्याथी सार न लेखो;
धर्म झघडो जे करे ते चित्त निर्मळ नहि करे,
बुद्धिसागर समजु समजे परमप्रभुता घट वरे. १
खंडनमंडनमां शुं पडवुं सत्यज कहेवुं,
खंडनमंडनमां शुं पडवुं सत्यज लेवुं,
अखंड व्यापक आत्मतत्त्वतो नहि खंडाशे,
परिपूर्ण स्याद्वाद ब्रह्म तो नहि छेदाशे;
अखंड आत्मस्वरूपमांहि आनंद अपरंपार छे,
नाम रूपथी भिन्न समजो अनुभवे जयकार छे. २
खंडनमंडन करतां कदी न सारु थाशे,
खंडनमंडन करतां कदी न सार ग्रहाशे;
खंडनमंडन मनना धर्मो परखी लेशो,
खंडनमांहि महाविकल्पो चित्त न देशो;
वाद मिथ्या परिहरीने धर्म विद्या आदरो,
बुद्धिसागर आत्मध्याने परमप्रभुता झट वरो. ३

१३४
हानिकारक रीवाजोनो त्याग करवो.

छप्पय छंद.

हानिकारक तजो रीवाजोने नरनारी,
खर्च नकामां करो अरे तेथी दुःख भारी;
नात जमणनां खर्च कर्याथी थाय न सारु,
दारुखानुं फोडयाथी अहो थाय नठारुं;
कीर्तिं माटे वित्त व्ययथी धूळधाणी थाय छे,
विना प्रयोजन वित्त व्ययथी देश जन लुंटाय छे ॥ १

खर्च नकामां करे अरे ते दुःख लहे छे,
जमण करी लखलुंट करीने प्राण वहे छे;
वरघोडानी धामधूममां धर्म न मळशे,
परोपकारे कांइ न खर्चे दुःखमां भळशे;
रमतगमतमां वित्त व्यय बहु करे अरे ते मूढ छे,
दुःखी जननी दया करे नहि मनडुं मोहे गूढ छे. ॥ २

एक छतां पण अन्य नारीने परणे प्रेमे,
बे नारीनो धणी दुःखी बहु रहे न क्षेमे;
करे जे वृद्धविवाह दुःखमां ललना नाखे,
करे जे वृद्धविवाह दुःखनां फळ बहु चाखे;
वस्त्रमां बहु वित्त व्ययथी चित्त चिंतातुर रहे,
चोर जननी कोठीमां मुख घाली रुवे शुं कहे. ॥ ३

आवक करतां खर्च करे बहु ते पस्तातो,
देवुं करीने जमण करे ते खत्ता खातो;
कन्याविक्रय पाप करे ते ठरे न ठामे,
फुलण पेठे फुली फरे ते शर्म न पामे;

वित्त सत्ता ज्ञान जेनुं परोपकारी नहि थयुं,
जननी भारे मारी जन्मी जीवन निष्फल सहु गयुं. ४
वेश्या नचवी करे धूमाडो धननो भारे,
वेश्या संगी तरे अरे केम परने तारे;
पदवी पुच्छो माटे धननो नाश करे छे,
परोपकारिधर्म विना नहि टाम ठरे छे;
रासभ उपर कस्तुरी घुण मूढ पासे धन अहो,
बुद्धिसागर सत्य समजी परोपकारी थइ रहो. ५

समाधि.

अजपा जापे सुरता चाली. ए राग.

सहस्रकमलदलपर श्री प्रभुजी, बेठा कृष्ण जिनवर देवा;
असंख्यप्रदेशे आसन पूर्युं, झळझळ ज्योतिनी सेवा. सहस्र. १
ब्रह्मरन्ध्रमां ब्रह्मानन्दी, उलटवाटथी चढी आयो;
हंसराम सुरता सीतानी, साथे सुखडां बहु पायो सहस्र. २
रत्नत्रयी लक्ष्मीनी साथे, चेतन विष्णु रमत रमे;
चौद भुवनना स्वामी साचा, अनुभवामृत खूब जमे. सहस्र. ३
पिंड अने ब्रह्मांड ऐक्यता, आतमभावना सर्व ठरी;
अनुभवानंद सागर प्रगटयो, उलट आंख देख्यो उतरी. सहस्र. ४
स्याद्वाद सत्तामय चेतन, सातनये जाणे योगी;
षड्दर्शन सागरने वलोवी, अमृत चाखे गुणभोगी. सहस्र. ५
शुद्ध समाधि योगे प्रगटे, केवलज्ञान महाज्योति;
बुद्धिसागर विष्णु पोते, लोकालोक सहु विष्णोति. सहस्र. ६

सुरता पद.

अजपा जापे–ए राग.

परम प्रभुनां दर्शन करवा, सुरता अन्तरमां ऊतरी;
विवेक दृष्टिथी सहु देखी, पूर्णानन्दे स्थान ठरी. परम प्रभु. १
माया शोधी खटपट बोधी, समभावे त्यांथी चाली;
असंख्यप्रदेशीचेतन शोध्यो, सत्स्वरूप देखी म्हाली. परम प्रभु. २
आत्मप्रभुजी पूर्ण जणाया, अनंतगुण पर्याय भर्यो;
पोते कहेतो पोते करतो, स्वयंशक्तिथी स्वयं तर्यो. परम प्रभु. ३
दर्शन करतां एकमेक थई, समाई सुग्ना भेद टळ्यो;
लूण गांगडो सागरमां जई, एकमेक थई त्यांज गळ्यो.परम प्रभु.४
सुरताचिति शक्तिमय थईने, क्षायिकभावे सिद्ध ठरे;
बुद्धिसागर गहनशैली छे, अनुभवी मनमां ऊतरे. परम प्रभु. ५

ब्रह्मरन्ध्रध्यान.

राग ऊपरनो.

अवळी वाटे गुरु कृपाथी, हंस गगन गढ आयारे; हेजी.
षट् चक्रोने भेदी नेमे, अलख देश सुख पायारे; हेजी.
झळहळ झळहळ ज्योतिरे झळके, ब्रह्मरूप मन न्यारोरे. हेजी.
अनुभवामृत चढी खुमारी, नेति नेति पद गायोरे; हेजी.
शब्दतीर पण ज्यां नहि पहोंचे, महिमा त्रिभुवन छायोरे हेजी. २
पूर्ण प्रकाशी ज्यां त्यां देखुं, पूर्णे पूर्ण सुहायारे; हेजी.
पूर्णपणुं ग्रहतां पण पूर्ण, नहि जाया नहि आयारे. हेजी. झळ. ३

पूर्णस्वरूपी षट्कारकमय, पूर्णानन्द विलासीरे; हेजी.
तिरोभाव पण पूर्णमयीते, आविर्भाव प्रकाशीरे. हेजी. झळ ४
नामरूपथी न्यारो प्यारो, स्थिरोपयोगी भासुंरे हेजी;
हुं तुं व्यवहारे उच्चरवुं, लोकालोक प्रकाशुंरे. हेजी. झळ. ५
जेवो हुं तेवा सहु आतप, कोने दउ साबाशीरे; हेजी.
बुद्धिसागर परम प्रभुमय, घटमां गंगा काशीरे. हेजी. झळ. ६

सर्वं स्वात्मवशं सुखं ॥

थाळ राग

स्वाश्रयना करनारारे, साधु सहु सुखी;
पराश्रयी नरनारीरे, जगमां बहु दुःखी.
स्वाश्रय सुखनी क्यारी, स्वाश्रयनी बलिहारी;
स्वाश्रय धर्म विहारीरे, साधु. १
पराश्रयिजगजीवो, पाडे छे बहु रीवो;
स्वाश्रयी जगमां दीवोरे, साधु. २
परवश जगमां प्राणी, दुःखी छे रंकने राणी;
स्वाश्रय सुखनी खाणीरे, साधु. ३
परवशता जेणे धारी, मायाना ते भिखारी;
स्वाश्रयता जयकारीरे, साधु. ४
मायामां दुःखडां धारी, चेतोने नरने नारी;
बुद्धिसागर सुखकारीरे, साधु. ५

आतमशक्ति.

श्री वीरप्रभु चरम जिनेश्वर ए राग.

सहु करी शके आतमशक्ति अनंतिनी तुंहि खाण छे,
त्रणभुवन विषे शक्ति अनंति प्रगट थयां सुलतान छे;
दुनियामां ज्योति विकासी रह्यो, निजरूपनो ज्ञाता तुंहि थयो;
निजपदनो अनुभव शुद्ध लह्यो. सहु १
तुं त्रणभुवनमां छे दीवो, अनुभव अमृत पामी जीवो;
परमातमपद अनुभव पीवो. सहु २
तुं शाश्वत आनंदनो दरीयो, तुं ज्ञानादिक गुणथी भरियो;
आतमज्ञाने निजपद वरियो. सहु. ३
तुं सहजस्वरूपी विश्रामी, रुपी नहि निश्चय निर्नामी;
बुद्धिसागर शिवसुखरामी. सहु. ४

चिदानन्दस्वरूप.

लग्या कलेजे छेद गुरोकारे–ए राग.

चिदानंदघनरूप हमारुरे, बाकी पुद्गल माया काची;
अनुभवथी में निश्चय कीधो, तत्त्वमसिपद राची चिदानंद. १
चिदानंदसागरनी ल्हेरो, घटमां उछळे भारी;
अन्तरनो अलबेलो भेटयो, परम प्रभुता धारी. चिदानंद. २
मन मक्कामां खुदा प्रभुजी, झळहळ झगमग भासे;
त्रणभुवनमां शोधी लीधा, पण आ प्रभुजी पासे. चिदानंद. ३

शक्ति अनंति खीलवुं निशदिन, अन्तर स्थिरता वासी;
देहदेवळमां झळहळ दीवो, शक्ति अनंत विलासी. चिदानंद. ४
अलख जगावी अलख देशनी, अलख धूनमां रहीशुं;
बुद्धिसागर आत्म उजागर, निश्चय ध्रुवपद लहीशुं. चिदानंद. ५

खटपट खोटी.

लगा कलेजे छेद गुरोकारे—ए राग.

खटपट सर्वे खोटीरे, तेमां म्हारु कांइ न वळशे;
मान मूर्ख मन जूठी माया, जन्म मरण दुःख टळशे खटपट. १
सर्व कार्यमां म्हारु त्हारु, ममता दूर निवारी;
अन्तरथी तुं अळगो रहेजे, समजण सत्य विचारी. खटपट. २
सर्प दाढनुं विष जतां तो, सर्प थकी शुं थाशे;
राग द्वेष अभावे जगमां, आतम नहि बंधाशे. खटपट. ३
वस्त्र चीकणाने रज लागे, निर्मळ नहि लेपातुं;
अन्तरथी न्यारा रहेतां तो, कांइ न थातुं जातुं, खटपट. ४
खटपट लटपट झटपट त्यागी, अन्तर मांहि जागी;
बुद्धिसागर अनुभव अमृत, स्वादंतां सौभागी. खटपट. ५

माया.

चेतावुं चेती लेजेरे. ए राग.

माया महा मस्तानीरे, सहुने कबजामां ते लेती;
जोगीने पण ते डोलावे, करती शिघ्र फजेती. माया १
मायानुं अंधारु मोटुं, भलाभला पण भूल्या;
नरपति सुरपतिने नहि छोडे, डहापणीया केइ डूल्या. माया. २
मायानी पूजारी दुनियां, माया वशथी घहेली;
चौदभुवनमां बहु रखडावे, पाप कार्यमां पहेली. माया ३
माया मीठी पापी जनने, सत्य वात नहि सुझे;
मायाथी गांडा छे जगजन, समजाव्या नहि बुझे. माया. ४
मायाना उंडा छे कूवा, तेमां शी हुशियारी;
बुद्धिसागर शिक्षा सारी, समजी ल्यो नरनारी. माया. ५

ममता.

लगा कलेजे छेद शुरोकारे–ए राग.

ममता मनथी वारीरे, चेतन अवसर पामी चेतो;
ममता योगे दुःख घणां छे, काळ झपाटा देतो. ममता. १
मननी ममता तनुनी ममता, धननी ममता खोटी;
अवसर आवे जावुं खाली, साथ न आवे लोटी. ममता. २
ममताथी युद्धो छे भारी, समजी ल्यो नरनारी;
ममता त्यागे त्याग मजानो, परमानन्द पदकारी. ममता. ३
कोना चेला कोना पुत्रो, मूकी सर्व जावुं;

हाय हाय शा माटे करवी, केम अरे मकलावुं. ममता. ४
ममता मोटी दुःखनी क्यारी, दुःख बहु देनारी;
ममतानुं बंधन नासे तो, मुक्ति शिघ्र थनारी; ममता. ५
घर जंगलमां भेद न कांइ, ममता त्यागे परखो;
बुद्धिसागर आत्म उजागर, दशा लहीने हरखो. ममता. ६



संतो चेत्या.

कोई संत वीरले जाणीयुंरे भाई-ए राग.

कोई संत वीरला चेतीयारे, कोई संत विरलो चेतीयारे;
दुनियामां दुःखडां जाणशोजी, कोई.
जूठी गाडी लाडी माया, एवुं मनमां आणशोरे. भाई. दुनिया. १
म्हारु त्हारु मिथ्या समजी, खोटो पक्ष न ताणशोरे; भाई दुनि.
दुनियामां स्वारथनां सगपण, जूठां तन धन मानशोरे. भाई दुनि. २
स्वार्थतणी छे मारामारी, वैराग्ये मनडुं वाळशोरे; भाई दुनि.
मरतां साथे कांई न आवे, पाप कर्म सहु टाळशोरे. भाई दुनि. ३
बणी ठणी शुं फुलो फोगट, व्रत नियमने पाळशोरे. भाई दुनिया.
बुद्धिसागर धर्म खरोछे, धर्मे शिवपुर म्हालशोरे. भाई दुनिया ४



प्रभुप्रीति.

लगा कलेजे छेद गुरोंकारे. ए राग

प्रभुनी प्रीति मजानीरे, जीवलडा सच घर्मथी करीए;
जड वस्तुथी प्रीति हरीने, प्रभु उपर सहु धरीए. प्रभु
परम प्रेममां तन्मय थइने, आनंद मंगळ वरीए. प्रभु. १
ज्यां त्यां प्रभुनुं ध्यान धरीने, तन्मय थइने खेलो;
दुनियादारी दुःखनी क्यारी, जाणी पडती मेलो. प्रभु. २
प्रभुनी प्रीति विना शुं खावुं, नाहक ज्यां त्यां जावुं;
परम प्रभुमां प्रेम मजानो, परमब्रह्म झट पावुं. प्रभु. ३
प्रभु प्रेमना प्याला पीने, चिदानन्द पद ध्यावुं;
एकमेकता प्रभुनी साथे, अन्तरदृष्टि जगावुं. प्रभु. ४
अलख अरूपी असंख्यप्रदेशी, प्रभु साथे रंगायो;
बुद्धिसागर सोऽहं सोऽहं, परम प्रभुता पायो. प्रभु. ५

गुरु स्तुतिः

दुहा.

यतिततिपतिसुखकरगुरु, जयजयज्ञनमननाथ;
सरसवचन रस अर्पीने, निशदिन करो सनाथ. ॥ १ ॥

चतुर्भंगी छंद.

जय तत्त्व विचारी, दीक्षा धारी; संयम सारी, जयकारी.
बहु पाप निवारी, समतागारी; समिति धारी, गुणभारी.

सम्यक्त्व वधारी, दृष्टिनिहारी; देश विहारी, सुखकारी.
गुण व्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. १

तें मोह निवार्यो, जाय ते हार्यो; आतम तार्यो, उर धार्यो.
तें शिष्य सुधार्यो, पार उतार्यो; गुणमां ठार्यो, भव तार्यो.
जग धर्म वधार्यो, प्रेम प्रसार्यो; राग विसार्यो, शिवकारी.
गुण व्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. २

तुं सद्गुण गामी, जयनिष्कामी; अन्तर्यामी, स्वर्गामी.
तुं छे निष्कामी, ब्रह्म अनामी, निजपद पामी, बहु नामी.
जगजय गुणकामी, मन विश्रामी; वाणी स्वामी, कामारि.
गुणव्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ३

तुं छे पूर्णांशी, गंगाकाशी; त्यजी उदासी, विश्वासी.
कापी तें फांसी, लेश न हांसी; पूर्ण प्रकाशी, गुणवासी.
शिवपुर निवासी, धर्म विलासी; कीर्तिदासी, छे तारी.
गुणव्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ४

हुं मनमां प्यारो, निश्चय सारो; प्राण हमारो, निधार्यो.
हुं शिष्य तमारो, उर उतारो; शिघ्र सुधारो, जन्मारो.
उर प्रेम वधारो, करो न न्यारो; पाप निवारो, ल्यो तारी.
गुणव्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ५

कोइ वात न छानी, नहि अभिमानी, आतम ज्ञानी, गुण गानी;
समतामृतपानी, अन्तर्यानी, आतम ध्यानी, मस्तानी
गुणगणनी खानि, लेश न हानि, सद्गुणदानी, कामारी;
गुणव्यक्ति प्रचारी, कर्म विदारी, जगदुपकारी बलिहारी. ६

ळळीलळी करगरशुं, विनति करशुं, सत्य उच्चरशुं, सुखवरशुं;
सुख निर्मळ धरशुं, भ्रांति हरशुं, कदी न डरशुं, संचरशुं.

अन्तर ठरशुं, ठामज ठरशुं, गुरु अनुसरशुं, मनधारी;
गुणव्यक्ति प्रचारी कर्म विदारी, जगदुपकारी बलिहारी. ७

दुहा.

गुरु कृपालु गुणस्तवुं, पूर्णानन्द अखंड;
तारो सेवक आपनो, कर्मारि देइ दंड. १
श्रद्धा भक्ति साचवी, क्षण क्षण गाउं गान;
कृपा करीने तारजो, अर्पी अनुभव ज्ञान. २
असंख्यप्रदेशी सद्गुरु, ध्यावुं थइ लयलीन;
आतम ते परमातमा, निजपदमां छे जिन. ३
गुरुगम ज्ञाने रीजीए, गुरुगमथी छे मुक्तिः
गुरु देव आराधना. धर्म मार्गनी युक्ति. ४
बुद्धिसागर सद्गुरु, नमीए वार हजार;
द्रव्य भाव मंगलमयी, गुरु मूर्ति जयकार. ५

समज साचुं.

भजन करले. ए राग.

समज साचुं समज साचुं, अथिर आ संसाररे;
स्वारथनां सगपण अरे सहु, नक्की मनमां धाररे. समज. १
मननी बाजी त्यां शुं राजी, नाटक सम सहु खेलरे;
जोइ जोइने जोइ लीधुं, माया ममता मेलरे. समज. २
शिष्य कोना पुत्र कोना, कोना गुरुने बापरे;
धर्म मनना जाणीने सहु, दूर कर भवतापरे. समज ३

खराखरीनो खेल आतम, भूल न वारंवाररे;
मननी वृत्ति ज्यां मळे त्यां, सुख गणे नरनाररे. समज. ३
सत्य दीलथी सत्य नेमे, आतमनी धर टेकरे;
अलख अरूपी तत्त्वमसि तुं, धरजे सत्य विवेकरे. समज. ४
आडुं अवळुं जगत् बोले, तोपण धर्म न छोडरे;
धर्म करतां धाड आवे, तोपण अंग न मोडरे. समज. ५
नास्तिकोना संगथी जीव, सत्य टेक न हाररे;
बुद्धिसागर धर्मयोगे, सफळ छे अवताररे. समज. ६

निश्चयरहस्य.

श्रीराग.

हवे जाण्युं जगत् सहु काचुंरे, मने लाग्युं आतमरूप साचुंरे; हवे.
कोइ न जगमां मारु निश्चय, मारु मारु जाणी शुं माचुंरे. हवे. १
चेला चेली कोइ न मारु, शा माटे अहो शुं याचुंरे; हवे.
अन्तरनो अलबेलो मळीयो, सत्य बुद्धिसागर गुण राचुंरे हवे. २

प्रभुस्तुति.

प्लवंगम छन्द.

नमुं नाथ त्रिभुवन पूज्य प्रभु जयकार छो,
जय दिनमणि दीनदयाळ विभु सुखकार छो;

जय जिनवर श्री जगदीश निरञ्जन जग धणी,
नमुं जिनवर पद्कज प्रेम कर्म हरवा भणी. १

निरक्षर अक्ष अनंत भदंत विराजता,
प्रगटावी केवलज्ञान जगत्मां छाजता;
जय अशरण शरण अखंड महेश विलासी छो,
जय गुणपर्यायाधार अज अविनाशी छो. २

जय अजरामर अरिहंत स्मरण शिव पन्थ छो,
जय श्री वीतराग महेश श्रुति श्री ग्रन्थ छो;
मारे क्षण क्षण प्रभु आधार अन्य शुं जाणवुं,
बुद्धिसागर सहजानन्द परमपद आणवुं ३



आत्मसाधन.

॥ दुहा ॥

अजरामर निर्मल प्रभु, चिदानन्द भगवान्;
घट घटमां व्यापी रह्यो, देखे सो मस्तान. १

बाह्य वस्तुमां शोधवुं, अन्ते कशुं न हाथ;
आत्मरमणता आदरे, लहिये त्रिभुवन नाथ. २

आत्मरमणता साधीए, पुष्टालंबन सार;
अन्तरना उपयोगथी, लहिये भवजलपार. ३

अनन्त सुखनी ल्हेरियो, अन्तरमां प्रगटाय;
परमप्रभुता पद मळे, जन्म मरण विघटाय. ४

बाह्यवृत्तिमां शर्म शुं, शोधो अन्तर शर्म;
अन्तर मांहि शोधतां, प्रगटे शुद्ध सुधर्म. ५

बाह्य प्रवृत्ति परिहरो, ध्यान धरो निशदीन;
सहजानन्द स्वरूपमां, रहिए निशदिन लीन. ६
सार सार सहु ग्रन्थनुं, साध्यतत्त्वनी सिद्धि;
आत्मवीर्यथी साधतां, ज्ञानादिक गुण ऋद्धि, ७
शुद्ध समयने साधतां, जन्म सफलता थाय;
बुद्धिसागर धर्मथी, चेतन निजपद पाय. ८

आत्मविवेक.

दुहा.

अनन्त रत्नत्रयी प्रभु, सहजानन्द स्वरूप;
पुरुषोत्तम करुणानिधि, स्मरतां नासे धूप. १
एकरूप हुं आतमा, द्रव्यार्थिक नयवाद;
अनेक हुं पर्यायथी, बोधे टळे प्रमाद. २
श्रुतज्ञानालंबीपणे, परम प्रभुनुं ध्यान;
करतां शिवसुख संपजे, व्यक्तिपणे भगवान्. ३
आत्मज्ञाननी सेवना, आत्म रमणता सार;
आत्मारामी मुनिवरा, जगमां छे जयकार. ४
बाह्यदशा व्यवहारमां, कांई न आवे हाथ;
पुद्गलमां निज शोधतां, भूल्यो त्रिभुवननाथ. ५
त्रिगुप्तिगुप्ता जना, ध्यावे आत्मस्वरूप;
अनन्त आनन्द स्वादीने, थावे छे जगभूप. ६
बाह्य दशामां तुं नहि, निश्चय निर्मळधार.
परम महोदय स्वामी तुं, अन्तरमां अवधार. ७

लेख लख्याथी शुं थयुं, बहु बोले शुं थाय;
अन्तरमां निश्चय रहो, परमप्रभु परखाय. ८
सार सार सहु ग्रन्थनुं, समजो आतमदेव;
बुद्धिसागर आतमनी, भावे कीजे सेव. ९

परमप्रभुता.

अलख देशमें वास हमारा—ए राग.

परम प्रभुता घटमां भारी, चिदानन्दमय परखाणी;
लागी लगनी अलख देशमां, सप्त धातुओ रंगाणी. १
शरीरनी परवाह नथी कंइ म्हारु में शोधी लीधुं;
पोतानुं पोते में जाण्युं, भाव दान निजने दीधुं. २
उच्चभाव अन्तरथी प्रगट्यो, आतमभाव ज्यां त्यां प्रसर्यो;
भूलाणी सहु दुनियादारी, मोहभाव मनथी विसर्यो ३
जे जे अंशे निरुपाधित्व, ते ते अंशे धर्म धर्यो;
जे जे अंशे सुरता लागी, ते ते अंशे धर्म वर्यो. ४
जे जे अंशे शुद्ध समाधि, ते ते अंशे छे मुक्ति;
जे जे अंशे शुद्ध रमणता, आनन्दनी अंशे भुक्ति. ५
आत्मराग छे जे जे अंशे, पर प्रीति अंशे उतरी;
ज्ञानी ज्ञाने सर्व समातुं, सुरता निजपद ठाम ठरी. ६
हेय ज्ञेयने उपादेयथी, मोझीलो हुं मलकायो;
सहु ऋद्धि घट अन्तर भासी, समताभावे हुं आयो. ७
अलख देशनी अलख फकीरी, पामी परमानंद वर्यो;
बुद्धिसागर चिदानन्दमय, निश्चय निजपद ठाम ठर्यो. ८

चित्तने शिक्षा.

गझल.

भटकता चित्त वश थातुं, अरे तुं बाह्य नहि जातुं;
प्रभुना ध्यानमां रहेजे, विचारी तत्त्वने कहेजे. १
खरेखर उद्यमी सारु, जपे नहि ठाम तुं प्यारु;
खरेखर चित्त तुं मोटुं, गणुं नहि तुजने छोटुं. २
प्रभुने मेळवी आपे, अनंतां दुःख तुं कापे;
केळवणी चित्तनी सारी, विचारो भव्य निर्धारी. ३
प्रभुना ध्यानमां राखुं, अनंतां सुखने चाखुं;
हरु सहु बाह्यनी पीडा, उपाधि दुःखना कीडा ४
खुमारी आत्मनी लहीशुं, प्रभुना रूपमां रहीशुं;
मुनिना ध्यानमां आव्युं, मुनिए प्रेमथी गाव्युं. ५
अखंडानंद परखायो, खरेखर ध्यानमां पायो;
बुद्ध्यब्धि सन्तनो संगी, प्रभुना प्रेममां रंगी. ६

सत्य जाणे शुं दुनिया दिवानी.

राग—मारु जंगलो.

सत्य जाणे शुं दुनिया दीवानीरे, जे मायामां मस्तानीरे; सत्य.
जन्मी ज्यांथी तेमां राचे, खरेखर अरे तोफानीरे. सत्य. १
खरु तत्त्व न खोळे खांते, म्हारु त्हारु करे अभिमानीरे. सत्य.
रात्री उंघे दीवस उंघे, अरे वात नहि कोई छानीरे. सत्य. २
सत्य जूठनो भेद न समजे, निशदिन घांचीनी घाणीरे. सत्य.

अंधाधुधीमां बहु राजी, करे निजगुणनी भ्रट हाणीरे, सत्य. ३
सत्यकृत्यनुं नाम न जाणे, मची रही स्वारथमां खालीरे सत्य.
बुद्धिसागर सत्य धर्ममां, लयलीन थया अहो ज्ञानीरे सत्य. ४

पत्र संदेशो.

हरिगीत छंद चाल.

जा शिष्य पासे पत्र प्रेमे सत्य वात जणावजे,
ऊंडी असर करी चितमां वळी स्वात्म सन्मुख आवजे;
नहि अज्ञनो तो प्रेम साचो प्रेम शुं पर द्रव्यमां,
छे आत्म साक्षी प्रभूपयोगे प्रेम छे निज द्रव्यमां. १

शा हेतथी राची रहे छे प्रेम घेलो थई अरे,
संयोग त्यां वियोग अंते न्याय साचो मन खरे;
उच्च चेतन धर्म करवा उच्चता दिल वारीए,
परमात्म साथे प्रेम जोडी त्रिपद सर्व विसारीए. २

सहु जगत् जीवने उच्च गणवा नीच गणवा नहि कदी,
उच्च ध्याने उच्च थाशो उदधिमां जेवी नदी;
सहु जीव साथे मित्रताने राखवी ज्यां त्यां अरे,
माध्यस्थता राखो हृदयमां दोष सघळा दुर हरे. ३

दोषीना पण दोष टाळो निन्द्यदृष्टि टाळीने,
आनंद पामो सन्त देखी चित्त अन्तर वाळीने;
कारुण्यता गंगा नदीमां स्नान निशदीन कीजीए,
ने स्वात्मदृष्टिकाशी पामी हृदयथी खूब रीजीए ४

शुद्धचित्तमक्काक्षेत्र पामी खुदा प्रभुने पामीए,
ए अलख निर्भय आत्म धारी दोष सघळा वामीए;
छे चौद भुवनें वस्तु जे जे शरीरमां ते ते अहो,
कदि बाह्य भावे भटकशो नहि आत्मभावे झट रहो. ५
सागर हृदयने स्वात्मविष्णु चेतना लक्ष्मी खरी,
योगियोए आत्मध्याने साची विद्या झट वरी;
आत्मज्ञान विना नहि शिव बाह्य दवमां शुं दहो.
क्रिया कष्टनी मुक्ति नहि दे सार समजी मन वहो. ६
ओ मित्र म्हारा अलखरुपी अलख देशे म्हालजे,
जूठ समजी बाह्य दुनिया, सत्य शिवपुर चालजे;
रंगाईने तुं आत्मभावे शुद्ध स्थिरता लावजे,
बुद्ध्यब्धि संगी मित्र मारा आत्मदेशे आवजे. ७



संसारनी अनित्यता.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां संयोग त्यां वियोग तो व्यापी रह्यो,
संसारना संबधमां शुं जीव ललचाई रह्यो;
राजा अने वळी रंक सर्वे मृत्यु वाटे चालता,
विकाळ काम कराळ थई कई अन्य गति संभाळता. १
जेनी हाके धरणी धुजे शत्रु सेना थरहरे,
पलकमांही चालीया अरे कर्या कर्मने अनुसरे;
अभिमानना बहु तोरमां जे मरडी मूछो मही फरे,

आयु खूटे पळ पळ विषे ते जोत जोतामां मेर. २

व्यापारमां मशगुल व्यापारीज अंते चालीया,
महीनाथ मोटा जगत चावा दाटीया के वाळीया;
जे युद्ध वीरो अस्त्र शस्त्रे दाट दुश्मन वाळता,
अमर रह्या नहि जगतमां ते जेओ तनु पंपाळता ३

कई मित्र चाल्या पुत्र चाल्या केक वळी हजी चालशे,
अध्यात्मव्यक्ति साची समजी ज्ञानी धर्म निहाळशे;
तुं चेत प्राणी चेत प्राणी समय सारो आ मळ्यो,
जूठा जगत्मां म्हालवाथी जन्म फेरो नहि टळ्यो. ४

शुभ समय पामी समय पामी चेत चेतन ज्ञानथी,
आनंदमय तुं अलख योगी शोधी ले झट ध्यानथी;
तुं भस्म करजे ज्ञानथी सहु कर्मने झट वारमां,
झट साध्य सिद्धि साधी ले जीव मनुजना अवतारमां. ५

व्यामोह वशमां म्हालवुं शुं, अंतमांतो दुःख रह्युं;
खसनुं खणवुं दुःख माटे, ज्ञानीयोए बहु कह्युं.
छे स्वप्न भोजन तृप्ति खोटी, बाह्यसुख तेवुं अहो;
बधि बाह्य सुखनी आश तजीने, आत्मसुख राची रहो. ६

अध्यात्म ऋद्धिसिद्धि साची, अवर सहु जंजाळ छे;
टाळो हृदयथी मोहभ्रांति, तेज बुद्ध विशाळछे;
निज आत्मरूपमां म्हालवुं छे, शुद्ध ध्याने सहजमां;
आ आत्मा परमातमा छे, सत्य धारो मगजमां. ७

तुं अलख देशे चाल योगी, बाह्य ममता परिहरो,
छे धाम तुं सत्सुःखनुं शुभ, जैनवाणी मनधरो;
अध्यात्मशांति प्राप्त करवी सत्यश्रद्धा मन धरो,
समजी सदा सुख बुद्धिसागर परमप्रभुता पद वरो. ८

जगत्नुं भलुं इच्छवुं.

हरिगीत छंद चाल.

आ जगत् सघळुं मित्र मान्युं कुटुंब मारु खरेखरु,
करुं न हिंसा कोईनी हुं भावना ए चित्त धरु;
क्षण रागीने क्षण द्वेषी एवी वृत्तिने झट परिहरु,
माध्यस्थदृष्टि हृदय धारी सर्वनुं सारु करु. १

आ म्हारु ने आ त्हारु एवी मोह वृत्ति परिहरी,
आत्मभावे धर्म जाणी सत्यता दिलमां धरी;
जगत जननुं भव्य करवुं सत्य धर्म बतावीने,
जगत जननुं भव्य करवुं चित्त करुणा लावीने. २

सहु आत्म सरखा जगत जीवो कीडीथी कुंजर लगी,
कोईने संतापुं नहि ए भव्य रटना दिल लगी;
देशी के विदेशीनो नहि भेद मनमां आवतो,
सर्व जीवनुं भव्य करवुं प्रेम सत्य बतावतो. ३

ज्ञाति जाति भेद नहि मन जीव सघळा उच्च छे,
जीवने जे उच्च जाणे कदी नहि ते नीच छे;
जगत जनने धर्मी करु हुं भावना दिलमां वसी,
द्वेषवृत्ति दूर नाठी धर्म वृत्ति धसमसी. ४

धर्मनां हुं कृत्य करतो दुःख कोणज आपशे,
पापनां हुं कृत्य करु तो स्वर्गमां कोण थापशे;
धर्म करतां सुख थाशे न्याय मारो हुं करु,
पाप करतां दुःख थाशे अन्यने शीद करगरु. ५

आत्मबळ विश्वास लावी धर्म पन्थे संचरु,

सत्य म्हारु प्रिय गणीने मोहजलधि झट तरु;
जागजो नरनारीओ झट मोक्ष पन्थे चालशो,
बुद्धिसागर सहजयोगे अखंडानंद म्हालशो. ६

सिद्धांतबोध.

हरिगीत छंद चाल.

जाग चेतन जाग चेतन मोह निद्रा परिहरी,
कोण तुं छे क्यांथी आव्यो ज्ञान तेनुं कर जरी;
आ जगत शुं छे कर्म शुं छे रूप त्हारु शुं खरे,
आदेयने शुं हेय जगमां अमर शुं ने शुं मरे. १

क्यारनुं आ जगत छे ने तत्त्व तेमां शां रह्यां,
तत्त्व लक्षण सत्य शुं छे जगत्मां कोने कह्यां;
आतमा ने कर्मनो संबंध केवो जाणीए,
पहेलुं कर्म के जीव तेमां तर्क एवो आणीए. २

सृष्टि कर्त्ता छे के नहि ते युक्तिथीज विचारीए,
सर्व जीवनो आतमा एक छे नहीं ते धारीए;
सर्वव्यापी आत्मा के देशव्यापी छे खरो,
आतमानुं चिन्ह केवुं तर्क तेनो मन करो. ३

कर्म सारु खोटुं तेनो न्याय कोणज आपतुं,
धर्म करतां कोटी भवनुं कर्म कोणज कापतुं;
उगरवुं के मरवुं मारे स्वथकी के पर थकी,
मरतां अंते साथ शुं छे ज्ञान कर आगम थकी. ४

करवो कोनो सत्समागम सन्त कोने जाणवा,
सन्तनी करणी अहो शुं भेद तेना आणवा;
आतमाने सिद्ध तेमां भेद शो छे धारीए,
आगम अने अनुमानथी ए सर्व प्रश्न विचारीए. ५

आतमा हुं द्रव्यथी नित्य अन्यगतिथी आवीयो,
पूर्व भवमां कर्यां कर्म जे ते ज साथे लावीयो;
द्रव्य षट्थी जगत पूर्युं काल अनादि जाणीए,
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता ए द्रव्य लक्षण आणीए. ६

कर्म पुद्गल द्रव्य जाणो बंध छे परभावथी,
कर्मथी भिन्न आतमा छे मुक्त शुद्ध स्वभावथी;
ज्ञेय सघळां द्रव्य ज्ञाने हेय पर वस्तु कही,
आदेय जगमां आतमा एक सत्य श्रद्धा सद्दही. ७

जीव जड बे तत्त्व भाख्यां तत्त्व नव पण जाणीए,
काल अनादि तत्त्व बे छे ने अनंत पिछाणीए;
आतमाने कर्मनो संबंध काल अनादिथी,
पहेलुं कर्म के आतमा नहि जाणीए ते ज्ञानथी. ८

देहरूप जे सृष्टि तेनो आतमा कर्त्ता कह्यो,
पर स्वभावे कर्म कर्त्ता बोध ए मन सद्दह्यो;
आत्मभावे रमणताथी कर्म सृष्टि परिहरे,
अवर कर्त्ता कह्यो नहि ईश सत्य युक्ति ए खरे. ९

सर्व जीवनो आतमा नहि एक एवुं धारीए,
प्रतिशरीरे भिन्न चेतन युक्ति नयथी विचारीए;
सर्वव्यापी आतमा ने देश व्यापी छे खरो,
व्यक्तिथी छे देश व्यापी ज्ञानथी व्यापक धरो. १०

ज्ञान दर्शन चरण लक्षण आत्मानुं छे खरु,
अेकेन्द्रिथी सिद्ध पर्यंत जीवव्यापी अनुसरु;
शुभाशुभ जे कर्म तेनो न्याय कर्मज आपतुं,
अपेक्षाए जीव ईश्वर न्याय मनमां लाव तुं. ११

धर्म करतां कोटी भवनुं पाप आतम टाळतो,
ध्यान अग्नि योगथी जीव कर्म ईन्धन बाळतो;
आत्म शक्ति प्रगटवाथी कर्म मर्म हणाय छे,
निज स्वभावे रमण करतां आतमा शिव पाय छे. १२

आत्मभावे रमण करतां उगरवुं छे आपथी,
कर्ममांहि रमण करतां उगरवुं शुं बापथी;
आत्मना सामर्थ्यथी तो सर्व शक्ति प्रगटती,
आत्मना विश्वास योगे मूर्खता दूरे थती. १३

मृत्यु पाछळ साथ आवे कर्म मनमां जाणशो,
कर्मने वळी धर्म साथे सत्य मनमां आणशो;
दुःखकारक कर्म जाणी धर्मवृत्ति आदरो,
धर्म त्यागी मोहमां अरे केम भूली जन फरो. १४

ज्ञानिगुरुनो संग करीने ज्ञान चेतननुं करो,
जे शुद्ध आत्मस्वभाव ते तो धर्म साचो अनुसरो;
खरे शुद्ध आत्मस्वभावमांहि रमणथी सुख थाय छे,
धर्मना व्यवहार भेदो हेतु रूप गणाय छे. १५

सन्त करणी धर्मनी छे भक्ति मुक्ति हेतु छे,
दोष अष्टादश रहित जिन ईश ए संकेत छे;
आतमाने सिद्ध तेमां भेद कर्मनो जाणवो,
कर्म जातां आतमा ते सिद्धरूप पिछाणवो. १६

कर्मयोगे आतमानी सिद्धता तिरो रही,
अंश अंशे कर्म टळतां सिद्धता आविर् कही.
सिद्धव्यक्ति प्रगट करवा धर्म उद्यम आदरो,
बुद्धिसागर तत्त्वज्ञाने परम महोदय पद वरो. १७

संसारमां सुधरो.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां सुधरो अरे जन धर्मकरणी साचवी,
धर्मवण नाहि उन्नति जग शिख साची मानवी;
मावापनी भक्ति करो बहु दारु ताडी परिहरो,
केफी वस्तु परिहरो झट उन्नति वेगे करो. १

छेलछबीला बणीठणीने वित्त व्यय नाहक करो,
खर्च खोटां शुं वधारो सत्य नीति अनुसरो;
सहेलाइमांहि छाकी जइने अवनति पायो रचो,
धर्मनी जो दाझ होय तो धर्म उद्यममां मचो. २

भाषा भणीने फुलता शुं दीर्घदृष्टि वापरो,
परोपकारी शिघ्र थाओ सत्य रस्तो ए खरो;
देशनी जो दाझ होय तो देशीओने पाळवा,
दोषनी जो दाझ होय तो दुर्गुणोने खाळवा. ३

न्यायथी धन मेळवीने न्यायथी चालो खरे,
कहेणी जेवी रहेणी राखो सुजनता वधशे अरे;

आ जगत्मांहि जन्मी जेणे जीवन एळे गाळीयुं,
जननी भारे मारी फोगट दुःख न लेशज टाळीयुं. ४

जनक जननी मित्र बंधु बेन शत्रु समा गणो.
उच्च जीवन नित्य करवा शास्त्र साचां जन भणो;
धर्मना रीवाज जूना मर्म तेनुं ज जाणवुं,
गहन ग्रन्थो पूर्व मुनिना, ज्ञान पामो अभिनवुं. ५

माध्यस्थदृष्टि धारी भव्यो दोष सघळा वारीए,
पुनर्जन्मना हेतु समजी सत्य श्रद्धा धारीए;
धर्म साचो कदी न काचो धर्ममां राची रहो,
बुद्धिसागर धर्म करतां चिदानंद पदने लहो. ६

शुद्धस्वरूपप्राप्तव्य छे.

हरिगीत छंद चाल.

आत्मशक्तिप्राप्त करवा धर्म उद्यम आदरु,
आत्मना सामर्थ्यथी आनंदनी लीला करु;
आतमा परमातमारुप थाय ते निश्चय धरु,
दुःख आवे धैर्य धरवुं सत्य शाश्वत सुखवरु. १

शुद्ध रूपी आतमा हुं ब्रह्ममां राची रहुं,
शुभाशुभ संयोगमां नहि हर्ष के शोकज लहुं;
निंदवा के वंदवाथी जतुं न मुज कांई आवतुं,
ज्ञान दर्शन धर्म मारो अन्यमां नहि फावतुं. २

दृश्य वस्तु तेन हुं छुं दृश्यथी न्यारो रहुं,

अलख अरूपी हंस हुंछुं अनुभवे वाणी कहुं;
सुख के नहि दुःखकारी मित्र शत्रु अनुभवुं,
शाने माटे करु हुं ममता वाणी शीद खोटी लवुं. ३

जगत सारु तेथी शुं मुज खोटुं तेथी शुं गयुं,
अध्यात्मभावे रमण करतां नित्य निर्मळ सुख लह्युं;
सत्य वाणी जिन प्रभुनी अनुभवीने अनुभवी,
सापेक्ष वस्तु जाणवाथी धर्म पामे जन भवी. ४

अनंतभवमां भ्रमण करतां चित्त ठाम न आवीयुं,
आत्मज्ञाने गुरु कृपाथी चित्त शिव पद भावियुं;
रमण करवुं रमण करवुं ध्यानथी निश्चय कहुं,
बुद्धिसागर सत्य निश्चय लावी मंगलपद लहुं. ५



प्रातः स्मरणीय हितशिक्षा.

हरिगीत छंद चाल.

विश्वासघाती उग्र पापी नरकमांहि अवतरे,
परनी निंदा जे करे ते पापनी पोठी भरे;
आळ परने जे चढावे आळ पामे ते खरो,
परनुं भूंडुं ताकतो जन पामतो दुःखनो घरो. १

परनुं सारु देखीने जे दीलमां दाझी बळे,
दोषी एवा दुःख पामे दुःखी थइने सळवळे;
स्वार्थ साधक जे बनीने कपटमां राची रहे,
कपटी काळा नाग जेवो दुःख अंते बहु लहे. २

जे जूठ बोले स्वार्थमाटे प्राणी हिंसा बहु करे,
मृत्यु अंते प्राणिया ते नरकमांहि अवतरे;
सद्गुरुने निंदवाथी नाश कूळनो थाय छे,
माबापनी निंदा करे ते नीच गतिमां जाय छे. ३

क्रोध अतिशय जे करे ते सर्प काळो थइ फरे,
लोभ अतिशय जे करे ते सर्व पापो आदरे;
काम अतिशय जेहने ते देखनो पण अंध छे,
सप्त व्यसनो सेववाथी द्वार स्वर्गनां बंध छे. ४

उचित अवसर जे न जाणे मूढ जगमां जाणवो,
धर्मने धिक्कारतो ते मूर्खजन जग मानवो;
मित्र पण जे दुष्ट मनमां शत्रुथी भूंडो अरे,
शत्रुनो विश्वास राखे मनुष्य ते अंते मरे. ५
धूर्त आगळ मननी वातो जे करे ते मूढ छे,
कपटीनो आचार भारी चिन्ह एवुं गूढ छे;
विना विचारे बोलवाथी शोक बहु करवो पडे,
बुद्धिसागर समजु समजो सत्य समजुने जडे. ६

हितशिक्षारत्न.

हरिगीत छंद चाल.

ज्ञानियोनी संग करतां ज्ञान दिलमां प्रगटतुं,
सन्तजननी संग करतां पाप सहु दूरे जतुं;
योगियोनी संग करतां योगना पन्थे वहो,
वृद्धजननी संग करतां सत्य शिक्षा मन लहो. १

धर्म ग्रन्थो वांचवाथी धर्म श्रद्धा उपजे,
गुरुनी भक्ति जे करे ते उच्च जगमां नीपजे;
सर्वनुं सारु करे ते श्रेष्ठ जगमां थाय छे;
सत्य पन्थे चालवाथी देवतानी स्हाय छे. २

कोईनो सद्गुण कह्याथी झेर कदीय न थाय छे,
सर्व जननुं सारु बोले मित्र सत्य गणाय छे;
कोईने पीडे नहि ते धर्म मूर्ति जग खरे,
माध्यस्थदृष्टि जे धरे ते सत्ययुक्ति अनुसरे. ३

विनय वैरी वश करे छे विनय उत्तम आदरो,
आत्मश्रद्धा हृदय धारी दोष सघळा परिहरो;
उच्च थाशो नक्की जगमां उच्च जन सेवा करे,
गुरु वचनने लोपशो नहि सत्य शिक्षा छे खरे. ४

शुद्ध चेतन रूप समजी धर्म करणी कीजीए,
आत्मध्याने अनुभवामृत प्रेम प्याला पीजीए;
जागशो नरनारीओ झट पाप वृत्ति परिहरी.
बुद्धिसागर हृदय शुद्धि आत्मश्रद्धा सुखकरी. ५



उच्चबोध.

हरिगीतछंदचाल.

उच्चवृत्तिप्रेम माटे उच्चजनमन आथडे,
नीचवृत्तिप्रेम माटे नीच जनमन लडथडे;
विवेकदृष्टिसत्यरविकर भरतिमिर मिथ्या हरे,

मिथ्या जनित मन तिमिर भ्रान्ति क्षणिक स्थिरता शुं करे.१
आत्मजीवनदीप्तिवृद्धिशर्मस्वादितयतिपति.
अध्यात्मयोगिकमार्ग बोधे ज्ञानयोगे जिनपति;
कर्णसंपुट गिर् सुधारस हृदय पंकज उतरे,
स्याद्वादशासन पापनाशन भव्यजनमनमां धरे. २

लक्ष्यवृत्ति लक्ष्यमां तो बाह्यथी भिन्नज अहो,
अशुभवृत्ति क्लेश टाळी शुद्धमां राजी रहो;
सर्वतः निस्संग थइने संग चिद्घन साधीए,
परमात्मव्यक्तिदिव्यभाति योगथी झट वाधीए. ३

सप्त चेतन द्रव्य लक्षण सप्त नयथी धारीए,
शुद्ध निर्मल स्फटिकवत् छे नित्य चेतन धारीए;
परमज्योति परमशांति तत्त्वमसि निश्चय कर्यो,
बुद्धिसागर परम मंगल लाभ निश्चय मन धर्यो. ४

अन्तरमां सुरताप्रवेशना उद्गार.

मन मोह्युं जंगल केरी हरणीने—ए राग.

मारी सुरता अन्तरमांहि लागीरे, हुं तो थइयो अन्तरगुण रागीरे;मारी.
दुनियादारी दूर निवारी, हुंतो बनीयो अन्तर वैरागीरे. मारी. १
नर के नारी नाहि नपुंसक, भान भूल्यो रागी के हुं त्यागीरे.मारी.२
दुनिया डहापण दूर निवार्युं, मोह वेरी कुमति दूर भागीरे.मारी. ३
अलख अरुपी अजरामर हुं, शुद्ध चेतना घटमां जागीरे मारी. ४

चिद्घन चेतन परम महोदय, हुं तो आनंदमय वडभागीरे.मारी. ५
ध्यान दशामां हुं तुं नाठुं, ब्रह्म झळहळ ज्योति त्यां जागीरे.मारी. ६
बाह्य दुःख अन्तरमां सुखडां, एवी स्फुरणा मोरली झट वागीरे.मारी.७
बुद्धिसागर आनंदघन प्रभु, एकरुपे मळोने सुहागीरे. मारी. ८

योगी.

श्रीराग.

मन मोह्या जंगल केरी हरणीने—ए राग.

जोगी थइने अलख हुं जगावुंरे, सोऽहंसोऽहं परमप्रभु ध्यावुंरे. जोगी.
उदासीनता कंथा पहेरुं, वैराग्यनी भभूति चोळावुंरे. जोगी. १
दयाभावनी चाखडीओ धरुं, शीलव्रतनो लंगोट लगाउंरे. जोगी. २
सर्वत्यागरुप शिर्ष मुंडावुं, प्रभु धारणा खप्पर धराउंरे. जोगी. ३
ध्यान दंडने प्रेमे धारुं, पवन पावडी उपयोग लावुंरे. जोगी. ४
अन्तर आत्मप्रदेशे विचरु, दया गंगमां स्नाने सुहाउंरे. जोगी. ५
अस्ति नास्तिमय परमब्रह्ममां, ब्रह्मांड आखुं हुं समाउंरे. जोगी. ६
अनुभव अमृत भिक्षा मागुं, हुं तो धूणी संयमनी जगाउंरे.जोगी. ७
अन्तर आतम परमात्तमनी, ऐक्य भावना भांग घुंटावुंरे. जोगी. ८
मन प्यालामां भरीने पीतां, देखुं उलटी आंखे सुख पावुंरे.जोगी. ९
बुद्धिसागर योग महोदय, पामी निश्चय निर्भय थाउंरे. जोगी.१०

चेतन हंसीनो चेतन हंसने उपालंभ.

हरिगीत छंद चाल.

ओ हंस मान सरोवरे तुं, हंसली साथे रमे,
मोति चारो तुं चरे छे, अन्यत्र भक्ष्यज नहि गमे;
शुभ श्वेतवर्णे श्वेतचरणे, शोभतो जगमां अरे,
त्यॉगी कूळवट टेक त्हारी, काक संगति शुं करे. १

तुं स्वच्छ दिलथी दूध जेवो, योगियोना मन गमे,
त्यागी कूळवट मोहथी अरे, काग संगे क्यां भमे;
दुग्ध जल संयोगनो वियोग चंचुथी करे,
चतुराइ चावी जगतमां बहु, लाज मूकी शुं फरे. २

पद्मिनीनी गतिने जीती, नाम चावुं बहु कर्युं,
ओ हंस कूळवट मूकवामां चित्त शाथी तव फर्युं;
तुं हंसी साथे हेत हरदम मान सरवर झीलतो,
सूक्ष्म कमळी तंतुओने पाद गतिथी पीलतो. ३

उच्च कूळ प्रख्यात प्यारा विनति आ उरमां धरो,
स्नेह तंतु बांधीया शुभ केम शाथी विचरो;
जीव राजा चेतनास्त्री उपालंभ ए आपीयो,
बुद्धिसागर आत्मभावे समजतां सुख व्यापियो. ४



१६५

जोया बाद सार नथी.

हरिगीत छंद चाल.

नव लग्न लीलामां भर्युं शुं कामी जन राची रहे
सुख जीवननी दोरी कल्पी स्मरण करी मन ते लहे,
डुंगरा रलीयामणीया तो दूरथकी लाग्या महीं,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेमां कंइ नहीं. १

मरु महीमां हरिण दोडे तरस लागी बहु अरे,
झांझवानां जळ निहाळी दोडी दोडी बहु फरे;
जाय पासे तो मळे नहीं दूर जल जाये वही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेमां कंइ नहीं. २

स्वप्न लाडु जमण जमतां भूख भागी नहि जरी,
जगत्नी जंजाळ मोटी खोटी जोतां ते ठरी;
पुष्प आ गुलाबनुं करमाइ जातुं ते सहि,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेमां कंइ नहीं. ३

मीन भोळुं भक्ष्य माटे मोहथी विंधाय छे.
कमळनी सुवास माटे भ्रमर दुःख लपटाय छे.
सारु लाग्युं उपरथी अरे सुंदरता मनमां लही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेमां कंइ नहीं. ४

अनुभवी ए अनुभव्युं ए सर्व विषयो संग्रही,
सुख पाछळ दुःख ते तो सुख जगमां छे नहीं.
बुद्धिसागर प्रभूपदेशे धर्म साधो गहगही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेमां कंइ नहीं. ५



क्षमापना.

हरिगीत छंद चाल.

खमुं खमावुं सर्वने हुं, वैर सघळां परिहरी;
जगत जीवो मित्र म्हारा, भावना मनमां धरी;
अज्ञानने वळी द्वेषथी कोइ जीवनें मार्या अरे,
खमुं खमावुं जीव राशि साम्य भावे जग खरे. १

क्रोधना आवेशमांहि निंद्य वचनो जे कह्यां,
क्रोधना आवेशमांहि चित्त परनां जे दह्यां;
क्रोधना आवेशमांहि जे कर्युं ते नहि खरुं,
खमुं खमावुं जीवराशि साम्यता मनमां धरुं. २

चतुराशिति लक्षयोनि जीव म्हारा मित्र छे,
सिद्धसम सत्ता थकी ते ज्ञानभाव विचित्र छे;
द्वेषी नहि कोइ जगत्मां मम द्वेषवृत्ति नहि खरी,
खमुं खमावुं जीवराशि मित्रता मनमां धरी. ३

सुख दुःख जे सांपडे ते पुण्य पापे अनुभव्युं,
जगत जीवो निमित्त मात्रज अनुभवीने अनुभव्युं;
अशुभ कर्त्ता को नहि मुज वैरी नहि कोइ जाणीयुं,
खमुं खमावुं जीवराशि ज्ञान निर्मल आणीयुं. ४

त्रियोगथी अपराध कीधा जगत् जीवोना प्रति,
माफ मागुं तेनी आजे चित्त लावी शुभमति;
लेख लखीने छापीयाने जीव बहु में दुहव्या,
खमुं खमावुं सर्वने हुं मित्र जीवो अनुभव्या. ५

सकळ संघने बहु खमाडुं, वैरभाव विसारजो,

भव्य आराधक खमे ते तत्त्व मनमां धारजो;
महावीर प्रभुनीवचनशैलीपियुष दिलमां धारशो,
क्षमापनाशुभबुद्धिसागर वांची धर्म वधारशो. ६

श्री यशोविजय वाचककृत.

अथ श्री सीमंधरजिन निश्चय व्यवहारगर्भित विनतिरुप स्तवन.

श्री सीमंधर साहिब आगे वीनतीरे,
मन धरी निर्मळ भाव; कीजेरे (२)
लीजे ल्हावो भवतणो रे १

बहु सुख खाणी तुज वाणी परीणमे रे,
जेह एक नय पक्ष; भूल्यारे (२)
ते प्राणी भव रडवडे रे. २

मे मति मोहे एकज निश्चय नय आदर्यो रे,
के एक जे व्यवहार; भेळारे (२)
तुज करुणाएं ओळख्यारे. ३

शिबिका वाहक पुरुष तणीपेरे ते कह्यारे,
निश्चयने व्यवहार; मिळियारे (२)
उपकारी नवि जुजुआरे. ४

बहुळां पण रत्न कह्यां जे एकलां रे,
ते माला न कहाय; माळारे (२)
एक सूत्र जे सांकल्यां रे, ५

तिम एकाकी नय सघळा मिथ्या मतिरे,
मिळियां समकित रुप, कहीयेरे (२)
लहीए संमति सम्मतिरे. ६

दोय पंख विण पंखी जिम नवि चली शकेरे,
जिम रथविण दोय चक्र; न चलेरे (२)
तिम शासन नय बिहु विनारे. ७

शुद्ध अशुद्ध पणुं सरखुं छे बेहुनेरे,
निज निज विषे शुद्ध; जाणोरे (२)
पर विषे अविशुद्धतारे. ८

निश्चय नय परिणाम प्रणामे छे वडोरे,
तेवो नहीं व्यवहार; भाखेरे (२)
कोइक इम ते नवि घटेरे. ९

जेकारण निश्चय नय कारण अछेरे,
कारण छे व्यवहार; साचोरे (२)
कारज साचो ते सहीरे. १०

निश्चय नय मति गुरु शिष्यादिक को नहींरे,
करे न भुंजे कोय; तेथीरे (२)
उन्मारग ते उपदिशेरे. ११

नय व्यवहारे गुरु शिष्यादिक संभवेरे,
तिणे साचो उपदेश; भाख्योरे (२)
भाष्य सूत्र व्यवहारमांरे. १२



ढाळ वीजी.

कोइक विधि जोतां थकांरे, छांडे सवि व्यवहाररे; मन वशीया;
न लहे तुज वचने कह्युंरे, द्रव्यादिक अनुसाररे; गुण रसीया. १

पाठ गीत नृत्यनी कळारे, जिम होय प्रथम अशुद्धरे; मन०
पण अभ्यासे ते खरीरे, तेम क्रिया अविरुद्धरे. गुण० २

मणी शोधक शत खारनारे, जिम पुट सकळ प्रमाणरे; मन०
सर्व क्रिया तिम योगनेरे, पंचवस्तु अहिनाणरे. गुण० ३

प्रीति भक्ति योगे करीरे, इच्छादिक व्यवहाररे; मन०
हीणो पण शिव हेतु छेरे, जेहने गुरु आधाररे. गुण० ४

विप गरळ अनुष्ठान छेरे, हेतु अमृत जिम पंचरे; मन०
किरिया तिहां विप गर कहीरे, इह परलोक प्रंपचरे. गुण० ५

अनुष्टान हृदय विनारे, समूर्च्छिम परे होयरे; मन०
हेतु क्रिया विधि रागथीरे, गुण विनयीने जोयरे. गुण० ६

अमृत क्रियामां जाणीयेरे, दोप नहीं लवलेशरे; मन०
त्रिक त्यजवां दोय सेववांरे, योगबिंदु उपदेशरे. गुण० ७

किरिया भाक्तिए छेदीयेरे, अविधि दोप अनुबंधरे; मन०
तिणे शिवकारण ते कह्योरे, धर्मसंग्रहणी प्रबंधरे. गुण० ८

निश्चयफळ केवळ लगेरे, नवि त्यजीये व्यवहाररे; मन०
चक्री भोग पाम्या विनारे, जिम निज भोजन साररे. गुण० ९

पुन्य अग्नि पातिक दहेरे, ज्ञान सहजे ओल्हायरे; मन०
पुन्य हेतु व्यवहार छेरे, तिणे निरवाण उपायरे. गुण० १०

भव्य एक आवर्त्तमांरे, क्रियावादि सुसिद्धरे; मन०
होवे तिम बीजो नहीरे, दशाचूर्णी सुप्रसिद्धरे. गुण० ११

ईम जाणीने मन धरेरे, तुज शासननो रागरे; मन०
निश्चय परिणती मुनि रहेरे, व्यवहारे वड लागरे. गुण० १२

ढाळ ३ जी

समकित पक्षज कोइक आदरे, किरिया मंद अणजाण;
श्रेणिक प्रमुख चरित्र आगळ करे, नवि माने गुरु आण.
अंतरजामीरे तुं जाणे सवे १

ते कहे श्रेणीक नवि नाणी हुओ, नवि चारित्र प्रधान;
समकीत गुणथीरे जिनपद पामशे, तेहिज सिद्धि निदान. अं० २

ते नवि जाणेरे किरिया खप विना, समकित गुण पण तास;
नरकतणी गति नवि छेदी शके, एह आवश्यके भाष्य. अं० ३

उज्वळ ताणेरे वाणे मेलडे, सोहे पट न विशाळ;
तिम नवि सोहेरे समकित अविरते, बोले उपदेश माळ. अं० ४

विरति विधन पण समकित गुण भर्यो, छेदे पलिय पुहुत्त;
आणंदादिक व्रत धरता कह्यो. समकित साथेरे सूत्र. अं० ५

श्रेणिक सरिखारे अविरति थोडला, जेह निकाचित कर्म;
ताणी आणेरे समकित विरतिने, ए जिन शासन मर्म. अं० ६

ब्रह्म प्रतिज्ञारे विण लव सत्तमा, ब्रह्मव्रती नहीं आप;
अण कीधां पण लागे अविरतें, सहजे सघळांरे पाप अं० ७

एवुं जाणीरे व्रत आदर करे, यतने समकितवंत;
पंडीत मीछेरे थोडे जीम भणे, नावे बोले अनंत. अं० ८

अंधा आगेरे दरपण दाखवो, बहिरा आगेरे गीत;

मूरख आगेरे परमारथ कथा, त्रण्ये एकज रीत. अं० ९
एवुं जाणीरे हुं तुज वीनवुं, किरिया समकित जोडि;
दीजे कीजेरे करुणा अति घणी, मोह सुभट मद मोड. अं० १०

ढाळ ४ थी.

ईणि पेरे में प्रभु वीनव्यो, सीमंधर भगवंतोरे;
जाणुं हुं ध्याने, प्रगट हुं तो, केवळ कमळा कंतोरे;
जयो जयो जगगुरु जगधणी. १

तुं प्रभु हुं तुज सेवको, ए व्यवहार विवेकोरे;
निश्चय नय नहीं अंतरुं, शुद्ध निरंजन एकोरे. जयो० २

जिम जल सकलनदीतणो, जलनिधि जल होय भेळोरे;
ब्रह्म अखंड सखंडनो, तिम ध्याने एक मेळोरे. जयो० ३

तुज आराधन जिणे कर्युं, तसु साधन कुण लेखेरे;
दूर देशान्तर कोण भमे, जे घर सुरमणि देखेरे. जयो० ४

अगम अगोचर कथा, पार कुंणे न लहीएरे;
तिणें तुज शासन इम कहे, बहु श्रुत वयणडे रहीएरे. जयो० ५

तुं मुज एक हृदय वश्यो, तुंहीज पर उपकारीरे,
भरत भविक हित अवसरे, प्रभु मत मुंको विसारीरे. जयो० ६

॥ कळश ॥

इय विमल केवल ज्ञान दिणयर, सकल गुण रयणायरु;
अकलंक अमल निरीह निरमम, वीनव्यो सिमंधरु.
श्री विजयप्रभ सूरी राजे, विकट संकट भय हरो;
श्री नय विजय बुध चरण सेवक, जश विजय बुध जय करो. १



अथ श्री आनंदघनजी महाराजनी कृत योग पद

ता योगे चित लाउं, वाला ता योगे चित लाउं (ए टेक)
समकित दोरी शलि लंगोटी, गुण गणि गांठ लगाउं;
तत्त्व गुफामें दीपक जोवुं, चेतनराय जगाउं. वाला. १
अष्ट कर्म कंदेकी धूनी, ध्यानसे अंग जळाउं;
उपशम भरण भस्म छाणके, मिल मिल अंग लगाउं. वाला. २
आद्य गुरुका चेला होय के, मोहसें कान फराउं;
धर्म शुकल दोय मुद्रा सोहिए, करुणा नाद बजाउं. वाला. ३
अयेसे योग सिंहासन बेसी, मुक्तिपुरिमां जाउं;
आनंदघन अविनाशि आतम, फेर कलिमें न आउं. वाला. ४



श्री यशोविजय वाचककृत.

॥ श्री पञ्चपरमेष्ठि गीता ॥

प्रणमीइं प्रेमस्युं विश्वत्राता, समरीइं सारदा सुकविमाता;
पंच परमेष्ठि गुण थुणण कीजे, पुण्य भंडार सुपरिं भरीजे. ॥१॥

चालि.

अरिहंत पुण्यना आगर गुण सागर विख्यात,
सुरघरथी चवि उपजे चउद सुपन लहे मात;
ज्ञान त्रणें जू अलंकरिया सूरय किरणे जेम,
जनमे तव जनपद हुइं सकल सुभिख बहु प्रेम. ॥२॥

दुहा.

दश दिशा तव होइं प्रगट ज्योति, नरकमांहि पणि होइं खिण उद्योति.
वाय वाइं सुरभि शीत मंद, भूमि पणि मानु पामे आनंद. ॥३॥

चालि.

दिशि कुमरी करे ओच्छव आसन कंपे ईंद,
रण कईरे घंट विमाननी आवे मिलि सुरवृंद;
पंचरुप करि हरि सुरगिरि शिखरें लेई जाई.
न्हवरावई प्रभु भगति क्षीर समुद्र जल ल्याई. ॥ ४ ॥

दुहा.

स्नात्र करतां जगत् गुरु शरीरे, सकल देवैं विमल कलसनीरे;
आपणा कर्ममल दूरि कीधा, तेण ते विबुध ग्रन्थई प्रसिद्धा. ॥५॥

चालि.

न्हवरावी प्रभु मेहलैंरे, जननी पासे देव;
अमृत ठवईरे अंगुठडे, बाल पियै एह टेव.

हंस क्रौंच सारस थई, कानई करई तस नाद;
वालक थई भेला रमे, पूरे बाल्य सवाद. ॥ ६ ॥

दुहा.

वालता अतिक्रमें तरुणभावै, उचितथिति भोग संपत्ति पावै;
दृष्टि कांताई जो शुद्ध जोवैं, भोग पण निर्जरा हेतु होवे. ॥७॥

चालि.

परणी तरुणी मन हरणी घरणीने सोभाग,
शोभा गर्व अभावै घर रहेतां वयराग;
भोग साधन जव छंडे मंडे व्रतस्युं प्रीति,
तव व्यवहार विराजे वयरागी प्रभुनीति. ॥ ८ ॥

दुहा.

देव लोकांतिका समय आवई, लेई व्रत स्वामी तीरथ प्रभावई;
उग्र तप जप करी कर्म गाले, केवली होइ निज गुण संभाले.॥९॥

चालि.

चउत्रीस अतिशय राजता गाजता गुण पांत्रीस,
वाणी गुण मणी खांणी प्रातिहारय अडईस;
मुलातिशय जे च्यार ते सार भुवन उपगार,
कारण दुःख गण वारण भव तारण अवतार. ॥ १० ॥

दुहा.

देह अद्भूत रुचिर रूप गंध, रोगमल स्वेदनो नहीं संबंध (१)
श्वास अति सुरभि(२)गोक्षीर धवल, रुधिरने मांस अणविस्र अ-
मल (३) ॥११॥

चालि.

करइंरे भवथिति प्रभुतणी, लोकोत्तर चमत्कार,

चर्म चक्षु गोचर नहीं जे आहार नीहार; (४)
अतिशय एहज सहजना च्यार धरे जिनराय,
हवे कहइं इग्यार जे होइ गए घनघाय ॥ १२ ॥

दुहा.

क्षेत्र एक योजनमें उच्छाहिं, देवनर तिरिय बहु कोडि माहीं; १
योजन गामिणी वाणी भास्ये, नर तिरिय सुर सुणे नित्य उल्लासें. २ ॥ १३ ॥

चालि.

योजन शत एकमांहि जिहां जिनवर विहरंत,
इति मारि दुरभिक्ष विरोध विराधि नहुंत;
स्वपरमक्र अतिवृष्टि अवृष्टि भयादिक जेह,
ते सवि दूरि पलाये जिम दव वरसत मेह ॥ १४ ॥

दुहा.

तरणि मंडल परे तेज ताजे, पूंठिं भामंडल विपुल राजे; (११)
सुरकृत अतिशय जे १ लहिए, एक उंणा हवे वीस कहीए ॥१५॥

चालि.

धर्मचक्र शुचिचामर वप्रत्रय विस्तार,
छत्रत्रय सिंहासन दुंदुभि नाद उदार;
रत्नत्रय ध्वज उंचो चैत्र द्रुम सोहंत
कनक कमल पगलां ठवे चउ मुह धर्म कहंत ॥ १६ ॥

दुहा.

वायु अनुकूल सुखमल वाये, कंटका उंध सुख सकल थाए;
स्वामी जबथी व्रत योग साधे, केश नख रोम तबथी न वाधे.
(१३) ॥ १७ ॥

चालि.

कोडि गमे सुर[१४] सेवे, पंखि प्रदक्षण दंति (१५)
ऋतु[१६] अनुकूल कुसुमभर गंधोदक[१७] वरसंति;
विषय सर्व शब्दादिक नवि होवे प्रतिकूल (१८)
तरु पण सवि शिरनामे जिनवरने अनुकूल (१९) ॥१८॥

दुहा

हवे कहुं जे पण तीस वाणी, गुण सकल गुण तणी जेह खाणी;
प्रथम गुण जेह संस्कारवंत (१)उदात्त गुण अपर (२) सविहुणे संत, ॥१९॥

चालि.

शब्द गंभिरपणुं जिहां (३) वली उपचारोपेत (४)
अनुनादित्व (५) सरलता (६) उपनीत राग समेत (७)
शब्दातिशय ए साते, अर्थातिशय हवे जोय,
महार्थता (८) अव्याहता[९], शिष्टपणुं[१०] गुण होय ॥ २० ॥

दूहा.

गुण असंदिग्ध[११] विगतोत्तरत्व[१२] जनहृदय गामि[१३] गुण मधुरवत्त्व,
पूर्व अपरार्थ साकांक्ष[१४] भाव नित्य प्रस्ताव उचित[१५] स्वभाव ॥२१॥

चालि.

तत्त्वनिष्ठ[१६] अप्रकीर्ण प्रसृत[१७] निज श्लाघा अन्य निंद रहित[१८],
अभिजात[१९] मधुर अने स्निग्ध[२०],
ते धन्य[२१] मर्म न वेधइ[२२], उदार[२३] त्रिवर्ग विषय प्रतिबद्ध[२४],
कारकादिक अविपर्यय[२५] विभ्रम रहित सुबद्ध (२६) ॥२२॥

दुहा.

चित्रकर[२७] अद्भूतता[२८] रति अनति अविलंब (२९)
जाति सु विचित्र (३०) सु विशेष बिंब (३१)
सत्त्व पर (३२) वर्ण पद वाक्य शुद्ध (३३)
नहिय विच्छेद (३४) खेदे न रुद्ध (३५) ॥ २३ ॥

चालि.

इम पांत्रिस गुणे करी वाणी वदे अरिहंत,
सर्व आयु जो कोइ सुणे तो नहीं भुख न अंत;
रोग शोग न जागे लागे मधुर अत्यंत,
इहां आवश्यक भाष्ये किवि दासी दृष्टांत ॥ २४ ॥

दुहा.

देव दुंदुभि[१] कुसुम[२] वृष्टि छत्र[३], दिव्य[४] ध्वनि चामर[५] आसन पवित्र[६];
भव्य भामंडल[७] द्रुम अशोक[८] प्राति हारय हरे आठ शोक ॥ २५ ॥

चालि.

रागादिक जे अपाय ते विलय गया सविदोष (१)
उग्यो ज्ञान दिवाकर (२) जय जय हुओ जगघोष;
वाणी कुमति कृपाणी (३) त्रिभुवन जन उपचार (४)
पामे जन जे व्यापक मूलातिशय ए च्यार. ॥२७॥

दुहा.

महा माहण महा गोपनाह, महा निर्यामक महा सार्थवाह;
बिसद महा कथित तणुं जे धरंत, तेहना गुण गणे कुण अनंत ॥२७॥

चालि.

पुण्य महातरु फळदल, किसलय गुण ते अन्य,
अन्य ते क्षायिक संपति, उपकारे करी धन्य;

क्षीर नीर सुविवेकए, अनुभव हंस करेइ,

अनुभववृत्ति रे राचे, अरिहंत ध्याने धरेई. ॥ २८ ॥

दुहा.

बुद्ध अरिहंत भगवंत भ्राता, त्रिश्वा विभु शंभु शंकर त्रिधाता;

परम परमेष्ठि जगदीश नेता, जिन जगन्नाथ घनमोह जेता.॥२९॥

चालि.

मृत्युंजय विषजारण जग तारण ईशान,

महादेव महाव्रतधर महा ईश्वर महा ज्ञान;

विश्वबीज ध्रुवधारक पालक पुरुष पुराण,

ब्रह्म प्रजापति शुभमति चतुरानन जगभाण ॥ ३० ॥

दुहा.

भद्र भव अंतकर शत आनंद, रुमन कवि सात्विक प्रीतिकंद;

जगपिता महानंदवापी, स्थविर पद्माश्रय प्रभु अमायी.

चालि.

विष्णु जिष्णु हरि अच्युत पुरुषोत्तम श्रीकंत,

विश्वंभर धरणीधर नरकतणो करे अंत;

ऋषी केशव बलिसूदन गोवर्धन धरधीर,

विश्वरूप वनमाली जलशय पुण्य शरीर ॥ ३२ ॥

दुहा.

आर्य शास्ता सुगत वीतराग, अभयदाता तथागत अनागत;

नाम इत्यादि अवदात जास, तेह प्रभु प्रणमतां दिओ उल्लास॥३३॥

चालि.

नमस्कार अरिहंतने, वासित जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत पुण्यने, जीवित तास पवित्तः
आर्तध्यान तस नवि हुए, नवि हुए दुरगति वास,
भव क्षय करतारे समरतां, लहिए मुकति अभ्यास. ॥३४॥

दुहा.

आत्मगुण सकल संपद समृद्ध, कर्मक्षय कारि हुआ जेह सिद्ध;
तेहनुं शरण कीजइं उदार, पामीइं जेम संसार पार. ॥ ३५ ॥

चालि.

समकित[1] आतम स्वच्छता केवल[2] ज्ञान अनंत,
केवल[3] दर्शन वीर्य[4] ते शक्ति अनाहत तंत;
सूक्ष्म[5] अरूप अनंतनी अवगाहन[6] जळ्यां काठ,
अगुरु[7] लघु अव्याबाधए[8] मगळ्या शुचि गुण आठ ॥३६॥

दुहा.

सर्व शत्रु क्षये सर्व रोग, विगमथी होत सर्वार्थ योग;
सर्व इच्छा लहे होइं जेह, तेहथी सुख अनंतो अछेह. ॥ ३७ ॥

चालि.

सर्व काल संपंडित सिद्ध तणा सुखराशि,
अनंत वर्गनें भागे माए न सर्व आकाश;
व्याबाधा क्षय संगत सुख लव कल्पे राशि,
तेहनो एहन समुदय एहनो एक प्रकाश. ॥ ३८ ॥

दुहा.

सर्व काला कलणणंत वग्ग, भयण आकाश अणुमाण सग्ग;
शुद्ध सुहणं तणं तथ्थ देशी, राशि त्रिणे अणंते विशेसी. ॥३९॥

चालि.

काल भेद नहि भेदक शिव सुख एक विशाल,
जिम धन कोडिनी सत्ता अनुभवतां त्रिहु काल;
कोडि वरनारे आजना सिद्धमां नहीं दोइ भांति
जाणे पण न कहे जिनजिम पुरगुण भिल्ल जाति. ॥४०॥

दुहा.

जाणंतो पण नगर गुण अनेक, भीलनी पालमांहि भील एक;
नवि कहे विगर उपमान जेम, केवली सिद्ध सुख इत्थ तेम ॥४१॥

चालि.

अश्व वाहने कांइ चाल्योरे नरपति सुरपति रूप,
एक विवेक विराजे ए वीजे ए साज अनूप;
अश्वे अपहृत सैन्य ते छोडी दोडी जाय,
पालिने परिसरि मेल्ही ते वेठो एक तरु ठाय ॥ ४२ ॥

दुहा.

एक ते भील अविनीत तुरगइं कष्ट उपनीत क्षुह तरस लगइं;
म्लान मुख देखीओ भील एके तेह पण चमकीओ तास टेके ॥४३।

चालि.

एक एकने देखेरे न विशेषे नीज रुप,
एक सुवर्ण अलंकृत एक ते काजल कूप;
टग मग जोइरे पशु परिभाषा नवि समझाय,
अनुमाने जल आणिओ भील लेइ नृपते पाय ॥४४॥

दुहा.

मधूर फूल आणी नृपने चखावे, चित्तने प्रेम परि परि सिखावे,
बंधु पितृ मातृथी आधिक जाण्यो, भील ते भूपति चित्त आण्यो४५

चालि.

एतलें आवीरे सेना पगिं पगिं जोती मग्ग,
गर्जित गज हेषीत हयरथ पादातिक वग्ग;
वाजांरे वागां जितिनां छांटणां केसर घोळ,
ओछवरंग वधामणां नव नव हुआ रंग रोळ. ॥ ४६ ॥
वंदिजन छंदस्यूं विरुल वोले, कोइ नहीं ताहरे देव तोले;
थेइ थेइ करत नाचे ते नटुआ, गीत संगीत प्रधान पटुआ॥४७॥

चालि.

आगे धरिआरे मोदक मोदकरण सुप्रवंध,
दिव्य उदक वळि आण्यां शीतल सरस सुगंध;
नृप कहे भील आरोगे, ते मुज आवे भोग,
वेचातो हुं लीधो, इण अवसरिं संयोगे ॥ ४८ ॥

दुहा.

वस्त्र अलंकार तेहने पहिराव्यां मूळगां तूच्छ अंवर छोडाव्यां;
दिव्य तांवूल भृत मुख ते सोहे, विजय गजराज साथे आरोहे ४९

चालि

कोइ आरोह्यारे वारण ढमक्यां ढोल निसाण,
नादें अंवर गाजे साजे सवल मंडाण;
नगर प्रवेश महोच्छव अचरिज पामे रे भील,
जाणे हुं सरगमां आविओ राखी तेहज डील. ॥ ५० ॥

दुहा.

देखी प्राकार आकार हरख्यो, नगरनो लोक सुरलोक परख्यो;
आपण श्रेणि वेठा महेभ्य, मानिआ सुगण गणराज सभ्य. ॥५१॥

चालि.

पहरीरे पीत पटोळी ओळी केश पुनीत,

भंभर भोली टोली मिलि मिलि गावत गीत;
दामिनी परि चमकंतीरे कामिनी देखे सनूर,
भाल तिलक मिसि विभ्रम जीवित मदन अंकुर. ॥ ५२ ॥

दुहा.

देखीया राय राणा सतेजह, ऋद्धिनो पार नहिं हुओ तेह;
भूप निज सदन पुहतो उल्लास, भीलने दिद्ध सनमुख अवास.॥५३॥

चालि.

भोजन शयन आच्छादन गंध विलेपन अंग,
खबर लीए नृप तेहनी नव नव केलवे रंग;
आघे बोले ते सवी करे, मनि धरे तेहजे काज,
कचमिस अपयश ते गणे, जे नवि दीधुं राज. ॥ ५४ ॥

दुहा.

दीवस सुख मानतां तासवीता, केतला रंग रमतां विचिंता;
एकदा आवीओ जलद काल, पंथिजन हृदयमां देतफाळ. ॥५५॥

चालि.

कृत सुनिशम परिहारा हारावली दिस भाग,
प्रकटित मोर किंगारा विरचित दारा राग;
विरहणि मन अंगारा धाराधर जलधार,
वरषत निरखित उपनो तस मनमांहि विकार ॥५६॥

दुहा.

सांभर्यो दिवसगिरि भूमि फिरतां, देखतां ठाम नीझरण झरतां;
सांभळी मोर किंगार करतां, सुख लह्यां नीपस्युं सीस धरतां॥५७॥

चालि.

जन्म भूमि ते सांभरी रोयो करी पोकार,
धाइ आव्यो नृप कहे ते, तुजने कवण प्रकार;

ते कहे जे तुम्हं सुखदीआं, मुज होए दुःख परिणाम.
वंधु विरह जोटालो, फिरि आवुं तुम ठाम. ॥ ५८ ॥

दुहा.

बोले ऋेइ मोकले तेह राजा, वंधु मिल्यिा हुया सुख दिवाजाः
एकदा नगर वृत्तान्त पूछे, कहोने ते केहवुं तहां किस्युं छे. ॥५९॥

चालि.

इहांथी तिहां ऋद्धि विमणी, त्रिगुणी चोगुणी मित्त;
ते कहे इंदुने विंदुने वर्ण सगाइ मित्त,
उपमा विण न कही शके, जिम ते पुरनो भाव;
तिम जिन पण न देखावे, इहां शिव सुख अनुभाव ॥६०॥

दुहा.

तोहि पण अतिं निरावाध सठ सुख अधिक व्यंतरादिक ते हेठी,
जाव सत्य (सर्वार्थे) शिव सुखथी जाणुं,वीतरागे कह्युं ते प्रमाणुं ६१

चालि.

संपूरण सूरनर सुख काल त्रय संवद्ध,
अनंत गुण शिव सुख अंश अनंत वरग नविलद्ध,
सिद्ध सरसु सुख सरिआ विस्तरि निज गुणतावार;
शीतळ भाव अतुल वर्या ज्ञान भर्या भंडार ॥ ६२ ॥

दुहा.

सिद्ध[१] प्रभु[२] बुध्ध[३] पारग[४] पुरोग[५], अमल[६] अकलंक[७] अन्वय[८] अरोग[९];
अजर[१०] अज[११] अमर[१२] अक्षय[१३] अमाइ[१४], अनघ[१५] अक्रिय[१६] असाधन[१७] अयाइ[१८]६३

चालि.

अनवलंव[१९] अनुपाधि[२०] अनादि[२१] असंग[२२] अभंग[२३],
अवश[२४] अगोचर[२५] अकरण[२६].अचल[२७] अगेह[२८] अनंग[२९];

३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
अश्रित अजित अजेय अमेय अभार अपार,
३६ ३७ ३८ ३९ ४०
अपरंपर अजरंजर अरह अलेख अचार ॥ ६४ ॥

दुहा.

४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८
अभय अविशेष अविभाग अमित अकल असमान अविकल्प अकृत
४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५
अदर अविधेय अनवर अखंड अगुरुलघु अच्युताशय अदंड ॥६५॥

चालि

५६ ५७ ५८ ५९
परमपुरुष परमेश्वर परमप्रभाव प्रमाण;
६० ६१ ६२ ६३
परमज्योति परमातम, परमशक्ति परमाण;
६४ ६५ ६६ ६७
परमबंधु परमोज्वल ,परमवीर्य परमेश;
६८ ६९ ७० ७१
परमोदय परमागम, परम अव्यक्त अदेश. ॥ ६६ ॥

दुहा.

७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७
जगमुगुट जगतगुरु जगततात, जगतिलघु जगतमणि जगतभ्रात;
७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३
जगतशरण जगकरण जगतनेता, जगभरण शुभवरण जगतजेता.।६७।

चालि.

८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९
शांत सदाशिव निर्वृत, मुक्त महोदय धीर;
९० ९१ ९२ ९३
केवल अमृत कलानिधि, कर्मरहित भवतीर;
९४ ९५ ९६ ९७
प्रणवबीज प्रणवोच्चर, प्रणवशक्ति शृंगार.
९८ ९९ १००
प्रणवगर्भ प्रणवांकित, यक्षपुरुषआधार. ॥ ६८ ॥

दुहा.

दर्शनातीत दर्शन प्रवर्ती, नित्यदर्शन अदर्शन निवर्ती;
बहुनमन नम्य जगतनत-अनाम, सिद्धना हुंति इत्यादि नाम.॥६९॥

चालि.

नमस्कार ते सिद्धने, वासित जेहनुं चित्त,
धन्य ते कृत पुण्य ते जीवित्त तास पवित्त;
आर्तध्यान तस नवी हुइं, नवि हुइं दुरगतिवास,
भवक्षय करतांरे समरतां लहिइं सुकृत उल्लास. ॥७०॥

दुहा.

पद तृतीये ते आचार्य नमीए, पूर्व संचित सकलपाप गमिए;
शासनाधार शासन उल्लासी, श्रुतबले तेह सकल प्रकाशी. ॥७१॥

चालि.

कहिइं मुगति पधार्यारे, जिनवर दाखी पंथ,
धरेइंरे आचार्य आर्यनीति प्रवचन निग्रंथ;
मूरख शिष्यने शिखवी, पंडित करेरे प्रधान,
ए अचरिज पापाणे, पल्लव उदय समान. ॥ ७२ ॥

दूहा.

भाव आचार्य गुण अति प्रभूत, चक्षू आलंबन मेढि भूत;
ते कहिओ सूत्रें जिनराय सरिखो, तेहनी आणमत कोई परखो ।७३

चालि.

सुबहुश्रुत कृतकर्मा धर्माधार शरीर,
निज पर सम व्यवहारी, गुण धारी व्रतधीर;
कुत्तिया वण सम हवा आचारय गुणवंच,
ते आराध्ये आराध्या जिन वलि अनिंद्य. ॥ ७४ ॥

दुहा.

चउद पडिरूव पमुहा उदार, खंति पमुहा विंशद दस प्रकार;
बार गुण भावनाना अनेरा, पद छत्रिस गुण सूरि केरा. ॥७५॥

चालि

प्रतिरूप तेजे सुरूपी, तेजस्वी बहु तेज,
युग प्रधान ततकालई, वर्तना सूत्रस्यूं हेज।
मधुर वाक्य मधुभाषी, तुच्छ नहीं गंभीर,
धृतिमंत ते संतोषी, उपदेशक श्रुत धीर. ॥ ७६ ॥

दुहा.

नवि झरे मर्म ते अपरिश्रावी, सौम्य संग्रह करे युक्ति भावी;
अकल अविकत्थने अचलशांत,चौद गुण ए धरे सूरि दांत ।७७॥

चालि.

धर्म भावना विश्रुत इम छत्रीसी छत्रीस,
गुण धारे आचारय तेह नमुं निसदीस;
आचारय आणा विण न फले विद्यामंत,
आचारय उपदेसइं सिद्धि लही जइं तंत. ॥ ७८ ॥

दुहा.

द्रह हुए पूर्ण जो विमल नीरे, तो रहे मच्छ तिहां सुख शरीरे;
एम आचार्य गणमांहि साध, भाव आचार अंगि अगाध. ॥७९॥

चालि.

आणा कुणनीरे पालीइं, विण आचारय टेक,
कारणि त्रिक पणि जिहां हुइं तिहां आचारय एक;
श्रुत पडिवत्तीमां पणि आचारय समरथ,
जिन पणि आचारय हुइं तव दाखे श्रुत अत्थ.

दुहा.

सूरि[1] गणधर[2] गणी[3] गच्छधारी[4], सुगुरु[5] गणिपिटक[6] उद्योतकारी[7];
अत्यधर सत्यधर[8] सदनुयोगी[9], शुद्ध अनुयोगकर[10] ज्ञान भोगी[11] ॥८१॥

चालि.

[१२]अनुन्वान [१३]प्रवचनधर आणा [१४]इसर देव,
[१५]भट्टारक [१६]भगवान [१७]महामुनि [१८]मुनिकृत सेव;
गच्छ [१९]भारधर [२०]सद्गुरु [२१]गुरुंगण [२२]युक्त अधीश,
[२३]गणि [२४]विद्याधर [२५]श्रुतधर शुभ [२६]आश्रय जगीश. ॥ ८२ ॥

दुहा.

नाम इत्यादि जस दिव्य छाजे, देशना देत घन गुहिर गाजे;
जेहथी पामीइं अचल धाम, तेह आचार्यने करुं प्रणाम॥ ८३ ॥

चालि.

आचारय नमुक्कारे वासित जेहतुं चित्त,
धन्य तेह कृत पुण्य ते जीवित तास पवित्त,
आर्तध्यान तस नवि हुइं, नवि हुइं दुरगति वास,
भव क्षय करतांरे समरतां, लहिइं सुकृत उल्लास ॥८४॥

दुहा.

पद चउत्थे तें उवजझाय नमिए, पूर्व संचित सकल पाप गमिए;
जेह आचार्य पद योग्य धीर,सुगुरु गुण गाजता अति गंभीर.॥८५॥

चालि.

अंग ईग्यार ऊदार अरथ सुचि गंग तरंग,
वार्त्तिक वृत्ति अध्ययन अध्यापत बार उपांग;
गुण पंचवीस अलंकृत सुकृत परम रमणीक,
'श्री उवज्झाय नमी जे, सूत्र भणावे ठीक. ॥ ८६ ॥

दुहा.

सूत्र भणीई सखर जेह पासे, ते उपाध्याय जे अर्थ भासे;
तेह आचार्य ए भेद लहीए, दोईमां अधिक अंतर न कहीए.॥८७॥

चालि.

संग्रह करत उपग्रह निज विषये शिव जाय,
भव त्रीजे उत्कर्षथी आचारय उवझाय;
एक वचन इहां भाषओ भगवई वृत्ति लेई,
एकज धर्मी निश्चय व्यवहारे दोई भेई. ॥ ८८ ॥

दुहा.

सूरी उवज्झाय मुनि भावि अप्पा, गुण थकि भिन्न नहीं जेमहप्पा;
निश्चय ईम वदे सिद्धसेन, थापना तेह व्यवहार देन ॥८९॥

चालि.

वृत्ति सुत्त उवओगेइं करण नइं अर्थि सद्द,
झायति झाणइं पूरइं आतम नाणनी हद्द;
पणि निरुक्ति उवज्झाय प्राकृत वाणि प्रसिद्ध,
आवश्यक निर्युक्तइं भाख्यो अर्थ समृद्ध ॥ ९० ॥

दुहा.

भाव अध्ययन अज्झयण एणें, भाव उवज्झाय तिम तत्त्व वयणें;
जेम श्रुत केवली सयल नाणे, व्यवहृतिं निश्चइं अप्पझ्झाणे ॥९१॥

चालि.

संपूरण श्रुत जाणे श्रुत केवलि व्यवहार,
गुणद्वाराए आत्मद्रव्यनो ज्ञान प्रकार;
श्रुतथी आतमा जाणे केवल निश्चय सार,
श्रुत केवली परकाशे तिहां नहीं भेदवयार ॥ ९२ ॥

दुहा.

जोडीए जवही ते ते उपाधे, तवही चिन्मात्र केवल समाधे;
तेह उवझाय पदने विचारे, तेहइ एक दीप छे जगमझारे ॥९३॥

चालि.

उपाध्याय[1] गुरु[2] वाचक[3] पाठक[4] साधक[5] सिद्ध,
करग[6] झरग[7] अध्यापक[8] कृतकर्मा[9] श्रुतवृद्ध[10];
शिक्षक[11] दिक्षक[12] थविर[13] चिरंतन[14] रत्न[15] विशाळ,
मोहजयी[16] पारिच्छक[17] जित परिश्रम[18] वृतमाल[19] ॥ ९४ ॥

दुहा.

साम्यधारी[20] विदित पद[21] विभाग, कुत्तियावण[22] विगत द्वेष[23] राग।
अप्रमादी सदा निर्विषादी, अध्ययानंद आतम प्रमादी. ॥९५॥

चालि.

नाम अनेक विवेक विशारद पारद पुन्य,
परमेश्वर आज्ञायुत गुण सुविसुद्ध अगण्य;
नमीए शासन भासन पति पावन उवज्झाय,
नाम जपतां जेहनुं नव निधि मंगळ थाय, ॥९६॥

दुहा.

नित्य उवज्झायनुं ध्यान धरता, पामीए सुख निज चित्त गमता;
हृदय दुर्ध्यान व्यंतर न बाधे, कोइ विरुओ न वयरी विराधे॥९७॥

चालि.

नमस्कार उवज्झायने वासित जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत्य पुन्य ते, जीवत्त तास पवित्त;
आर्त ध्यान तस नवि हुए, नवि हुए दुरगंति वास,
भवक्षय करतां समरतां, लहिए सुकृत उल्लास. ॥ ९८ ॥

दुहा.

शिव पदालंब समरथ बाहु, जेह छे लोकमां सव्व साहू;
प्रेमथी तेहनुं शरण कीजे, भेद नवि चित्र रीते गणी जे ॥ ९९ ॥

चालि.

कर्म भूमि पन्नर वर भरतैरवत विदेह,
क्षेत्रमां पंकज नेत्र जे साधु अमाय निरेह;
एक पूजे सवि पूजीआ निंदिआ निंदि एक,
सम गुण ठाणारे नाणी ए पद सर्व विवेक. ॥ १०० ॥

दुहा.

लोक सन्ना त्रमी धर्म धारे, मुनि अलौकिक सदा दस प्रकारे;
लाभ अणलाभ मानापमान, लेखवे लोष्टुं कांचन समान. ॥ १०१॥

चालि.

खंती अज्जव मद्दव मुत्ती पण तस मर्म,
ते उवयार वयार विवाग वचन वळी धर्म;
लौकिक त्रिण्य लोकोत्तर छई छई ते तस होई,
छठ्ठु गुण ठाणु भव अटवी लंघण जोई. ॥ १०२ ॥

दुहा.

तप नियाणे रहित तस अखेद, शुद्ध संयम धरे सतर भेद;
पंच आश्रव करण चउ कषाय,दंड त्रिक वर्जने शिव उपाय.।१०३॥

चालि.

गुरु सूत्रानुज्ञाए हितमीत भाषण सत्य,
पापच्छित जळे मळगालन शौच विचित्त;
पंखी उपमाए धर्मोपकरण जे धरंत,
तेह अकिंचन भाव छे तेने मुनिराय महंत ॥ १०४ ॥

दुहा.

वंभमण विचितणु फरिसरूप, सद्दमण त्यज तप वियारकूव;
वंभमण विचि वंभे जे भाखी, ते क्षयोपशम गानि सूत्र दाखी॥१०५॥

चालि.

ब्रह्मचारीए ब्रह्म कह्यो सघळो आचार,
तिहां मनवृत्ति प्रतिज्ञा क्षय उपशम विस्तार;
ते विण बंभ अणुत्तर सुरने नवि हुए तंत,
मन विरोध पण शुद्ध ते बंभ कहे भगवंत ॥१०७॥

दुहा.

एम दस धर्म पाळे विचित्र, मूळ उत्तरे गुणे मुनि पवित्र;
भ्रमर परिं गोचरी करीय भूंजे, शुद्ध सज्झाय अहर्निश प्रजूंजे॥१०७॥

चालि.

क्लेप नासिनी देशना देत गणे न प्रयास,
असंदीन जिम द्वीप तथा भविजन आश्वास;
तरण तारण करुणापर जंगम तीरथ सार,
धन धन साधु सुहंकर गुण महिमा भंडार. ॥ १०८ ॥

दुहा.

सम अनाबाध सुखना गवेषी, धर्ममांहि थिर हृदय हित उल्लेखी;
एहवा मुनिनुं उपमान नाहि, दैत्य नर सुर सहित लोकमांहि॥१०९॥

चालि.

षट व्रत काय छ रक्षक निग्रहे इंद्रि न लोभ,
खंती भाव विसोही पडि लेहण थिर शोभ;
अशुभ रोध शुभ योग करण तप शुद्धि जगीश;
सीतादिक मरणांतिक सहे गुण सत्तावीश. ॥ ११० ॥

दुहा.

मुनि महानंद अर्थी सन्यासी, भिक्षु निग्रंथ आतम उपासी,
मुक्त माहण महात्मा महेशी, दान्त अवधूत निति शुद्ध लेशी. १११

चालि.

शान्त वहक वर अशरण शरण महाव्रत धार,
पाखंडी अर्थ खंडी दंड विरत अणगार।
लूह अभव तीरथी, पूर्ण महोदय काम,
अबुद्ध जागरिका जागर शुद्ध अध्यातम धाम ॥ ११२ ॥

दुहा.

जेष्ठ सुत जिन तणो उर्ध्व रेता, उन्मती भाव भावक प्रवेता;
अनुभवी तारक ज्ञानवंत, ज्ञान योगी महाशय भदंत ॥ ११३ ॥

चालि.

तत्त्वज्ञानी वाचंयम गुप्तेंद्रिय मन गुप्त,
मोहजयी रुपि शिक्षित दीक्षित काम अलुप्त;
गोप्ता गोपति गोप अगोप्य अकिंचन धीर,
सर्व सह समता मय निःप्रति कर्म शरीर ॥ ११४ ॥

दुहा.

श्रमण कृति द्रव्य पंडित पुरोग, अगर अविधानजुष्ठान रोग;
अमृत तद्धेतु किरिया विलासी, वचन धर्म क्षमा शुभ अभ्यासी.११५

चालि.

शुकल शुकल अभिजात्य अनुत्तर उत्तर शर्म,
मग्न अतंत्र अतंद्रिय मुद्रित करण अकर्म;
दीर्ण मात संतीर्ण समान ते संख्य प्रधान,
प्रति संख्यान विचक्षण प्रत्याख्यान विधान ॥ ११६ ॥

दुहा.

नाम इत्यादि महिमा समुद्र, साधु अकलंकना छे अमुद्र;
सर्व लोके जिके ब्रह्मचारी तेहने प्रणमीए गुण संभारी. ॥११७॥

चालि.

श्री नवकार समो जगि मंत्र न यंत्र न अन्य,
विद्या नविऔषध नवि एह जपे ते धन्य;
कष्ट टल्यां वहु एहने जापे तुरत किद्ध,
एहना वीजनी विद्या नमि विनमीने सिद्ध ॥ १२० ॥

दुहा.

सिद्ध धर्मास्तिकायादि द्रव्य, तिमज नवकार ए भणे भव्य;
सर्वश्रुतमां वडोए प्रमाण्यो, महानिसीथे भली परिवखाण्यो॥१२१॥

चालि.

गिरिमांही जेम सुरगिरि तरुमांहि जिम सुरसाल,
सार सुगंधमां चंदन नंदन वनमां विशाल;
मृगमां मृगपति खगपति खगमां तारा चंद्र,
गंगनदीमां अनंग सुरुपमां देवमां इंद्र. ॥ १२२ ॥

दुहा.

जिम स्वयंभूरमरण उदधिमांहि, श्री रमण जिम सकल सुभटमांहि;
जिम अधिक नागमांहि नागराज, शद्धमां जलद गंभीरगाज॥१२३॥

चालि.

रसमांहि जिम इखुरस कुलमां जिम अरविंद,
औषधमांहि सुधा वसुधा धवमां रघुनंद;
सत्यवादीमां युधिष्ठिर धीरमां ध्रुव अविकंप,
मंगलमांहि जिम धर्म परिच्छद सुखमां संप ॥ १२४ ॥

दुहा.

धर्ममांहि दया धर्म मोटो, ब्रह्मव्रतमांहि वज्जर कछोटो;
दानमांहि अभयदान रुडुं, तपमांहि जे कहेवुं न कुडुं. ॥ १२५ ॥

चालि.

रतनमांहि सारो हीरो नीरोगी नरमांहि,
शीतळमांहि उसीरो, धीरो व्रत धरमांहि;
तिम सर्व मंत्रमां भाख्यो श्री नवकार,
कह्या न जायेरे एहना, जे छे बहु उपकार ॥ १२६ ॥

दुहा.

तजे ए सार नवकार मंत्र, जे अवर मंत्र सेवे स्वतंत्र;
कर्म प्रतिकूल बहुल सेवे, तेह सुरतरु त्यजी आप देवे. ॥ १२७ ॥

चालि.

एहने बीजेरे वासित होइं, उपासित मंत,
बीजो पणि फळदायक, नायक छे ए तंत;
अमृत उदधि फु सारासारा हरत विकार,
विषना ते गुण अमृतनो, पवननो नहींरे लगार. ॥ १२८ ॥

दुहा.

जेह निर्बीज ते मंत्र जूठा, फळे नहीं साहमुंहुइ अपुठा;
जेह महामंत्र नवकार साधे, तेह दोए लोक अलवे आराधे.॥१२९॥

चालि.

रतनतणी जिम पेटी भार अल्प बहु मूल,
चौद पूरवनुं सार छे मंत्र ए तेहने तूल;
सकल समय अभ्यंतर ए पद पंच प्रमाण,
महसुअखंध ते जाणो, चूला सहित सुजाण. ॥ १३० ॥

दुहा.

पंच परमेष्ठि गुण गण प्रतीता, जिन चिदानंद मोजे उदीता;
श्री यशोविजयवाचक प्रणीता, तेह ए सार परमेष्ठी गीता.

इति श्री पंचपरमेष्ठि गुणवर्णन गीता समाप्ता.

श्री यशोविजय वाचककृत.

पार्श्वनाथ भाव पूजा स्तवनम्.

पूजाविधिमांहे भावीएजी, अंतरंग जे भाव.
ते सवि तुज आगळ कहुंजी, साहेब सरल स्वभाव:
सुहंकर अवधारो प्रभु पास—ए टेक. ॥ १ ॥

दातण करतां भावीएजी, प्रभु गुण जल मुख शुद्ध:
उल उतारी प्रपंचनाजी, हो मुज निर्मल बुद्ध. सुहं ॥२॥
मननाए न्हान करीजेएजी, काढो मयल मिथ्यात;
अंगुछे अंग शोषवीजी, जाणुं हुं अवदात. सुहं ॥३॥
क्षीरोदकना धोतीआंजी, चिंतवो चित्त संतोष;
अष्ट कर्म संवर भलांजी, आठ पडो मुखकोष. सुहं ॥४॥
ओरसीयो एकाग्रताजी, केसर भक्ति कचोळ:
श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोळ रंगरोळ. सुहं ॥५॥
भाल (बहु) प्रभु आणा भलीजी, तिलकतणो ते भाव;
जे आभरण उतारीएजी, ते उतार्या परभाव. सुहं ॥६॥
जे निरमाल्य उतारीएजी, तेतो चित्त उपाध;
पखाल करतां चिंतवोजी, निर्मल चित्त समाधि. सुहं ॥७॥
अंगलूहणां बे धरमनांजी, आतमस्वभाव जे अंग;
जे आभरण पहेरावीएजी, ते स्वभाव निज संग. सुहं ॥८॥
जे नववाड विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग;
पंचाचार विशुद्धताजी, तेह फूल पंचरंग. सुहं ॥९॥
दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञानदीप सुप्रकाश;

नयादि घृत पूरीयोजी, तत्त्व पात्र सुविशाल. सुहं ॥१०॥

धूपरूप अतिकार्यताजी, कृष्णागरु जोग शुद्ध;
वासना मद महमहेजी, तेतो अनुभव योग. सुहं ॥११॥

मद स्थानक अड छांडवाजी, तेह अष्ट मंगलीक;
जे नैवेद्य निवेदीए, ते मन निश्चल ठीक. सुहं ॥१२॥

लवण उतारी भावीएजी, कृत्रिम धर्मनो त्याग;
मंगल दीवो अति भलोजी, शुद्ध धरम परभाग. सुहं ॥१३॥

गीत नृत्य वादीत्रनोजी, नाद अनहद सार;
समरति रमणी जे करीजी, ते साचो थेइकार. सुहं ॥१४॥

भावपूजा एम भावीएजी, सत्य बनावोरे घंट;
त्रिभुवन मांहे ते विस्तरेजी, टाळे करमनी फाट. सुहं ॥१५॥

इणिपरे भावना भावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न;
जनम सफल जग तेहनोजी, तेह पुरुष धन्य धन्य. सुहं ॥१६॥

परम पुरुष प्रभु सांमळाजी, मानो ए मुज सेव;
दूर करो भव आमळाजी, वाचक जश कहे देव. सुहं ॥१७॥



रुषभजिन स्तवनम्.

ढाळ कडखानी.

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भळो,
गुणनिलो जेण तुं नयन दीठो;
दुःख टळ्यां सुख मिल्यां देव तुज निरखतां,
सुकृत संचे हुवो पाप नीठो. ऋषभ. ॥१॥

कल्प साखे फल्यो कामघट मुज मिल्यो,
आंगणे अमियना मेह वुठा;
मोह महिराण महिभाण तुज दरसणे,
क्षय गया कुमति अंधार जूठा. ऋषभ. ॥२॥

कवण नर कनक मणि छोडि तृण संग्रहे,
कवण कुंजर तजी करह लेवे;
कवण वेसे तजी कल्पतरु वावले,
तुज तजी अवर सुर कोण सेवे. ऋषभ. ॥३॥

एक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा,
तुज विना देव दूजो नही हुं;
तुज वचन राग सुखसागरे झीलतां,
कर्मभर धर्मथी हुं न वीहुं. ऋषभ. ॥४॥

कोडि छे दास प्रभु ताहरे भलभला,
माहरे देव तुं एक प्यारो;
पतित पावन समो जगतनो धारि कर,
मेहर करि मोहि भवजलधि तारो. ऋषभ. ॥५॥

मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वशी,

जेहसो सबल प्रतिबंध लागो;
चमक पाषाण जिम लोहने खेंचश्ये,
मुक्तिने सहज तुम्ह भक्ति रागो. ऋषभ ॥६॥

गुण अनंते सदा तुझ खजानो भर्यो,
एक गुण देत मुझ श्युं विमासो;
रयण एक देत शी हाण रयणायरे,
लोकनी आपदा जेण नासो. ऋषभ ॥७॥

धन्य जे काय जिण पाये तुझ प्रणमीए,
तुझ थुणे जेह धन्य धन्य जीहा;
धन्य हृदय जिणे तुझ सदा समरीए,
धन्य जे रातजे ! धन्य दीहा. ऋषभ ॥८॥

गंग सम रंग तुझ कीर्ति किलोलने,
रवियकी अधिक तप तेज ताजो;
नय विबुद्ध सेवक हुं आपरो जस कहे,
अब मोहि बहु निवाजो. ऋषभ ॥९॥



श्री शीतल स्तवनम्.

राग अडाणो.

शीतल जिन मोहे प्यारा, शीतल जिन मोहे प्यारा;
भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउ के जिउ हमारा. शीतल. १
जोत शुं जोत मिलित जब ध्यावे, होवत नहीं तब न्यारा;
बांधी मूठी खुले भव माया, मीटे महा भ्रमभारा. शीतल. ॥२॥
तुम न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर अमारा उदारा;
तुमही नजीक नजीक हे सबही, ऋद्धि अनंत अपारा.शीतल. ॥३॥
विषय लगनकी अग्नि बुझावन, तुम गुण अनुभव धारा;
भइ मगनता तुम गुण रसकी, कुन कंचन कुन दारा.शीतल. ॥४॥
शीतलता गुण हो(ओ)र करत तुम, चंदन काह बिचारा;
नामही तुमचा ताप हरत हे, वाकु घसत घसारा. शीतल. ॥५॥
करहो कष्ट जत वहोत हमारे, नाम तिहारो आधारा;
जस कहे जन्म मरण भय भागो, तुम नामे भवपारा.शीतल. ॥६॥



श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कृत

समुद्र वहाण संवाद.

दुहा.

श्री नवखंड अखंड गुण, नमी पास भगवन्त;
करशुं कौतुक कारणे, वाहण समुद्र वृत्तांत ॥ १ ॥
एहमां वाहण समुद्रनां, वाद वचन विस्तार;
सांभलतां मन उल्लसे, जिम वसंत सहकार. ॥ २ ॥
मोटा नाना सांभलो, मत करो गुमान;
गर्व करयो रयणायरे, टाल्यो वाहणे निदान. ॥ ३ ॥
वाद हुओ किम एहने, मांहोमांहे अपार;
सावधान थइ सांभलो, ते सवि कहुं विचार. ॥ ४ ॥

ढाल.

(थाहरां मोहलां उपर मेहझरोखें कोयलीरेके कोयली ए देशी. ॥

श्रीनवखंड जिनेश्वर केसर कुसुमस्युंरे, के० कुसुमस्युं ।
मंगळ कारण पूजी प्रणमी प्रेमस्युंरे, के प्रणमी प्रेमस्युं ।
प्रभू पाय लागी मागी शकुन वधामणारे के०
विवहारि[1] श्री पासना लेता भांमणांरे के ले० ॥ १ ॥
श्रीफल प्रमुखें वधावी रयणायर घणारे के र०
वाहण हकारीने चालिया ते सवी आपणारे के ते०
पणहीदीइं[2] आसीस कहे वहिला आवजोरे के वेला०
हीरचीर पटकुल क्रयाणां लावजोरे के क्रि० ॥ २ ॥

---

१ व्यवहारि. २ प्रणमी दीए.

पवन वेग हवे चाल्यां वहाण समुद्रमांरे के वहा०
सढ ताण्या श्रीकेरा डेरा तेगमारे केडे०
तूरहि वाजे गाजे मणिरुचि विजलीरे के गाजे०
मानु के अंबर डंबर मेघ घटा मलिरे के मे० ॥ ३ ॥

कें पर्वतपस्थांलाके पुरवालतारे के पु०
उदधि कुमार विमान केइ जलमांहि मालतारे के ज०
केई ग्रह मंडल उतर्‍यो थोक मीलि सहूरे के यौ०
इम ते देखी शके अंबर सुर वहुरे के अं० ॥ ४ ॥

चाडुई[1] जल अवगाहतां चाल्यां ते जलेरे के चा०
साह्य दिए[2] जिम सज्जन तिम बेहु मिलिरे के तिम०
करतरंग विस्तारी साय ते मलिरेके सा०
जाल भवाल छले हुओ रोमांचित वलीरे के रो० ॥ ५ ॥

भरमध्यई[3] ते आव्या जिहां जल उच्छलेरे के जिहां०
सायरमांहि गर्व न माई तिणे वलेरे के ति०
गाजइं भाजइं नाचतो अंग तरंगस्युंरे के अं०
मत चालो करें चालो निज मन रंगस्युंरे के चा० ॥ ६ ॥

गर्वे जाणें मुझ सम जगमां को नहिरे के मु०
गर्वे चडावे पर्वत जनने करग्रहीरे के ज०
गर्वे निजगुण वोले न सुणे परकह्योरे के न सु०
रस नवी दीइं ते नारी कुचजिम निजग्रह्योरे के कु० ॥ ७ ॥

ए असमंजस देपी दृष्टिं आकरुंरे के दृष्टिं०
एक वाहण न रही सक्युं वोल्युं ते खरुंरे के बोल्युं०

---

१ चाडुए. २ दिये. ३ मध्ये.

मुख नवि राखें भाखें साचुं वागीआरे के सा०
राजकाज निर्वाहे ते नवि हाजियारे के ते० ॥ ८ ॥

दरिया तुमेछो भरिया नवि तरिया कुणेरे के न०
तुमे कोईथी नवी डरिया परिवरिया गुणेरे के परि०
तो पिण गुण मद करवो तुमनें नवी घटेरे के तु०
वुठानि वात कहेस्ये वटाऊ जे अटेरे के जे० ॥ ९ ॥

जे निज गुण स्तुत सांभलि सिर नीचुं धरेरे के सि०
तस गुण जाई उंचा सुरवरनें घरेरे के सु०
जे निज गुण मुखि बोले उंची करी कंधरारे के उंची०
तस गुण नींचा पेसि वेसे तले धरारे के वेसे तले० ॥१०॥

दुहा.

एह वचन सायर सुणीं, बोले हलुआ बोल;
सी तुजने चिंता पडी, जा तुं निगुण निटोल. ॥ १ ॥
आपकाज विण जे करइं, मुखरी परनी तात;
पर अवगुण व्यसने हुइं, ते दुखिया दिनरात. ॥ २ ॥
वाहण कहे सायर[1] सुणो, जे जग चतुर सुजाति;
ते दाखें हीतसीखडी, तेमत जाणे तात ॥ ३ ॥
जो पणि परनी द्राख खर, चरतां हांणि न कोय.
असमंजस देखी करी, तो पिण मन दुख होय ॥ ४ ॥

ढाल.

(विजय करी घरी आविया, वंदि करे जयकार ए देशी ॥

सिंधु कहे हवें सिंधुर वंधुर नादविनोद,
घटतो रे गर्व करुं छुं पामुं छुं चित्त प्रमोद;

---

१ सागर.

मोटा इच्छेरें माहरी सारे जगत प्रसिद्ध,
सिद्ध अमर विद्याधर मुज गुण गाजे समृद्धि ॥ १ ॥

रजत सुवर्णना आगर मुज छे अंतर द्वीप,
दीप जिहां बहु औषधि जिम रजनी मुख दीप;
जिहां देखी नरनारी सारी विविध प्रकार,
जाणीइं जग सवी जोइओ कौतुकनो नहि पार. ॥ २ ॥

ताजीरे मुज वनराजि जिहां छे ताल तमाल,
जाति फल दल कोमल ललित लविंग रसाल;
पूगी श्रीफल एला मेला नाग पूंनाग,
मेवा जेहवा जोईइं ते हुवा मुज मध्य भाग. ॥ ३ ॥

चंपक केतकी मालति आलति परिमलवृंद,
बकुल मुकुल वलि अलिकुल मुखर सखर मचकुंद;
दमणो मरुओ मोगरो पाडलनें अरविंद,
कुंद जाति मुज उपवने दीइं जनने आनंद ॥ ४ ॥

मुज एक सरणे राता गाती विद्रुम वेलि,
दाखी राखी तेहमां में साची मोहणवेली;
जप माला जपकारणें तस फल मुनिवर लिंत,
वनिता अधरनी उपमा ते पुण्ये लाभंत. ॥ ५ ॥

नवग्रह जेंणेरे वलिइं[1] वांध्या खाटनई[2] पाय,
लोकपाल जस किंकर, जेणे जित्यो सुरराय;
किओरे त्रिलोकी कंटक रावण लंका राज,
मुज पसाई[3] तेणे कंचन गढमढ मंदिर साज. ॥ ६ ॥

---

१ वले. २ खाटने. ३ पसाये.

पक्ष लक्ष जब तक्षतो पर्वत उपरिधाई,
कोपाटोप धरी घणो वज्र लेई सुरराय;
तडफडी पडीयारे ते सवी एक ग्रहे मुज पक्ष,
तब मेनाक रहीओ ते सुखीओ अक्षतपक्ष ॥ ७ ॥

जग जसचराचर जस तनुं माया पीलई चीर,
ते लक्ष्मीनारायण गोवर्द्धन धरधीर;
मुजमांहे पोढ्या हेजे सेज करी आहिराज;
होड करे कुंण माहरी हुं तिहुअण[1] सिरताज. ॥ ८ ॥

वाहण पाहण पणि तुजथी भारे तुं कहेवाय,
हलुओ पवन जकोलें डोलें गडथलां खाय;
तो हलुया बोलडा हलुओ छे तुज पेट,
मुज मोटाई न जाणें ताणें निज मति नेट. ॥ ९ ॥

गिरुयाना गुण जाणे जे हूई गिरुआ लोक,
हलुआनें मति तेहना गुण सवी लागे फोक;
वांझि न जाणेरे वेदना जेहुई प्रसवतां पुत्र,
मूढ न जाणें परिश्रम जे हुइ भणतां सूत्र. ॥ १० ॥

दुहा.

सायर जब इम कही रह्यो, वाहण वदे तब वाच;
मा आगल मोसालनुं, ए सवी वर्णन साच. ॥ १ ॥
वाणीने जिम ग्रंथ गति, सुरातिथि हरिने जेम;
कांई अजाणि मुज नही, तुम मोटाई तेम ॥ २ ॥
विस्तारुं छुं गुण अमे, ढांकुं छुं तुम दोष;
तो एवडुं स्युं फुलवुं, सो करवा कंठ सोप ॥ ३ ॥

---

१ त्रिभुवन.

मेलो पिण मृग चंद्लो, जिम किजे सुप्रकाश;
तिम अवगुणना गुणकर, सज्जननो सहवास ॥ ४ ॥
गुण करतां अवगुण करे, तेतो दुर्ज्जन क्रूर;
नालिकेरजल मरण दीई, जो मेलिई कपूर ॥ ५ ॥
हित करतां जाणे अहित, ते छांडी जे दूर;
जिम रवि उग्यो तम हरे, घूक नयन तम पूर ॥ ६ ॥

ढाल.

देशी सरकलडानि.

हलुआ पिण तुमें तारुजी सायर सांभलो,
बहु जनने पार उतारुजी; सायर०
स्युं कीजइं तुम मोटाईजी, सायर०
जे वोले लोकने छाइजी. सा० ॥ १ ॥

तुमे नाम धरावो छो मोटाजी सा०
पणि कामनी वेलाई खोटाजी; सा०
तुमे केवल जाण्युं वाध्याजी, सा०
न बीजा हित साध्याजो. सा० ॥ २ ॥

तुमे मोटाइ मत राचोजी, सा०
हीरो नानो पणि होइ जाचोजी; सा०
वाधे उकरडो घणु मोटोजी, सा०
तिहां जइए लेइ लोटोजी. सा० ॥ ३ ॥

अंधारु मोडुं नासेजी, सा०
जो नान्हो दीप प्रकाशेजी; सा०

---

१ दिये.

आकाश मोटो पिण कालोजी, साο
नाह्नो चंद्र करे अजुआलोजी. साο ॥ ४ ॥

आपे मोटाई अंधनी कीजीजी, साο
तिहां तेजवंत ते नानी कीकीजी; साο
नानी चित्रावेल धीराजेजी, साο
मोटो एरंडो नवी छाजेजी. साο ॥ ५ ॥

नान्हो पंचजन्य हरि पूजेजी, साο
तस नादे त्रिभुवन ध्रुजेजी: साο
नानो सिंह महागज मारेजी, साο
नानों वज्र ते शैल विदारेजी. साο ॥ ६ ॥

नान्ही औषधि जो होइ पासेजी, साο
तो भूत प्रेत सवि नासेजी; साο
नान्हे अक्षर ग्रंथ लखायेजी, साο
तेहनो अर्थ ते मोटो थाएजी. साο ॥ ७ ॥

तुमे रावणनुं सोचहिरोजी, साο
इहां सार असारनो वहिरोजी; साο
तुमे मोटाई नांखी ढोलीजी, साο
निज मुखे निज गुण रस घोलीजी. साο ॥ ८ ॥

तुमे रावणनुं वल पोख्युंजी, साο
पिण नीति शास्त्र नवि पोख्युंजी; साο
चोर संगी तुम्हने जांणिजी, साο
रामचंदे बांध्या ताणीजी. साο ॥ ९ ॥

वन द्वीपादिकनी सोहाजी, साο
ए भुमिना गुण संदोहाजी; साο

तें देखी मद मत वहजोजी, सा०
मद छांडिने छाना रहजोजी. सा० ॥ १० ॥

दुहा.

एह वचन श्रवणें सुणी, पाम्यो सायर खेद;
कहे तुज स्युं बोलतां, पामु छुं निर्वेद. ॥ १ ॥
जेहथी लक्ष्मी उपनी, परणी देव मोरार;
सिरसिंधु वजिहूओ, ते अम कुळ निरधार. ॥ २ ॥
ताहरुं तो कुळ काठनुं, जे पोलां घणुं खाय;
तुज मुझ विच जे अंतरो, ते मुख कह्यो न जाय. ॥ ३ ॥
वाहण कहे कुळ गर्वव्यो, माहरुं पणि (पण) कुळ सार;
सुरतरुं जेहमां उपनो, वंच्छित फळ दातार. ॥ ४ ॥
पशु पंखी मृग पथिकने, जे छाया सुख देत;
ते तरुअर[1] अमकुळ तिलो, पर उपगार फळंत. ॥ ५ ॥
हुं लछि[2] दिउं (दिउ) पुरुषने, ए गुण मुजमां सर्व;
मुज तुजमां विवाद छई, तिहां कुळनो स्यो गर्व. ॥ ६ ॥

ढाल.

कुळ गर्व न किजे सर्वथा, हूओ रुडे कुळ अवतारेरे;
गुणहिणो जो नर देखीए, तो कहिइ कुळ अंगारेरे. कुळ० १
जो निज गुण जग उज्वल कर्यो, तो कुळमदनुं स्युं किजेरे;
जो दोषे निज काया भरी, तो कुळमदथी कुळ लाजेरे; कुळ० २
कचराथी पंकज उपनुं, हुओ कमलानुं कूळगेहरे;
कहो कुळ मोटुं के गुणवडा, ए भांजो मन संदेहरे. कुळ० ३

---

1 तरुवर. 2 लक्ष्मी.

मुरखने हठ छे मन तणो, पंडितने गुणनो रंगरे;
फणिमणि लेई राणा राजवि, शिर धारे जिम अंगरे. कुल० ४

खोटो कुलमद मूरख करे, पिण गुण विण निसवादरे;
खोटो सिंह वन गयो, कुतरो पिण कुरस्ये करशे सिंह नादरे. कुल० ५

नाम ठाम कुल नवी पूछीई, जे जगमांहे सुगुण गरिठरे;
रवि चंद पयोधर प्रमुखनां, कुल कुंणे जाण्यां कुंण दिठरे. कुल० ६

स्यो निजकुल स्यो पारको, त्यजि अवगुण करि गण मूळरे;
छांडिजे मळ तनु उपनो, सीर धारिइ वनतु फूलरे. कुल० ७

इम जांणिने कुल मद छांडिए, कीजइ गुणनो अभ्यासरे;
गुणथी जस कीर्ति पामीइं, लहीई जग लील विलासरे. कुल० ८

दुहा.

वचन सुणी एह वाहणनां, भाखे जलनिधि बोल;
हुं रयणायर जगतमां, वाजे मुझ गुण ढोल. ॥ १ ॥
जग जननां दालिद्र हरे, रयणतणी मुज राशि;
होड करे शी माहरी, ए गुण नहिं तुज पास. ॥ २ ॥

ढाल.

वाहण कहे सायर सुणोरे, तुह्मे रयण धरो छो साचांरे;
पण एक हाथिआपरे, वेसे मुझ डाचांरे. तुह्मे० ॥ १ ॥

तुह्मने दमिरे आक्रमिरे, रयण दिओ अह्मे लोकनेरे;
गज भाजे शुंडि करीरे, तव तरुअर फलवरस्येरे.
तिम दिइ कृपणपरे दम्यारे, पिण देतो नवि हरसेरे. तुह्मे० ॥ २ ॥

तुम्हने रसदीइं पीलि सेलडीरे, अगर दहिओदिइवासोरे;
कालाने गाठि भरियारे, कृपण दमीया तिम पासारे. तुह्मे० ॥३॥

---

१ पण. २ रत्नाकर.

जेह रयण[1] आणुं अमेरे, ते जगि आवे लेखेरे;
जे तुजमांहि पडियां रहेरे, तेहनुं फल कुंण देखेरे. तुह्मे० ॥ ४ ॥
सार संग्रही हुंज छुंरे, इम जांणी मत हरखेरे;
सार न जाणे संग्रहीरे, निज मनमां तुं परखेरे. तुह्मे० ॥ ५ ॥
लाकड तृण उपर धरेरे, रयण तले तुं घालेरे;
ए अज्ञानपणुं घणुंरे, कहो कुणने नवी सालेरे. तुह्मे० ॥ ६ ॥
तुज कचरामां जे पड्यारे, निज गुण रयण गमावेरे;
ते तुजथी अलगा थयारे, मुलगु ठामें पावेरे. तुह्मे० ॥ ७ ॥
कांकर भेला मणि धरेरे, ए ताहरि छे खामीरे;
तुम कीरती ठांमी रहीरे, तुमथी रयणे[2] पामीरे. तुह्मे० ॥ ८ ॥

दुहा.

सायर[3] कहे मुं मद करे, पोव विचारी जोय;
जे जगने आजिविका, ते सवी मुजथी होय. ॥ १ ॥
मुज वेला उपर तुह्मे, खेलो खेलो जेम;
जो मुज नीर अखूट छे, तो सहु जनने क्षेम. ॥ २ ॥

ढाल.

वाहण हवे वाणी वदेरे लो, स्युं तुज नावे लाजरे;
कठिन मन जल धन तुज खुट नहिरे लो, ते आइ[4] कुंण काजरे. ?
कठिन मन धननो गर्व न कीजीयेरे लो, जे जाचिकने[5] धन छेतरे लो;
नवीदीई कृपण लगाररे, कठिन मन भारणी तेहथी भूमिकारे लो.
नवी तरुअर गिरि भाररे. क० ॥ २ ॥
खारां प्राणि निरमलांरे लो, विष फल जिम तुज भूररे. क०

---

१ रतन. २ रत्नं. ३ सागर. ४ आवे. ५ याचक.

पणि तरस्या पशु पंखीयारे लो, तेहथी नासे दूररे. क०॥ ३ ॥
मछादि तुजमां रह्यारे लो, ज्युं विषमां विषकीडरे; क०
पिण हंसादिक तुज जलेरे लो, पामे बहुली पीडरे. क० ॥ ४ ॥
मारग जे तुजमां थइरे लो, चालई पुण्य प्रभावरे; क०
तिहां एक कुवें अह्मारडीरे लो, मरु मंडलीनी वावरे. क० ॥ ५ ॥
जो खुटें जल माहरुंरे लो, तो पाडइ जन सोसरे. क०
बहुले पणि जल तुज छतिरे लो, रति न लेंइ चिहुंओररे.क०॥ ६ ॥
जे पर आशा पूरवेरे लो, छति सारु दीइं दानरे; क०
थोडुं पिण धन तेहनुंरे लो, जगमां पुण्य निदानेर. क० ॥ ७ ॥
खंड भलो चंदन तणोरेलो, स्यो लाकडमें भाररे, क०
सज्जन संग घडी भलिरेलो, स्यो मूरख अवताररे. क० ॥ ८ ॥
साद हुओ तुम घोघरोलो, घोख्यो एक नाकाररे, क०
जो जाणो जस पामीएरेलो, तो सिखो दान विचाररे. क० ॥ ९ ॥

दुहा.

सिंधु कहे सुणि वाहण तुं, हुं जगतीरथ सार;
गंगादिक मुजमां मले, तीरथ नदी हजार. ॥ १ ॥
तीरथ जाणी अति वडुं, मुजने पूजे लोक;
गंगा सागर संगमे, मले ते जनना थोक. ॥ २ ॥
वाहण कहे तीरथपणुं, तुज मुख कह्यो न जाय,
गंगादिक तुजमां मले, तास मधुर रस जाय. ॥ ३ ॥
गंगादिक आवि मले, तुजने रंग रसाल;
जाइ[1] नाम पिण तेहनुं, तुज खारें ततकाल. ॥ ४ ॥

---

१ जाय.

दुर्जननी संगत थकी, सज्जन नाम पलाय;
कस्तुरी कचरे भरी. कचरारूप कहाय. ॥ ५ ॥

टाले दाह तृषा टले, मलगालेजे सोय;
त्रिहु अर्थे तीरथ कह्युं, ते तुजमां नहिं कोय. ॥ ६ ॥

तारे ते तीरथ इस्यो, अर्थ घटे मुज मांहे;
जंगम तीरथ साधु पिण, नरे ग्रही मुज बांह. ॥ ७ ॥

दीजें जन जे तुज प्रति, ते नावि तीरथ हेत,
गरजे कहीइं खर पिता, ए जाणो संकेत. ॥ ८ ॥

ढाल.

दशरथ नरवर राजीओ ए देशी.

सिंधु कहे सुणी वाहणतुं, हुं जेम जन हितकाररे,
मुज जल लेई घन घटा, वरसे छे जलधाररे;
जलधार वरसे तेणी सघली, हुइ नव पल्लव मही;
सरकूप वाविभराई, चिहुं दिशि नीझरण चाले वही;
मद मुदित लोकामलित, शोका केकि केकारवकरे;
जलधांन संपत्ति होइं, बहुलि काज जगजननां सरे. ॥ १ ॥

मुझ जल जिवित घन जले, तुझ उत्पाति तिम जाणीरे;
ए संबंधे तुज प्रति तारुंछुं, हित आणी रे,
आंणिइं हीत अविनीत तुझनें, तारीए छीए ए हीत विधी;
संबंध थोडो पिण न भूले, जेह गिरुया गुणनिधी;
तुझ बाल चापल सहुं हुंछुं, जे वेचण कडुया भणें;
छोरु कछोरुं होइ तो पिण, तात अवगुण नवि गणे ॥ २ ॥

---

१ वचन.

वाहण कहे सुणी सायरु, तुझ जलछीइ वलवंतोरे;
हरि निर्देसें छहि करी, जोरे घन गर्जतोरे;
गर्जंत वलीया जलहरे, तुझ तेह मनमां नवि डरें;
में मेहने जल दान दीधुं, इस्यु तुझ स्युं उच्चरें;
जिम कृपणनुं धन हरत, नरपति तेह मनमें चिंतवे;
में पुण्य भवमांहे कीधुं, तिम अघटसुं तुं लवे. ॥ ३॥

जो छे ताहरेरे साचली, जल धरस्युं बहु भीतरें;
तो ते उन्नत देखतो, स्युं पामे तुं भीतरें;
तुं भीत पामे यदा गाजे, मेह चमके वीजली;
अंवराडंबर करे वादल, मले चिहुं पख आफली;
तुं सदा कंपे विची खंपे, नासिइं जाणे हवे;
रखे ए जल सर्व माहरुं, ले इस्युं मन चिंतवे. ॥ ४ ॥

तुझ जल जे घन संग्रहे, ते हुइं अमीअ समानरे;
ते सघलो गुण तेहनो, तिहां तुझ किस्यो गुमानरें;
तिहां मान स्यो तुझ ठामनो, गुण बहु परिजागि देखीए;
तृण गाय भक्षे दुध आपें, न ते तृण गुण लेखीए;
स्वातिं जल हुइं पडिओ फणी, मुखें गरलं मोती सिपमां,
इम क्षार तुझ जल करी, मीठो मेह वरसे द्वीपमां. ॥ ५॥

जीवन ते जल जांणीइं, जे वरसे जलधाररे;
ताहरुं तो जलजिहां पडे, तिहां होइ अंवर खाररे;
तिहां होइ खारो जिहां, तुझ जलविगाडेरेली मही;
दाधें दवे ते पल्लवेइं नवि पल्लवे तुझ दही;

१ सागर. २ होय अमृत. ३ अगर.

तुं धान तृणनां मूळ छेदे, लूण सघळे पाथरे;
तुझ जाति विण कुण जीव पामे, सुख तेणे साथरे. ॥ ६ ॥

एरंडो नहि सुरतरू तरुअर, कहिइ दोयरे;
चिंतामणि ने कांकरो, ए वे पथर होयरे;
ए दोय पथरपणि विलख्यणपणुं, निज निज गुणतणुं;
वलि अक सुरही दुध, एक ज वरण पणि अंतरघणुं;
इमनीर जीवन वेह, घन तुं ताहरुं विपरूप;
ए तुं एक शब्दे रखे, भूले जूओ आप स्वरूप. ॥ ७ ॥

हुं घनजळथकी उपनो, वाध्योछुं तस दृष्टिरे;
जनम लगे तस गुण ग्रहुं, नवि दीठो तुं दृष्टिरे;
दृष्टि नवि दीठो तुं अने, उपकार स्यो तिहां तुझतणो;
निज जाति घनने तुमे जाणो, एह अम्ह अचरीज घणो;
जो नीरगुणो गुणवंत, दीखी कहे ए अम्ह जातिई;
वो जगतमां जे जन भलेरा, तेह सवितुझ तातए. ॥ ८ ॥

जळमांहि निज गुण थकी, तरिइं छइं अमे नितरे;
हुं तारुं छुं एहनें, इम तुं धरे चित्तरे;
इम चित्त म धरे शकट हिंठि,[1]श्वान जिम मनमां धरे;
तो गर्व करवो तुझ घटे, जो पाहण तुझ जळमां तरे;
संबंध गुणनो एक साचो, काज ते विण नवि सरे;
गुण धरे जेम मद मृषा न करे, सुजस तेहनो विस्तरे. ॥ ९ ॥

दुहा.

सिंधु कहें मुझ गुण घणा, स्युं तुं जाणे पोत;
मुझ नंदन जग चंदलो, सघळे करे उद्योत. ॥ १ ॥

---

१ हेठे.

सुरपति नरपति जेहनो, नवि पामे दीदार;
ते पशु पति शिर उपरे, मुझ सुत छे अलंकार ॥ २ ॥
जेहने देखी उगतो, प्रणमें राणा राय;
ते सुतनि रिधि देखतां, मुझ मन हरख न माय ॥ ३ ॥
मुझ नंदन वरस्ये यदा, किरण अमी रसपूर;
तव दाधो पिण[1] पालवे, मन मथ तरु अंकुर, ॥ ४ ॥
कुंकमवरणी दूतिका, मुझ सुत निरखंत;
मन शृंगार जगावती, माननी मान हरंत. ॥ ५ ॥
मानुं मनमथ रायनो, कलस राय अभिषेक;
लंछन तीलकमले करीत, सोहे मुझ सुत एक. ॥ ६ ॥
मुझ सुत मंडल साथतुं, सरवर रति आनंद;
जिहां मथमअ न करइ, उडइतारावींद. ॥ ७ ॥

ढाल.

हवे वाहण विलासि कहें, वदन विकासीरे;
सुत ऋद्धिथी हासी सायर तुज तणीरे. ॥ १ ॥
तुझ सुत उचग संगीरे तुं पातक रंगीरे;
निज गोत्रजा चंगी तुं अंगीकरेरे. ॥ २ ॥
नवि लोकथी लाजेरे, अभिमाने भाजेरे;
वली पाप करीने गाजेरे, पापीओरे; ॥ ३ ॥
इम हृदय विमासीरे, सुत तुझथी नासिरे;
हुओ अंबर वासी, सुरनर वंदीओरे. ॥ ४ ॥
द्विजराजते कहीएरे, अति निर्मल लहियेरे;
गुण उजल महिये, लोके चंदलोरे. ॥ ५ ॥

---

१. पण.

मलमूत्र समेटेरे, अपवित्र तुं भेटे रे;
तेणि कारणें वेटे, दूरे परिहर्योरे ॥ ६ ॥
विरहानल सलगेरे, सुतरहे अलगेरे;
तुं चंदने वलगे, किरणे उच्छलिरे. ॥ ७ ॥
ते पखअंधारे, करवत्त विदारेरे;
इम धारे ते द्विजपति निज पावनपणुंरे. ॥ ८ ॥
शशिस्युं तुझ रंगोरें, इम छे एकांगोरे;
नवि सोहें अभंगो, सज्जननी परेरे. ॥ ९ ॥
तुझमां नवी खूतोरे, तो सवि गुण जूतोरे;
तुझ पूतो विगुतो नवी कोई अविगुणेरे. ॥ १० ॥
तो पिण तुझवालिरे, कुल रेषा कालिरे;
निज गुण जलगाली, टालि नावि सकेरे. ॥ ११ ॥
खल संग जांणीरे, सज्जन गुण हांणीरे;
होय मलीन घन पांणी, यमुनामां भल्युरे. ॥ १२ ॥
कुल अवगुण दोषोरे, निज काया सोखीरे.
तुझ नंदन चोखी, तपस्या आदरीरे, ॥ १३ ॥

दुहा.

इम तुझथी विपरीत जे, तुझथी लाजे जेह,
ते सुत ऋद्धिथी मद किस्युं, तेहस्युं किस्यो सनेह. ॥ १ ॥
सगा सणाजाजातीनो, गुण नावे पर काज;
एक सगो भूखे मरे, एकतणि घरि राज. ॥ २ ॥
अत्रि नयनसी उपनो, तुझथी जे पणि[1] चंद;
ते विवायने छेटडे, तुझने किस्यों आनंद. ॥ ३ ॥

---

१ पण.

निज गुण होय तो गाजीए, पर गुण सविअकयथ्थ[१];
जिम विद्या पुस्तक रही, जिम वली धन पर हथ्थ. ॥ ४ ॥

बीजु तुझ नंदन कला, निति निति[२] घटति जाय.
राते केवल तगतगें, दिवसे अगोचर थाय. ॥ ५ ॥
मोटी जसकीर्ति कला, पर उपगार विसेस;
अखय अखंडित सर्वदा, मुझविलसे सवी देस. ॥ ६ ॥

ढाल.

इडर आंबा आंबलिरे ए देशी.

सायर कहे वाहण सुणोरे न कहे मुझ गुण सार;
काढें पूरा दुधमारे, कहेतो दोष विचार.
सवल एम न मान्यानि वात,
तुन करे मुझ गुण ख्यात, मुझ मोटाइ छे अवदात. सब० ॥१॥
जे दिन कूप सरोवररे, सुके नदी अने निवाण;
भर उनालें ते दिनेरे, वाधे मुझ उथान. सब० ॥ २ ॥
प्रबल प्रताप रवितणेरे, नवि सुके मुझ निर;
मेरु अगनथी नावि गलेरे, जो पिण हेम सरिर. सब० ॥ ३ ॥
हुं संतोष करी रहुरे, अविचल ने थिरथोभ;
ठाम रहित भमतां रहोरे, वाहण तुं स्यो अति लोभ. स० ॥ ४ ॥
खिमावंत गंभीर छुरे, नवि लोपुं मर्याद;
तुं मुझ गुण जाणे नहीरे, स्युं तुझ स्युं मुझ वाद सब० ॥ ५ ॥
वाहण कहे सुण सायररे, नवि सके तुं ठांम;
उनाले जल अति वधेरे, पिण नवी आवे कांम सब० ॥ ६ ॥
सोष न पांमु कोयथीरे, एम मद धरे एक;

१ अकृतार्थ. २ नित्य नित्य.

चूर्ण करयो घट सुत मुनिरे, तिहां न रही तुझ टेक. स० ॥ ७ ॥
एक एकथी अतिघणारे, जगमां छे बलवंत;
मुझ सम जगमां को नहिरे, इम कोय म धरो तंत. सव०॥ ८॥
सहस नदी घन कोडथीरे तुझ नवी पेट भराय;
तुं नित्य भूख्यो रहेरे, किम संतोषी थाय. सव० ॥ ९ ॥
शसि सूरज धनपरि अमेरे, भमे पर उपकार;
भागें अंगें तुं रहीओरे, हसवुं कई गमार. स० ॥१०॥
परहित हेते उद्यमारी, सरज्या सज्जन सार;
दुर्ज्जन दुखीया आलसुरे, फोकट फूलणहार. स० ॥११॥
निःकारण निति उच्छलेरे, वलगे वाउल जेम;
हृदयमांहि घणु परजलेरे, खीमावंत तुं केम. स० ॥१२॥
साचुं तुं गंभीर छे रे, नवि लोपे मर्याद;
पिण तिहां कारण छे जुओरे, स्युं फूले निसवाद. स०॥१३॥
विकट चपेटा चिहु दिसेरे वेल धर हीई तुझ;
मर्यादा लोपें नहीरे, तेहथी ए तुझ गुज. स० ॥१४॥
पर अवगुण निज गुण कथारे, छांडो विकथा रूप;
जाणुं छुं सघलु अमेरे, सायर तुझ सरूप. स० ॥१५॥

दुहा.

कहे मकराकर म करि तुं, भवहण मुझस्युं होड;
में तुज सरणें राखीओ, तो पामी धन कोड. ॥ १ ॥
आसंगो नावि किजीए, जेहनी कीजे आस;
नरपति मान्यो पिण रहें, आप मुल्लाजइ दास. ॥ २ ॥
सरणें राख्यो चंदनें, जिम मृग हूओ कलंक;
तिम तुं मुझने पिण हूओ, कहतो दोष निःसंक ॥ ३ ॥
सुंदर जाणी संग्रहीओ, हुआ ते निगुण निभूक;
उथापें नज आसरो, ए तुज मोटी चूक ॥ ४ ॥

ढाल.

वाहण कहे सरण जगि धर्म विण को नही,
तुं सरण सिंधु मुझ केणी भाति;
शरण आव्या तणी सरम ते नवि रहें,
जेह जाया हुइं सुजस राति वा० ॥ १ ॥
काल विकराल करवाल उलालतो,
फूक मूंके प्रबल व्याल सीरखि;
जूठ अति दूठ जन मूख सरडो हतो,
यम महिष सांभरइं जेह निरखी. वा० ॥ २ ॥
चोर करि सोर मलवारिया धारिया,
भारिया क्रोध आव्यें हकार्या;
भूत अभ्भुत यमदूत यम भयकरा,
अंजना पुत नूतन वकार्या वा० ॥ ३ ॥
हाथि हथिआर सिर टोप आरोपिया,
अंगि सन्नाह भुज वीर वळर्या;
झलके तई नूर दलपूर, विंदु तव मल्यां,
वीररस जळधि ऊधाण वलियां. वा० ॥ ४ ॥
नीलसितपित अतिस्याम पाटल धजा,
वसन भूषण तरुण किरण छाजे;
मानुं वहुं रूप रण लाछि हृदय स्थलें,
कंचूआ पंच वरणी विराजे. वा० ॥ ५ ॥
भूर रणतूर पूरे गयण गडगडे,
आथडें कटकनी सुभट कोडी;
नावस्युं नावरण भाव भर मेलवी,
केलवी धाउ दीइं मुझ मोडी. वा० ॥ ६ ॥

निशितशर धीर जळधार वरस्यें घणुं,
संचरे गगन वक्र धवल नेजा।
गाज साजे सघल ढोल गाजे सवल,
वीज जिम कुंत चमके सतजा. वा० ॥ ७ ॥
क्रूर रसस्तर गज कुंभ सिंदुर सम,
रुधिरनां पूर अविदूर चाले;
स्वर भूरई समर भूमि सुरण परिसीस,
कायर धरा हेठ घाले. वा० ॥ ८ ॥
भंड अमंड शत खंड जे करी शके,
उच्छले तेहवा नाल गोला;
वरसता अगन रण मगरोसे भर्या,
मानुं ए यमतणा नयण डोला. वा० ॥ ९ ॥
चोर भूंके महा क्रोध मूंकइ वलि,
वाहण उपर भरी अगन होका;
कोकबाणे वढें सुभट रण रस चढे,
बिरुद गाइं तिहां बंदिलोका. वा० ॥ १० ॥
उसरी चोर जालि सोर बहु पाथरइ,
अगन तिहां सबल लागे;
बालतो गालतो टालतो दर्प तुझ,
तेह तुं देख तो किम न जागे. वा० ॥ ११ ॥
शेष पिण सलसले मेदिनी चलचले,
खलभलइं शैल ते समर रंगे;
लडथडे भीक इक एक आगइ पडे,
सुभट सत्राइ माहन अंगे. वा० ॥ १२ ॥
घोर रण जोर 'चिहु ओर भट फेरवे,

देव पिण देखता जेह चमके;
बाण बहु धूमथी तिमिर पसरे सबल,
कौतुकी अमरना डमरु डमके. वा० ॥ १३ ॥
एहवे रण शरण तुं किस्युं मुझ करइं,
खलपरि दुष्ट देखइ तमासा,
एक तिहां धर्म छे शरण माहरे वडुं,
सुजस दिइ ते करें सफळ आस्या. वा० ॥ १४ ॥

दुहा.

सायर कहे तुं भोगवे, घणा पापनो भोग;
एह मुझ निंदा करी, स्यो अधिको फल भोग. ॥ १ ॥
विंध्यो खीले लोहने, तु निज कूख मझारि;
बांध्यो छे दृढ दोरस्युं, निज वस नहीं लगार. ॥ २ ॥
दुम्भर भरीइं तुझ उदर, घालि धूलि पाषाण;
वाय भर्यो भभके घणुं, तुं जगि खरो अजाण. ॥ ३ ॥
वाहण कहे सायर तुमो, वडा जडा जग जगि;
देखो छो गिरि प्रजलतो, नवि निज पगविच अग्नि ॥ ४ ॥
मेरु मथाळे तुं मथ्यो, राम सरे वलीदद्ध;
उच्छाली पाताळ घट, पवने कीधो अद्ध. ॥ ५ ॥
पाडे मूर्छा ते दुखे, मुखे मुंके छइं फिण.
संनिपातिओ घुरघुरे, कोटे कचरे लीण. ॥ ६ ॥
भोगवतो इम पाप फल, नवि जाणे निज हांणि.
दोष ग्रहे तुं पर तणा, ते नवि आवे माणि. ॥ ७ ॥

ढाल.

सायर कहइं तुं बहु अपराधि, वाहण जिभ तुं अधिकी वाधी;
खोले मर्म अनेक अमारां,ढांक्यां छिद्र अमे तुमारां. ॥ १ ॥

जो हवइ न रहिस्ये निंदा करतो, मर्म उघाडिसि माहरा फिरतो;
पोत तरंग घुमरमां वोळी, तो हुं नाखीस तुझनइं ढोळी. ॥ २ ॥
तुझ वीण मुझ नवी हास्ये हांणी, तुझ सरिखा बहु मेलीस आंणी;
जो अखूट छे नृप भंडार, तो चाकरनों नहीं को पार. ॥ ३ ॥
उष्ण अगन तापे हुइं गाढुं, जेह स्वभावें जल छे टाढुं,
तिम तुझ मर्म वचनें हुं कोप्यो, खिमावंत धुरजे आरोप्यो. ॥ ४ ॥
मोटास्युं हठ वाद नीवारयो, निति मार्ग तें तें विसारयो;
मुझ कोपें तुं रहिय न सकइ, पडे एकल हरी नइं धक्केइं. ॥ ५ ॥
कोड तरंग शिखर परि वाधें, जइ शफीर इते अंबर आधे;
एकसरंग सवल न भाजइं, काज घणा तुं स्युं इम लाजे ॥ ६ ॥
पवनझकोलै दिइ जलभमरी, मानुं मद मदिरनी घुमरी;
तेहमां शैलशिखर पणि तूटइं, हरि सय्या फणी वंध छुटइं. ॥७॥
नक्र चक्र पाठिन अतुछ उछलता, आछोटई पुछ जई लागे.
अंबर जल कणीया छमकइं, ग्रहगण गण ताता मणीया.॥ ८ ॥
एहवे मुझ कोपें तुझ सर्व, गलस्यें जे मनमां छे गर्व;
जे बोले असमंजस भाषा, ते फलसे सघळी सत शाखा ॥ ९ ॥

दुहा.

वाहण कहैं मत राखजे, सायर पाछुं जोर;
चाके ते करिस्युं वृथा, फूली करे बकोर. ॥ १ ॥
वचॅन गुमान तुझ भरियां, साचनका तिहां भाष;
केतां कालां काढीइं, जिमतां दहि ने माष. ॥ २ ॥

ढाल.

सायर स्युं तुं उच्छले, स्युं फूले छे फोक;
गरव वचन हुं नवी खमुं, देस्युं उत्तर रोक. सा० ॥ १ ॥

वात प्रसंगे में कहिया, उत्तर तुझ सार;
मर्म न भेदिया ताहरा, करि हृदय विचार. सा० ॥ २ ॥
निज हित जाणी बोलिइं, नवि शास्त्र विरुद्ध;
रुसोपरि वलि विष भखो, पणि कहीइं सुद्ध. सा० ॥ ३ ॥
छिद्र अमारां संवरे, तुं किहारें गमार;
छिद्र एक जो तनुं लहिइं, तो करेरे गमार. सा० ॥ ४ ॥
शोकनी परिं नीत अम्हतणा, ताकें तुं छिद्र;
पणि रखवालो धर्म छे, ते न करें निद्र. सा० ॥ ५ ॥
बोलै शरणागत प्रति, जे नीर मझार;
कठिन वचन मुख उच्चरें, ते तुझ आचार. सा० ॥ ६ ॥
पणि मुझ रक्षक धर्ममां, नहि तुझ बल लाग;
जेहथी मुझ बुडे नहीं, भंग बावनमो भाग. सा० ॥ ७ ॥
मनमां स्युं मुझी रहीओ, स्युं माने निःशंक;
अम्ह जातां तुझ एकलो, उगस्यै तो पंक. सा० ॥ ८ ॥
तुं घर समरथ छइं, करवा असमरथ;
श्रम करवो गुण पात्रनो, जाणे गुरु हत्थ. सा० ॥ ९ ॥
हंस विना सरवर यथा, अलिविण जिम पद्म;
जिम रसाल कोकिल विना, दीपक विण सद्म. सा० ॥१०॥
मलयाचल चंदन विना, धन विण जिम द्रंग;
सोहे नहिं तिम अम विना, सा तुझ वैभव रंग. सा० ॥११॥
गगन पात भयथी सुइ करि, उच्चा पय टीटोडी;
जिम तुझ तथा, कल्पित मद थायें. सा० ॥१२॥
उन्हो स्युं थाइ वृथा, मोटाई जेह;
तेतो बेहु मली हूइ, बेहु पखसनेह. सा० ॥१३॥

---

१ रह्यो.

दुहा.

राजा राज्य प्रजा सुखी, प्रजा राग नृप रूप;
निज कर छत्र चमर धरइं, तो नवी सोहे भूप. ॥ १ ॥

मद झरते गज गाजते, सोहे विंध्य निवेस;
विंध्याचल विण हाथीआ, सुख न लहे परदेश. ॥ २ ॥

अगजेंय[1] वन ते हुइ, सिंह करें जिहां वास;
वनने कुंज छाया विना, न लहें सिंह विलास. ॥ ३ ॥

हंस विणा सोहें नहिं, मानस सर जलपुर;
मानस सरवर हंसला, सुख न लहें मह मूल. ॥ ४ ॥

इम सायर तुझ अमथीली, मोटाइ विहु परिख्य;
जो तुं चूकइ मद कर्यो, तो तुझ सम मुज लख. ॥ ५ ॥

हंस सिंह करिवर करे, जिहां जाइ तिहां लील;
सर्व ठामिं तिम सुख लहे, जे छे साधु सुलील. ॥ ६ ॥

सायर कहें तुझ मुज विना, भरी न सकें डग्ग;
मुझ प्रसाद विलसें घणो, हु दिभो छुं तुझ मग्ग. ॥ ७ ॥

मुझ साहमुं बोले वली, जो तुं छांडी लाज.
तो स्वामी द्रोहातणों, सीख होस्ये तुझ आज. ॥ ८ ॥

वाहण कहे सायर सुणो, स्वामि ते संसार;
गिरुओ गुण जाणी करइ, जे सेवे नीसार. ॥ ९ ॥

भार वहो जन भाग्यनो, बीजो स्वामी मूढ,
जिम खरवर चंदन तणो, एतुं जाणे गूढ. ॥ १०॥

---

[1] अगजेन्द्र.

ढाल.

भोलिडारे हंसारे वि० ए देशी.

एहवें वयणेरें हवे कोपेइ चड्यो, सायर पाम्योरें क्षोभ;
पवन झकोलेरे जल भर उच्छली, लागे अंवर मोभ. एहवे० १
भमरी देतांरे पवन फीरी फीरीरे, वाले अंग तरंग.
अंवर वेदीरे भेदी आवता, भाजे ते गिरिशृंग. एहवे० २
भूत भयंकर सायर जव हुओ, वीज हुई तव हास;
गुहिरों गाजीरे गगने घन करे, डम डम डमरु विलास. एहवे० ३
जलनइ जोरइरे अंवर उच्छलई, मच्छ पुछ करी वंक;
वाहण लोक नइरे जो देखो हुइ, धूमकेतु शतसंक. एहवे० ४
शेष अगननोरे धूम जलधि तणो, पसर्यो घोर अंधार;
भयभर त्रासेरे मसक परिंनदा, वाहणना लोक हजार. ए हवे० ५
गगन चढावीरे वेग. तरंगनें तले घालिजेरे पोत;
त्रट त्रट तुटेइरे वंधन दोरनां, जन लखजो तारे जोत. ए हवे० ६
नांगर त्रोडीरे दूरि नांखीइं फूल तणा जिमविंट;
गगनउलालीरे हरिंइंपाजरी, मोडि मंडप मिटि. ए हवे० ७
छुटे आडारे वंधन थंभनां, फूटइ वहु ध्वज पंड;
सूक वाहण पणिछो तापरि हुइ, कुया थंभ सत खंड. ए हवे० ८
सवल शिला वचि भागा पाटीयां, उच्छलते जल गोट;
आश्रित दुखथीरे वाहण तणो हुओ, मानु हृदयनो फोट. ए हवे०९
ते उत्पत्तिरे प्रलय परि हुंति, लोक हुआ भयभ्रांत;
कायर रोवेरे धिरवे धृत धरी, परमेश्वर समरंत. ए हवे० १०

दुहा.

इमसायर कोपे हुओ, देखी वाहण विलख;
विचिं आवि वांणी वदे, उदधि कुमरनां करंक. ॥ १ ॥

वाहण न कीजे सर्वथा, मोटा साथे झूझ;
जो किधुं तो फल लहो, मुझे काई अवुज. ॥ २ ॥
तुझमां कांय न उगर्यो, वहि जाए जळवेल;
इजि लगिं हित चाहतो, करि समुद्र स्युं मेल. ॥ ३ ॥

ढाल.

समर्यां साज करें जळ्यराज ए देशी.

संकट विकट लइ सवहुरे, फिर सज थई वाजई तुज;
तुर सायर जो मिळइं तो पुगें तुझ वंछित आस,
लोक करे सविलीळ विलास. सायर जो० १
तुझ नमता टळस्यें तस क्रोध गिरुया ते जग सरल सबुध सा०
वहिइ साहिब आण अभंगा आस करी नई नवी आ संग. सा० २
गज गाजे अंगण मंलपंत हेणई तेजी हयहरखंत. सा०
साहिब मुनि जर भर भंडार तसकु निजरजन थाइ ख्दार. सा० ३
जे परमेसरें मोटा कीधा, जेहनी भाग्यरती सुप्रसिद्ध. सा०
ते साहिबनीं किजे सेव, होडि तणीं नवी किजे टेव. सा० ४
धनमद जे दाखुं दुक्कर देव, रंक करइ तेहने ततखेव. सा०
करइ एकनें राजा भाय साहिब गति नवी जांणी जाय. सा० ५
जे उपजे उत्तम वंश, लोक पालना लेई अंस; सा०
ते साहिब जगि सेवा लाग, नवी कीजें तेहस्युं अणुराग. सा० ६
हित करि कहुं छुं अम्हे वात, जाणे छे तुं सवीऽवदात. सा०
कह्युं मानि मानी सिरदार, कीजे अवसर लाग वीचार. सा० ७
सायर सेवक छुं अमे एह, धरिए तेहने नेह नेह; सा०
हुकम दीइं जो साहिब धीर, तो अमे साधुं तुझ शरीर. सा० ८
मेळ करो अम्ह वयणें पोत, जिम तुझ हुई जगिजसउद्योत. सा०
फिर न पाओ सघलो साज, बंदिर जई पामो तुमे राज. सा० ९

दुहा.

सायर सेवक देवनी, साम भेदनी वाण;
वाहण एहवी सांभली, वदे मान मनि आण. ॥ १ ॥
पख तुम्हे पोखो खरो, निज साहिवनो देव;
गुण अजांणनी परें हरी, पणि एहनी सेव. ॥ २ ॥
मत जाणो ए संकटे, मान टलें अम्ह आज;
जे अमे साहिव आदर्यो, ते वहस्यैं अम्ह लाज. ॥ ३ ॥

ढाल.

नाभिरा थांके वाग चंपे मोर रह्योरि—ए देशी.

श्री नवखंड जिणंद, तेहनो सरणकिओरी;
घोघा मंडण पास, साहिव तेहकिओरी. १
जेणें निज तनुं नव खंड, मेल्या आप वलेरि;
ते हजु मुझ तनुं खंड, भेलस्यें भगतिं भलेरे. २
ऊभाज सदर वार, सुरनर सेव करेंरी;
जे समर्यो ततखेव, संकट सयल हरेंरीं. ३
अरि करिं केसरी आगें, अहिजल वधु रुजारी;
अडभय एह साहिव, सवळ भुजारी. ४
ते जे झाकझमाल, रवि परीं जेहतपेरी;
इन्द अमर मुनि वृंद, जसनीत नाम जपेरी. ५
पतीत पावन प्रभु जास, रंजई भगत रसेरी;
तस दुख हरवा काज, देव अनेक धसेरी. ॥ ६ ॥
ते प्रभु सरण करेअ, अवरत आस करूरी;
कुंण लीइ पथर हाथ, पांमी रयण खरूंरी. ॥ ७ ॥
भय जळ नहीं मुझ देव, समरें नील छवीरी;
स्युं करस्यें अंधकार उग्यें, रयणी रवीरी. ॥ ८ ॥

कोइ नहीं भय मुझ जो प्रभु चित्त वसोरी;
जाओ तुम उदधि कुमार, सायर मेलकीसोरी. ॥ ९ ॥
जे साहिब सुप्रसन्न कादिई न रोसभजीभोरी;
ते अह्मे संख्यो दून, सायर दूरित्यजोरी. ॥ १० ॥
आसपूरण प्रभु पास, हरस्ये विघ्न पतीरि;
लहस्युं जगजसवाद, आरतिं नहीं अरतिरी. ॥ ११ ॥

दुहा.

इणी आकीनइं धर्मने, तूठा सुर अनुमान;
कुसुम वृष्टि उपर करे, अंबर धरी विमान. ॥ १ ॥
सुरवि भाषे धन धन्य तू, तुझ सम जगि नहीं कोइ;
कुणनइं एहवी धर्म मति, संकट आवें होइ. ॥ २ ॥
हरख नही वैभव लहे, संकटि दुख न लगार;
रण संग्रामें धीरजे, ते विरला संसार ॥ ३ ॥
एम प्रसंसा सुरकरी, टालें सवी उतपात;
फिरि साज सघलो बन्यो, हुआ भला अवदात. ॥ ४ ॥
सुरवर जससानिध करें, तेहस्यु किसि रिस;
इम सायर पणी उपसमी, धरइ वाहण निज सीस ॥ ५ ॥

ढाल फागनी.

हरखित व्यवहारि हुआहो, करता कोडिकल्लोल;
टली वाहणथी आपदाहो चित्त हुआ अतिरंगरोल. ॥ १ ॥
प्रभु पासजी नामथी दुख टल्यो हो. अहो मेरि ललना;
सवि मल्यो सुख संजोग. प्रभु० अ० ॥ १ ॥
किया छांटणा अति घणा हो, केसरकि झकझाल;
मानुं संकट रयणीं गयेतें प्रगट भयो सुख भोर. प्रभु० ॥ २ ॥
भयो हरख वरषा अति संकट गए, धामारितु हेतु;

तातें फिरत अंबर बलाका, उज्वल फरिहरथा केतु प्रभु०॥ ३ ॥
कुआथंभ फिरि सजाकीओहो, मानुं नाचको वंस.
नाचें फिरत्ती नर्त्तकी हो, श्वेत अंशुक धरी अंस. प्रभु० ॥ ४ ॥
सोहें मंडित चिहुं दिसें हो, पट मंडपचोमाल;
मानुं जयलछीतणो हो, होत विवाह विशाल. प्रभु० ॥ ५ ॥
वेठो सोहें पांजरीहो, कूआथंभ अग्र भाग;
मानुं के पोपट खेलतोहो, अंबर तरुअर लागि. प्रभु० ॥ ६ ॥
नव निधान लछि लही हो, नवग्रह हुआ प्रसन्न;
नव सढ ताण्यां ते भणी हो, मोहीं तिहांजन मन्न. प्रभु० ॥ ७ ॥
राचे माचे नाचे वहुजन, सब ही बनावत साज;
वाजे वाजा हरखना हो, पाम्युं ते अभिनव राज प्रभु० ॥ ८ ॥
मेघाडंबर छत्र विराजें, पट मंडप अति चंग,
बीजे बिहु पखसोहताहो, चामर जलधि तरंग. प्रभु० ॥ ९ ॥
एक वेळि सायर तणी हो, दूजी जनरंग रेली;
त्रिजी पवननी प्रेरणा हो, वाहण चले निजगेलि. प्रभु० ॥ १० ॥
पवनहींथे दूनो वयो हो, पवन सिखायो विग.
जन मन गुरा कीएहो, वेग विद्या अति तेग. प्रभु० ॥ ११ ॥
त्रासें कच्छप चिहुं दिसे हो, आवत देखी जहाज;
मानुं जिहांजना लोकनांहो, नासें दालिद्र धरी लाज प्रभु० ॥ १२ ॥
इणिपेरे वहुआडंवरेरे, चाल्यां वाहण सुविलास;
निज इछित वंदिर लहीहो, पाम्यां ते सुजस उल्लास. प्रभु० ॥ १३ ॥

चोपाई.

मंदिर जइ मांड्या बाजार, व्यापारी तिहां मिल्या हजार;
जिम आवलिकां देव विमान, तिम तिहां हाट बन्या असमान. १
रयण सेणी तिहां सोहे घणीं, कमलाहारतणी सुवी भणी;

सोनइया नविजाए गण्या, रूपाराल तणी नही मणा. २
मोड्यो मोती तिहां बहु मूल, मानुं न्याय लतानुं फूल;
पासे मांडी मरकत हारी, ते सोहे अलिकुल अनुंहारि. ३
लाल कांति पसरे तिहां सार भूमि लहे लाली बाजार;
मानुं आवि कमला रंगि, तास चरण अलतानइ संग ४
रयण पारखि परखी पासि, करे रयणनी मोटी रासि;
परखे नाणां नाणावटी, करें रेंड जिम सुरगिरि तटी. ५
विविध देस अंबर अनुकुल, दोसि विस्तारे पटकुल;
चीन मसज्जरनें जर बाफ, जीपे रवि शशिकर ओ साफ. ६
सोवन तंतु खचित पामरी, जे पासें भीका भामरी;
मांगेंरो हणगिरिना कंति, ते जोतां पुहुंचे मन खंति. ७
जिमवसंत फूले मणीआर, मणि माला मंडइ मणीआर;
तेल फूलेल सुरहि आधरइ, तस सुवास अंबरि विस्तरे. ८
कस्तुरी आकुल तोलंत, सौरत निश्चल अलि गुजंत;
नवि जांणे तिहां लीनो लोक, सोर जोर करतें जन थोक. ९
केसर छवि अगनिं तनु धरी, मानुं धीज कस्तुरी करी;
टाली नीच घणा निशंक, तो आदरिइ जगिनि कलंक. १०
अंबर चंदन अगर कपुर, गर्भित धरणी परिमलपूर;
मानुं ते भारे नविफरे, अलि गुंजित आक्रंदित करें. ११
घणां वखाणांनो विस्तार, ते कहेतां नवि लाभे पार;
सुरलो कंइ पणि न मिळइं जेह, ते लहिइं तिहां वस्तु छेह. १२
पक्षेण मे विस्तार, दरिआ समगाजइ बाजार;
तिहां व्यापार कया अति घणा, मुलिं लाभ हुआ सो गुणा. १३
लोक थोक जिम वेलि भराय, एक एकनां हृदय दलाइं;
तथी वखाणें निज निज जिहाज, कीधो घर आव्यानो साज.१४

ढाल.

(गच्छपति राजिआ हो लाल—ए देशी.)

भरियां किरियाणां घणां हो, हीरचीर पटकुल;
मेल्यां निज बंदिर भणी, हवे वाहण पवन अनुकुल. १
हरखित जन हुआ हो लाल, पाम्या जय तांसारि सुखलील; आ०
दोय पंखि जिम पंखिआ हो रथ जिम दोय तुरंग. ह० २
रणकइं ध्वजमणीकिंकीणी हो, कनक पत्र झंकार;
वाहण मिसें आवे रमा, मानुं गरूड करी संचार. ह० ३
आपइं जलओलंघिइं हो. मानुंझरे मदपूर;
वाहण चले जिम हाथिओ सिरकेसर छवि सिंदुर. ह० ४
मरकसी सगर नाखीइं हो. वाहिर तेह न जाइं;
एहवे वेगे चालिआं मनि वाहण हरखइ न माइ. ह० ५
वाहण भाणस्युं तोली हो धर स्वर गनो सार;
तुला डंड थंभे करी, जोइ लेजो एह विचार ह० ६
कामिकरइं जिम कामीनि हो. हृदय स्थल परिणाह;
सायर तिम अवगाहतां, हवड वाहण चल्या उच्छाह ह० ७
गुण जित्यो सायर रहुओ हो, सहजें मानिधकार;
देख्यां बंदिर आपणां, हवे हुआ जय जयकार. ह० ८
बंदिर देखि वावटा हो, धरिया लाल अग्र भाग;
मानुं बहुं दिननो हुं तो, तेह प्रगट कीओ चितराग. ह० ९
बंदिर देखि हरखस्युं हो, मेहलि नाली आवाज;
जे आगइं सुर गजतणो. वलि मेहतणो स्यो गाज. ह० १०
वाज्यां वाजां हरखनां हो, करे लोक गीत गान;
पडे छंदे गुहिरो दिई मानुं सायरकरतान ह० ११
साहमा मिलवा आवीया हो, सज्जन लेइ नाव;

अंगो अंग मिलावडें, तो टळियां विरह भाव. ह० १२
आव्या वाहण सोहामणां हो. घोघा वेला कुल;
घरघर हुया वधामणां, श्री संघ सदा अनुकुल ह० १३
विवाहा व्यवहारी भेटें मुदा हो प्रथम पास नवखंड;
सुरभि द्रव्य पूजा करे, लेई केसरने श्रीखंड ह० १४
मोतीना कर्या साथीयाहो. आंगीरयण बनाव.
ध्वजा आरोपी अतिभली, वळिक कलम सुविभाव ह० १५
इण परि जेहना द्रव्यना हो, आव्यो प्रभुनो भोग;
सायरथी मोटुं करओ तेजिहाज मिळि सावि लोक. ह० १६
ए उपदेस रच्यो भलो हो, गर्वत्याग हित काज;
तपगच्छ भूषण सोभतां, श्री विजयप्रभसूरिराज. ह० १७
श्री नयविजय विबुद्ध तणो हो. सीस भणे उल्लास:
ए उपदेसै जै रहे. ते पामे सुजस विलास. ह० १८
मुनि विबुध संवत जाणी एहो, ते हर्ष प्रमाण;
कवि जसविजए ए रच्यो, उपदेस चह्यो सुप्रमाण ह० १९

इति यानपत्र यादस्पत्योः परस्परं प्रशस्यसंवादालापः समाप्तः॥

श्री घोघा बंदिरे.

श्री योगनिष्ठबुद्धिसागरेण शोधितम्.



श्री ज्ञानसारकृत भावषट्त्रिंशिका.

दुहा.

क्रिया अशुद्धता कछु नही, भाव अशुद्ध अशेप;
मर सत्तम नरकें गयो, तंदुल मच्छ विशेप. १

भाव शुद्धता जो भइ, कहा क्रिया को चार;
दृढप्रहार मुगतें गयो, हत्या कीनी च्यार २

साधु क्रिया कछु नहि करी, रुपभ देवकी माय;
भाव शुद्धथी सिद्धते, सिद्ध अनंत समाय. ३

साठ सहस वरसे करी, किरिया अतिहि अशुद्ध;
भरत आरीसा भुवनमें, भावशुद्धतें सिद्ध. ४

नमुकारसी व्रत नही, करतो कूर आहार;
भावशुद्धतें सिद्ध ते, कूरगडु अनगार. ५

भावक्रिया अविअशुद्ध ते, मेल्यो नरक समाज;
भावशुद्धतें सिद्ध के, प्रसन्नचंद रुपिराज. ६

केवल श्री करणी करे, अभव्य लिंग संपन्न;
येगंठी भेदे नहीं, भावशुद्धतें शून्य. ७

पूर्व कोडी देसोनता, क्रिया कठीन जन कीन;
कुरड बकुरड नरक गतिः, अशुद्धभावते लीन. ८

वंश खेल किरिया करी, साधु क्रिया नही लेस;
इलांपुत्र केवल धरे, कारण भाव विशेप. ९

चरण क्रमण किरिया करी, गुरुकुं खंध चढाय;
भाव शुद्ध केवल भजे, नव दक्षित मुनिराय. १०

कपिल द्रुमक अति लोभ वश, लालचमां लयलीन;
शुद्ध भाव तबही भज्यो, आतम पदवी लीन. ११

पन्नरस तापस प्रति, गौतम दीक्षा दीध;
ते केवल कमलावरे, कौन क्रिया तीन कीध. १२
कृतअपराध खमावती, निजगुरणी के साथ.
मृगावती शुद्ध भावसें, सिद्ध स्वरूप सनाथ. १३
साधुक्रिया केसे सधे, घाणीमें पीलंत;
शुद्धभावते शिवलहे, खंदक शिष्य महंत. १४
नाच नचन किरिया करी, साध क्रिया नही कीध.
अषाढभूति भावशुद्ध, सिद्ध सुधारस पीध. १५
ते द्विज दीन दिक्षा ग्रही, क्रिया कौनसी होय.
ये शुद्धभावे सिद्धता, गजसुकुमाले जोय. १६
गुणसागर केवल लह्यो, सांभल प्रथवीचंद;
पोते केवल पद लहे, शुद्धभाव शिव संघ १७
सिंहणी भक्षे शरीर जब, मुनि करणी किम होय.
साध सुकोमल शिव लहे, कारण अन्यन कोय; १८
खंदक खाल उतारतां, साधु क्रियाकी सिद्ध;
भव निवास तज भाव शुद्ध, सिद्ध बुद्ध पद लीध. १९
उपजतो अेक पहोरमें, केवल ज्ञान अनंत;
भाव अशुद्ध ते नव लहे, श्रीदमसार महंत. २०
असंख्यात दृष्टांतकुं, कौलु वरणे जाय;
यै जेते बुद्धिमें चढे, ते ते दीध बताय. २१
भाव शुद्धता सिद्धको, कारन तिनुं काल;
क्रिया सिद्ध कारण नहीं, निश्चयनय संभाल. २२
ज्ञान सकल नय साधीये, करणी दासी प्राय;
शुद्ध भावना सिद्धको, कारण करण कहाय. २३
ज्ञानातम समवाय हे, किरिया जड संबंध;

याते किरिया आतमा, तीन काल असंबंध. २४

धर्मि अपने धर्मकुं न, तजे तीनुं काळ;

आत्म ज्ञान गुण नित्यजे, जड किरियाकी चाल. २५

प्रकृति पुरुषकीजोड हे, सदा अनादि स्वभाव;

भवस्थिति परिपाकते, शुद्धातम सद्भाव. २६

शुद्धातम सद्भावता, शुद्ध भाव संयोग;

भाव शुद्धकी सिद्ध ते, पाक काल परिभोग. २७

काल पाक कारण मीले, किरिया कछु न काम;

पातन किरिया वीन पडे, वाल दसन अभिराम. २८

काळ पाककी सिद्ध ते, सहज सिद्ध के जाय;

वीन वरषा फुले फले, ज्युं वसंत वनराय २९

भव परिणत परिपाक विन, भाव शुद्ध नही होय.

मुनि करणी कर नरक गति, कुरड वकुरड दोय. ३०

क्रिया उथापी सर्वथा, वंछक किरिया चार;

ये वंछक लक्षण रहित, सो सब शुद्धाचार. ३१

निश्चय सिद्ध जोलुं नही, व्यवहारे जियमेल;

जोलुं पिय फरसे नही, तब गुडीया सुखेल. ३२

निश्चे हुंति सिद्ध नहीं, विवहारे दे छोड;

एक पतंग आकाशमें, फीर दोरीदे तोड. ३३

जोलुं भाव न शुद्धता, तोलुं किरिया खेल;

घाणी गोलु पीलहे, तोलु नीकसे तेल. ३४

ज्ञान धरो किरिया करो, मन शुद्ध भावो भाव;

तो आतममें संपजे, आतम शुद्ध स्वभाव. ३५

जोलुं कारिज सिद्ध नहीं, तोलुं उद्यम खेद;

घट कारजकी सिद्धते, उद्यम खेद निषेध ३६

भाव छतीसी भविक जन, भावे भज निज भाव;
निज सुभाव भवोदधि, तरन नाव शुभभाव, ३७
शररस गज शसी संवते, गौतम केवल लीन;
कीसन घडे चोमास कर, संपूरन रस पीन. ३८
अति रति श्रावक आग्रहे, विरचौ भाव संबंध;
रत्नराज गणि सिस मुनि, ज्ञानसार सुचि नंद. ३९

इति श्री भावषट् त्रिंशिका समाप्ता.



गुंहली.

हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीस देशजो–ए देशी.

हांरे सखी नगरीमां आव्या छे गुरु गुणवंतजो,
भाव धरीने चालो तेने वंदवारे लोल;
हांरे ते तो रत्नत्रयी आराधक सद्गुरु संतजो,
जस मुख जोतां दीन जाए आनंदमांरे लो. १
हांरे वचनामृत जेनुं पुष्य नक्षत्रनो मेहजो,
सींचेरे भविजन मन रूपी भूमीकारे लो;
हांरे करे प्रफुल्लीत विकसित कमळतणीपरे तेहजो,
टाळेरे अज्ञान तिमिर रवि उगतांरे लो. २
हांरे जस नाम प्रमाणे गुणगणनो नहि पारजो,
बुद्धिसागर बुद्धिना निधि हुं कहुंरे लो;
हांरे वळी पंचमहाव्रत पाळे शुद्धाचारजो,

जोतां मुख देदार भविक उल्लसे बहुरें लो. २
हांरे मुज मनमां वसीया उत्तम तेह गुणींद्रजो.
जैन धर्मरूप नौका भव जळ तारणीरे लो,
हांरे ते चलवे सरळ पंथपर महा मुनिचंद्रजो;
मुक्ति पुरी पहोंचाडे चौगति वारणीरे लो. ४
हांरे निर्लोभी ते मधुकरी गौचरी लेनारजो,
उत्तम एहवी वृत्ति तेहनी देखथीरे लो;
हांरे जे शुभ फळदायक धर्म लाभ देनारेगा,
रसीक नमे तम चरणकमळ नित्य प्रेमथीरे लो. ५

बुद्धिसागरजीनी गुंहली समाप्त.

मुर्तिपूजन महिमा.

सवैया.

मुर्ति तणो महिमा छे मोटो.
समजे कोइक संस्कारी.
मुर्ति पुजनथी प्राप्त थाय छे.
सुंदर शिव पदनी यारी.
ए महिमा समजाणो आजे.
सद्गुरु बुद्धिसागरथी।
ए माटे एओना चरणे.
नमन करुं छे आ करथी. १

मुसलमान पण मूर्ति पूजे.
मक्कामां जइ नेमेथी
ख्रीस्तिओ पण फांसी फोटा,
पूजे इशुना प्रेमेथी;
भक्तिमार्गी श्री रामचंद्र के,
कृष्णनी पूजे प्रतिमाने.
कोइ सदाशिवके हनुमत्नी,
छबीना माने महिमाने. २

पुत्रो पण निज मातपितानी,
प्रत्यक्ष मूर्तिने सेवे.
सुंदरीपण निज स्वामीकेरी,
मूर्तिने तनमन देवे.
आर्यसमाजी दयानंदनी,
छबीनुं गौरव बहु जाणे.
मूर्तिपूजक छे दुनियां सर्वे,
मूर्ख मूर्तिने नहि माने ३

मूर्ति मूळ पुरुषनां उत्तम,
कार्यो संभारी दे छे
मूर्तिवाळाना मंदिरमांही,
सुखकर स्वच्छ हवा रहे छे.
योग्यशास्त्रने जैनागम ते.
मूर्ति खास वखाणे छे.
चमत्कार मूर्तिना अदभूत,
जे जाणे ते माणे छे. ४

वीर वाक्य तो सूत्रो मांहि,
प्रतिमा पूज्य बतावे छे.
सिद्ध पुरुष पण मूर्ति केरां,
गायन रूडां गावे छे.
मूर्ति भेद म्हने समझाणो.
सद्गुरु बुद्धिसागरथी,
अजितसागर थयो कृतारथ,
सद्गुरु पद शिर धरवाथी. ९

श्रीमद् बुद्धिसागरषष्टकमिदम् गुर्ज्जरभाषायाम्.

छंद–त्रिभंगी.

जय नित्य उजागर, करुणाना घर, वैरागिवर, धर्माकर,
जय सुखना सागर, अनुभव आकर, ज्ञानसुधाधर, शिक्षाकर;
जय श्रेष्ठदशाधर, दीनदयाकर, समतासागर, दीक्षाधर!
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्णप्रभाकर, प्रेमाकर. १

प्रभुपद निवासी, छो गुणवासी, अविचळ ध्यासी, विश्वासी,
प्रभुपंथ प्रवासी. विभु विलासी, वाणी सुधाशी, देवांशी;
तद्स्थान तपासी, तजी उदासी, उत्थ उल्हासी शांत्याकर!
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. २

गुरु! म्हने तमारी, प्रेम खुमारी, लागीभारी, छे कारी,
हुं जाउं विचारी, करवा न्यारी, उरमां धारी, आवारी;

पण जाय न प्यारी, हृदय विहारी, अद्‌भूतकारी, अजरामर !
जय जय योगाकर, बुद्धिसागर पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर, ३
छो शुभ संस्कारी, मद मोहारि, धर्म प्रचारी, क्रोधारि,
दुर्जन संगारि, दुर्गुणहारि, तत्वागारी, तृष्णारि;
भगवत् भजनारी, वृत्ति तमारी, सदैवसारी, भजनाकर !
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ४
जेनी चिति जळमां, वसुधातळमां, प्राणिसकळमां, ने बळमां,
वळी दावानळमां, तळ वितळमां, द्रव्य सकळमां, ने छळमां;
ज्ञानीना दळमां, रहि सहु पळमां, ते विभु दिलमां, तत्वाकर !
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ५
धीरज धरनारा, प्रभु भजनारा, तारण हारा, तरनारा,
बहु कर्या सुधारा, सुख करनारा, संकट भारा, हरनारा;
बहु भक्ताधारा, जय करनारा, सद्गुरु सारा, स्नेहाकर !
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर ६

दुहा.

छुं हुं आपतणो सदा, आज्ञा शिर धरनार;
हे सुंदर श्री सदगुरु, ऊतारो भवपार. ७

निर्जितेन्द्रिय सकळ गण, निर्जित विषय विकार;
अजित सागरनी वन्दना, होशो वारंवार, ८

संवत् विक्रम ओगणिश, पांसठ साल सुहाय;
अधिक कृष्णनी अष्टमी, षट्कथी सुख थाय. ९

लेखक—श्री बुद्धिसागरजीना शिष्य—अजितसागर,



संवत १३२७ मां रचाएलो गुर्जर भाषा साहित्यनो रास.

॥ श्री सात क्षेत्रनो रास ॥

॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

सवि[1] अरिहंत[2] नमेवि, सिद्ध[3] सूरि[4] उवजाय[5]

पनर कर्म भूमि साहु[6], तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥

जिणसासणमांहि जो सारो, चउदह पूरवतणउ समुधारो

समरिउ पंच परमेष्टि नवकारो। सप्त क्षेत्रि हिव[7] कहइ[8] विचारो॥२॥

धुनु[9] धुनु तेजि संसारे, जिहं[10] जिणवरु[11] स्वामी,

गुरु सुसाहु[12] जिणभणिउं[13], धम्मु[14] सुग्गइ गामी[15] ॥ ३ ॥

वारि अंगि दुलहु[16] मणु जम्मु[17], अतीअविशेपि (अत्यंत विशेपे) जिहि[18]

---

१ सर्व. २ अरिहंत=तीर्थंकर. ३ सिद्ध=अष्ट कर्मथी रहित परमात्मा. ४ सूरि=आचार्य. ५ उवजाय=भणावनार उपाध्याय. ६ साहु=साधु. ७ हिव=हवे. ८ कहउ=कहु. सर्व अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अने पन्नर कर्मस्थित साधु ए पंच परमेष्टिना पादमां नमस्कार करीने सात क्षेत्रनो विचार करुं छुं. पंचपरमेष्टि-रूप नवकार छे ते जिन शासनमां सार छे. तेमज चौद पूर्वनो समुद्धार छे. ॥ २ ॥ ज्यां जिनेश्वर स्वामी छे ते देव तरीके छे. सुसाधु गुरुरूप छे. सुगति देनार जिनकथित धर्म ए त्रण रत्ननी जेने प्राप्ति थइ छे ते जीव जगत्मां धन्य धन्य छे. ॥ ३ ॥

९ धुणु धुणु=धन्य धन्य. १० जिहं=ज्यां. ११ जिणवरु=जिनवर. १२ सुसाहु=सुसाधु. १३ जिणभणिउं=जिनभाणित. १४ धम्मु=धर्म. १५ सुग्गइ गामी=सुगति गामी. २६ दुलहु=दुर्लभ. १७ मणु जम्मु=मनुष्य जन्म १८ जिहिं=ज्यां. १९, धम्म=धर्म.

जिणवर[19] धम्म[20] सम्मतरयणु विति निवसय जीह, सोहग उपरि मंजरि तीह ॥४॥

पुणु[21] जिणसासणु[22] दुलहउं जीव संभलि कथं तु निरुपमु[23]
नाणुपहाणु[24] पकुजि जिनवर धम्मु ॥ ५ ॥

भरहखित्ति[25] खट्‌खंडह[26] "धिन्निकेवलि नाणि"[27] जिणवर जंपित
वैताढ्य परहां त्रिखंड होइ, तहि धरमनामुनामुनवरतहोइ॥६॥
चल्या[28] त्रिहुखंडि थित्ति (थिति;) केवलि इम आषय, (भाषइ;)
ताहमाहि दुनि षंडने पडिया पावइ ॥ ७ ॥
मजि षंडइ कुवइनी मडिउ, तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं,
चउथउ भाग धरमनइ लागे, तेउ जोइ जईसय विभागे ॥ ८ ॥
ते न वाटंणवइभाग साहू, मिथ्यातिहि जडिन थाकतउं
कुमति कुवोधि कुगुरुगहि पडिउं ॥ ९ ॥
थोडा जीव केई दीसइ तेजे जिणन भणअंमनिहिकरंति हिव[29]
तिहुयणिहि[30] सारु समिकत्तो पामिउ जीवि जिनभणि उत्ततचो[31]॥१०॥
बार वरततइं पामिउ जे जिणवरि वुत्ता सुगइति
बंधण सत्ता जीव मुकति[32] दीयंता ॥ ११ ॥
प्राणातिपातव्रतु पहिलउं[33] होइ वीजउ[34] सत्यवतु जोइ

---

२० सम्मत्त रयणु=सम्यक्त्व रत्न. २१ पुणु=पुनः २२ जिणसासण=जिन शासन. २३ निरुपमु=निरुपम. २४ नाणुपहाणु= ज्ञान प्रधान. २५ भरहखित्ति=भरत क्षेत्रे. ६ षट् खंडह=छ खंड. २७ धिन्नि केवली नाणी=धन्य केवलज्ञानी. २८ चउथउ भाग= चतुर्थ भाग. २९ हिव हवे. ३९ तिहयणिहि सारु=त्रण भुवनमां सार. ३१ तचो=तत्त्व. ३२ मुक्ति=मोक्ष. ३३ पहिलउ=पहेलुं. ३४ वीजउ सत्यव्रतु=बीजु सत्य व्रत.

त्रीजइ व्रति परधन परिहारो, चउथइ[३५] शीलतणउ सचारो ॥१२॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांमचइ कीजइ
ईणपरि भवमहसमुद्रो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छट्ठउं[३६]व्रतु दिसिनणउ[३७] प्रमाणु, भोगुवभोगव्रत[३८] सातमइ जाणु,[३९]
अनरथ व्रतु दंड[४०] आठमउं होइ, नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥१४॥
देसावगासी दसमुव्रतु नथी मूह पोपथ
व्रतु अग्यारमसउ जम समतूलु ॥ १५ ॥
व्रतुबारमउं अतिथिसंविभागुओ[४१] तोइ सुकतियरतनमागो
जईण[४२] मारगि चालइं संसारे, धनु[४३] सक्रियारथें ते नरनारे ॥१६॥
समकितमूलु व्रतु[४४] बारइ गहिय धरमि पालेउ
सप्त क्षेत्रि जिन भणिया तिहं वित्तु वावेउ[४५] ॥ १७ ॥
सप्तक्षेत्रि जिन कहिया[४६] महामुनि वितु[४७] वावेजिउ विवहपार जिन
वचसु आराधीउ अवक्रमु साधिउ लहइ पारु संसारुसारे॥१८॥
सपते क्षेत्रि जिनसासणिहि सगली कहीजइं, अथिरु रिधि धनु
इन्यु बीजवुतहि जिवातीजाइ तेहि क्षेत्रि वावे त्रण थानकि
लाभइ देवलोको कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो॥१९॥

पहिलउं[४८] क्षेत्र सुजिणहभुवण करावउ वंगूजीछे महिमाकरइ
सहु श्री चउविह संघमूलगतारउ गूढ मंडइ पुछ कुवउकी सहिउ

---

३५ चउ=चोथे. ३६ छठ्ठुं व्रत. ३७ दिशिनुं परिमाण ३८ भोगोपभोगव्रत ३९ जाण ४० अनर्थ दंड आठमुं. ४१ अतिथि संविभाग ४२ यतिना मार्ग. ४३ धन्य. ४४ वृत्त. ४५ वावो. ४६ कह्यो. ४७ वित्त ४८ पहेलुं क्षेत्र.

आगइ कीजइ रंगमंडपु[४९] जो पुस्तक कहिउ ॥ २० ॥

तेहिं आतरइ वलामणु कीजइ आघेरउ जिमजिनभवनह नालिमाहि दीसइ, नीकेरउंचउचंगतोरणु[५०] थंभ थोरु घाटु अति· नीक वकडीयइ नानाविधि रूपि सारुवारु तहि नीकालु जडिउ॥२१॥

बिहु पक्ष फरती ' देहरी कीजइ इतिरुडीव बीजमूर्ति जिन हतणीमाहि तेवड तेवडी कणयकलस[५१] दंड घांटीइं धजपूरीय[५२] कियजइ[५३] छोहं[५४] पकत[५५] मासादु[५६] भलउ जीवनीपाइ वाजइ[५७] ॥२२॥

तहि जिनबारि[५८] कमाडभलां कीजइ, अति सुविघट्ट मणहजाइ सुरुतउ आनिसुघुटुसादुआर हढद्रागुणज आवइ[५९] संपुट तां कूंची सांकली अतिनीसलकीजइ[६०] जउ आयमणह जाइ स्वरतउ? संपट दीजइ[६१] ॥ २३ ॥

अतिति सपउ जिणहभुयणु[६२] किरिअमरविमाणु[६३] दीसइ[६४] सुरति वीतरागमाहि तिहुयणुभाणु[६५] कठणुरूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु[६६] अठप्रातिहारिज[६७] जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोकु[६८]॥२४॥

---

४९ रंगमंडप. ५० उंचु तोरण. ५१ कनक कलश. ५२ ध्वज ५३ कीजे. ५४ पंक्ति. ५५ प्रासाद ५६ भलो ५७ वाजे ५८ त्यां जिन बारणे. ५९ आवे. ६० कीजे. ६१ दीजे. ६२ जिन भुवन. ६३ अमर विमान. ६४ देखाय. ६५ त्रिभुवन भानु. ६६ विशेष ६७ अष्ट प्रातिहार्य (अशोक वृक्ष) २ सुर पुष्पवृष्टि. ३ दिव्य ध्वनि. ४ चामर. ५ आसन ६ भामंडल. ७ दुंदुभि. ८ छत्र. अष्टप्रातिहार्य छे तीर्थंकरने ए अष्ट प्रातिहार्य होय छे. ६८ अशोक

[६९]भामंडलु, सुर कुसुमवृष्टि, [७०]सीहासणु, छत्र, भेरि, चमर. देवंजु णिहिण जोइ कवणु प्रभुत्रुए थितिएसी वीतराग मेल्ही अवर न होइ सुरादिक जिनसेव [७१]करइं नवि [७२]सगलइं ॥ २५ ॥

तउ जिन सविजीव विशेपिहि करीयइ भागउ जिण भुवणि तेउ समुद्धरियइ [७३]लीपिउ [७४]धउलीउ भीगु देइ [७५]चीत्रामु लिपीजइ इणपरि [७६]भुयणु ससारीय [७७]जन्महफलु लीजइ ॥ २६ ॥

अतीउजुकाइं किपिठामु जिणभुवण सीदाइ, तंनिश्चिइं करावीयए [७८]वहुफलु वोलइ आपणि, [७९]सामीउ वीतरागु [८०]ईणपरि भणेइ [८१]जीर्णोद्धारहणा [८२]पुण्य अतित होइ ॥ २७ ॥

[८३]वीजं खेत्रु सुजिनहविंत्रु तेइहां विचारो मणिमय रयण सुवर्णमए विंवरूपमकारे, [८४]हिंव जिनभुवणह गृह चैत्यदेवदारा छकहीमइ कीजइ [८५]कणयाभिंगार कलस जे नीर [८६]भरीजइ ॥ २८ ॥

---

६९ भामंडल. ७० सिंहासन. ७१ करे. ७२ सघळे ७३ ७३ लीपेलुं. ७४ धोळेलुं. ७५ चित्रामण. ७६ भवन ७७ जन्मफल लीजे. ७८ वहुफल वोले. ७९ आपणो स्वामी वीतराग. ८० एवी रीते कहे. ८१ जिर्णोद्धारतणा. ८२ पुण्य अत्यंत होय. वीतराग भगवान् कहे छे के जे जिर्णोद्धार करावे छे तेने निश्चय अत्यंत फल थाय छे. वीजुं क्षेत्र जिनेश्वर भगवान्नी प्रतिमा भरावबी ते जाणवुं. मणिमय प्रतिमा, रत्न प्रतिमा, सुवर्णमय प्रतिमा करावीने जिन भवनमां तथा घर देरासरमां पधरावीने श्रावक जळकळश भरीने तेनी पूजा करे ८३ वीजुं क्षेत्र. ८४ हवे. ८५ कनक भृंगार. ८६ भरीजे.

तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ पारइ पीतलमइ भलांग्रिहिचैति पूजीजइ घरि देवालाइं करावित तीकाइमणों इइ जीछे तिहूयण[८७] सरण[८८] सामि पूजीजइ जिणवर[८९] ॥ २९ ॥

सुगंधि नीरि सनाथु करइजिण जीणि आणिदिहि ते मंसार हकसमलह नवि छीपइ, विदिय अंगलूइणे सूक्ष्मकरउ सुफरां वहु मूला नियसक्ति करावियइ जेवदेवंगतूला ॥ ३० ॥

कीजइ उरसुरूयडा सिरखंड मसेवा, कपूरवटे वाटीइ कपूर जितस्वी मुखि देवा, मुंकइ जिण भूयणिहि घाति अतिनीकी धूपीवालाकुंची जणी दुपीगाणी कूंपी. ॥ ३१ ॥

अति सुगंधिहि सिरखंडि कपुरिहिआंगी कीजइ सामी वीत राग मभु वनवन वर्णगी कसतूरिहिं[९०] कुंकुमिहि[९१] तितउ निलाडिहिं सामी तेण वितपरिकलइ लछी अति नीकइ धामी ॥ ३२ ॥

आभरण चडावियइ सोत्रणमय[९२] वडिया, हीरे[९३] माणिकि[९४] मोतीए[९५] वहुरयणे[९६] जडिया, अतिरूयडउं[९७] आभरणतणउ भलउं[९८] कीजइं संपूरउ नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥

कानिहिकुंडल शिरिसमुकुटुकिरि ऊगिउ[९९] भाणू[१००] जाणे. तिहू-यणि[१०१] सयल[१०२] लोक आसिनवउं विवाणूं, उरमालहकंठिमांकलउ मुक्तावलिहार नयणि निहालिने वीततरागु रुयडउ सुर सास ३४

वाहुजुयलि वेत्र वहिरखा अतिनीका सोहई टीलूउं श्रीवत्सु

---

८७ त्रिभुवन शरण ८८ स्वामी. ८९ जिनवर. ९० कस्तूरिवडे. ९१ कुंकुमवडे. ९२ सुवर्णमय; ९३ हीरा. ९४ माणिक्. ९५ मोति. ९६ वहु रत्न जडिया ९७ अति रूडुं. ९८ भलुं. ९९ उग्यो. १०० भानु. १०१ त्रिभुवने. १०२ सकल.

सारूयार भवियण[3] मणिमोहइ सोनाकेरी पालठी कीज जिनपते सोहइ वीजउरुउं[4] सामी जिण हथ्थे ॥ ३५ ॥

इणि विवेहि न हुय विशेषि हि जिणवर पूजसलख्खणीय करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्री संघनयण सुहामणीय ॥३६॥

एतीअजीइ आभरणतणी पूजा नीपन्नी हिव[5] आरंभि सुजिणह अंगि सुरहां कुसमपन्नी कीजइ कुसमेव गेरीयए पूजकारणि रूयडी वावरीइ दीहु देव काजि अन्न इच्छा जीछवडी ॥ ३७ ॥

रायचंपु, केतकी, जाइ, सेवती परिमल बउलि[6], सिरीवालउ[7] विअलु अनुकरणी पाडल, नीलउत्री विविध पूजामाहि सोहइ अति विगी वितिपाति दीसइ रूपडे तिणि नवनवभी ॥ ३८ ॥

नीकउ कणयरु, पूजमाहि वरणकि सोहंती परिमलु पसरइ असमजाति पाच्छइ विहसंती कुंदु अनइ मचकुंदु वालु जुई परिजाते पास कुसामि कर पूजउ तुम्हि तिहुयणपत्तो ॥ ३९ ॥

सुरहउ सरूयउवावची अअइ इकलहार, सहुयइ वीतराग सामी सुरसार, नीलउत्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ईणपरिपूजइ सामि सामल नरनारी धन्न ॥४० ॥

पएहेरामणीयइ[8] पूजतोइ नीकी सोहंती तउ नक्षत्र हतणी मालदी वाश्रूंवंगी पाखलायइ माहि तुयण विंह केरी आणी कुसम पूजियइ तेसवि संखेवी ॥ ४१ ॥

समोसरणु[9] जो पूजीयए जोतिन्नि पयारू विहु परिख दीसइ वीतरागु[10] जहि तिहुयणसारू[11] तउपूजानी पन्नीय पूत्रि धूप उट-

३ भविजन. ४ वीजोरु. ५ हवे ६ बकुल ७ श्रीवालो. ८ पहेरामणी ९ समवसरण. १० वीतराग. ११ त्रिभुवनसार.

ज्जली जाइवीजणिंयं ऊखेविड्ड गुरु तहिं घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥

धूप अगुरु सादेति वीरे सिद्धावडा कीजइ संदंडासणे[12] अतिरूयडे जिणभुवणु[13] पुंजीजइ[14] आखेरिहिंमजूसभली अन्नय चउकी चट ढोईउ आखे करउ भलीय मंगलीकं[15] अठय ॥ ४३ ॥

वद्धमाणु[16] वरकलसु[17] अनइ भद्दासणु[18] छत्तु[19] दप्पणु[20] नंदावरतु[21] तहि साथीउ[22] श्रीवत्सु[23] अठ मंगलीक नीणपाटि भरियइ जिन आगईण परिजंधन वेचीइ एतले खइ लागइ ॥ ४४ ॥

दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रत्रउ[24] दीजइ, चमर ढलंते वीत-राग तेहि घनु वेवीजइ तेउऊलोवकारोवियइ जिणभुवण गम्भारे[25] वाटा मखर अलंबकीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥

तोरण बंदु खालि वारि साथि जिणभुवणि, पूजा जोइ सहु कोइ आवइ[26] तीणि खिणि[27], पूजा जोइ वा जिणहभुयणि[28] भोइ सुह गुरु आवइ तउ संथिहि आग्र कहु करीउतीछेरहाविय ॥ ४६॥

पहषउ वेला एक प्रभु अहांवच्छथु होसिइ संघ वयणुमाने वि सुगुरु[29] तिसि सिखं[30] पइसइं[31] तिणि वेलां[32] बइसणां[33] पाटि जोइ

---

१२ संदंडासणे. १३ जिनभुवन. १४ पुजीए. १५ मंगलीक आठ, आठ मंगलनां नाम. १६ वर्धमान. १७ वरकलश. १८ भ-द्रासन. १९ छत्र. २० दर्पण. २१ नंदावर्त २२ साथियो, २३ श्री वत्स. ए आठ मंगलनां नाम छे २४ छत्रत्रय २५ जिनभु-वन गभारे. २६ आवे. २७ ते क्षणे. २८ जिनभुवन. २९ शुभगुरु. ३० शिक्षा. ३१ देवे. ३२ ते वेला ३३ बेसणां.

पारह्ला चउकीवंटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ[34] भल्ला[35] ॥ ४७ ॥

वइसड सहूइ श्रमण संघ सावय[36] गुणवंता जोयइ उच्छवुह[37] भुवणि मनिहर[38] धुपुधरंता[39] तीछे तालारस पडइ वहु भाट पढंता अनइ लकुटा[40] रस जोईइ खेला नाचंता ॥ ४८ ॥

सविहू सरीपा सिणगार सवितेवड तेवड तेवडा नाचइ धामीयरं भरेतउभावइ रूडा सुललित वाणी मधुरि सादि[41] जिणगुण गायंता तालमानु वंदगीत मेलु वाजित्र वाजंता ॥ ४९ ॥

तिविलझाल्लरि[42] भेरु[43] कराडि कंसाला वाजई, पंचशब्द मंगली कहेतु जिणभुवणई च्छाजइ,[44] पंच शब्द वाजंति भाद्रु अंबर बहिरंती, इणपरि[45] उछवु[46] जिणभुवणि श्री संघु करंतउ ॥ ५० ॥

तउ, आरती परगुण काउं आरती पटऊपरि ऊठिउ; संघ परि विधिहि सहिओतउ साहीउ विहुकारि नीरलुण[47] ऊतारियए कुसम[48] ऊतारी संघपति ऊठी सेसिभरई सहत्थिहि माडी संघपति आर तीछिया हुइ जउ वा वाडरीआरती जोग थांभली अआणउग रूपरी ॥ ५१ ॥

पाछइ जिण गुणगाइ पढइ साहू पालउल लोक श्रीसंघवीह अदातुदियइ जाह जेसाजोगू ऊतारीया आरतीआ ताइ संघपति

---

३४ भावे. ३५ भला. ३६ श्रावक. ३७ उत्सव. ३८ मनोहर. ३९ धूप. ४० लकुटरस (दांडीयारस) ४१ मधुर सादे. ४२ झालर. ४३ भेर. ४४ छाजे. ४५ एणीपेरे. ४६ उत्सव. ४७ नीर लुण-जलनी साथे लुण उतारवुं ते) ४८ कुसुम.

सइहराखिउ[49] रोमांची[50] सारीरु तहिजिणचंदं सणु देखीउ ॥ ५२॥

मंगलीकु[51] ऊतारीयए चंद वाजइ सरूई, श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूई[52], तउविधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु ऊतारीउ इणपरि सुंअकृत[53] भंडारु तोइ, भव्यजाविहिभरि आरती तांइ संघपति सउ हयाउ ॥ ५३ ॥

जे जिन भुवणतणां कृत्यई छेडइ. काहिया ते गृह चैत्य करावियइ, सविशेषपिहि सहिया अनि अजकांई कोइटामुमूहूइंहो सरियउं तेउ मुम्हि भविय करावि जिअ सहूइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥

उछवुं जिनभुवयाणि हरषिनियमाणि करइ, सव्वु[54] जयवंतु नितृ हिव त्रीजउ[55] क्षेत्रु कहि सुपष्ठित्तू सणउ जीवजेतिना भणितू ॥५५॥

वीजउक्षेत्रु सुसभलउ ए वरलोयणेज भणिउं वीयराइ गुण गंभीर सो जिणइवयणु[56] मृगलोयणे तसु नवि ऊपम[57] काइ[58] ॥५६॥

वचन इकोका[59] मूछ नहीं वरलोयणुणेजं वोलइ भगवतु तिहु भवणे धूजमाणीय मृगलोयणे सहू जाणइ[60] ॥ ५७ ॥

अरिहंतु[61] पदइ कवणव्युपजिन वचन तणउ वरलोपवुज्जइ लोकु अलोकु सेजजिसिद्धे तज सलही अइए मृगदे अइसिद्धि सजोगु ॥ ५८ ॥

गणधर करइजंपुवधरचरण[62] सुयकेवलिहि[63] करतु दसपूरव

---

४९ हर्षित. ५० रोमांचित. ५१ मंगलीक ५२ मोटी (गुर्वी) ५३ सुकृत भंडार. ५४ सर्व. ५५ त्रिजुं क्षेत्र. ५६ जिनवचन. ५७ उपमा. ५८ कांइ ५९ एकेक. ६० जाणे. ६१ अरिहंत. ६२ पूर्वधर चरण. ६३ श्रुत केवली.

धरज करइ मृगतं भणियउयइ सिद्धितु ॥ ५९ ॥

त्रिहु भुवणहतणउ जाणिय वरए आगममाहिविचारु,[६४] चउदपूरव इग्यार अंग मृगय करइ गोतमु स्तुतिहारु ॥ ६० ॥

सूत्रहार[६५] तहिनिउछणा एवर० जिणि[६६] जाणिउ[६७] एउ सूत्रात्रिपदी[६८] आपीय वीरनाथिइ[६९] मृ० आथउं गोतम वुतु ॥ ६१ ॥

केवलनाण पुच्छितिगय उवर० गयसावि पूरवधर जे हुंता गुरु मह्मघणउं[७०] मृग० गयासुते मुनिवरा ॥ ६२ ॥

अल्प मेह्महन विघाहर एवरपजिण वयणुं निरुपमु तीणकारणि श्री संघ मीलीय मृगण्यो घेठवीउ आगमु ॥ ६३ ॥

भक्षाभक्ष[७१] सो छुड्डियए वरप अन्नी गन्नी गस्मा गंमु कृत्याकृत्य परीछिय ए मृग० जाणीय इ धम्माधम्मु[७२] ॥ ६४ ॥

नजीवीलाहु उलिउ एवरय च्छुड्डियइ एहु विचारु श्री सिद्धंतुलिख्य[७३] वियए मृग० जोउ[७४]त्रिहुभुवणहसारु ॥ ६५ ॥

श्रीजउक्षेत्रु[७५] इ सवावीय वए वरपावित्ति संवेगुधरेउ वेवीउ विएहविचरत जोइत्तलिखावीयए[७६] मृग० श्री सिद्धान्त जएउ[७७] ॥ ६६ ॥

बाहूदंड पोथाकराउ एवर० पोथीयनीकीयतोइ ज्ञान लग

---

६४ विचार. ६५ सूत्रधार. ६६ जेणे ६७ जाण्युं. ६८ उपन्नेवा, विणणेवा, धुवेवा. १ उत्पन्न थवुं, विनाश पामवो, मूळ रुपे स्थिर रहेवुं एम वस्तुना त्रण धर्म छे माटे आ त्रणने त्रिपदी कहे छे. ६९ वीरनाथे. ७० घणीप्रज्ञा. ७१ भक्ष्याभक्ष्य. ७२ धर्माधर्म. ७३ सिद्धान्त लखावीए. ७४ जेतो. ७५ त्रिजुं क्षेत्र. ७६ जोइतुं लखावीए. ७७ जिनागम.

इ सविलास हुइ मृग० ॥ ६७ ॥

पाठां दोरी वीटणां वरसिद्धांतहभत्ति वानीदोरा ऊतरीय मृग लोयणे पोथीय थाय सचि ॥ ६८ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु इम वावउनिरपमलियउः लाभुहंता तणउ जिम अठकम्मगंजीउ[७८] भवदुह भंजीउ सिद्धि नयरि खेमिइ[७९] मुणउ[८०] ॥६९॥

हिव श्री श्रमण संघ भत्ति[८१]करउ[८२]जी वतुम्हि यथाभक्तिपहिलाउं कीजइतोइ पावयणा अनीय विशेपिहि आयरियउ वणा ७०

इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ, निश्चय भवसायरु तरीजइ जे जिनवरिमुनि कहिया आगमि, क्रियासार अनइ खरत[८३]संजमि ७१।

पंचमहव्वयभारु[८४] धरंता, दसअनुच्यारि[८५] उपगरण वहंता, नव कल्पिइ विहार करंता. ते मुनि भणियइ चारित्त दंता ॥ ७२ ॥

जे मुनि पंच समिति[८६]च्छइ समिता, त्रिहिहु गुप्तिहि[८७]जे अच्छइ गुपिता, सीलंगसहस अढा[८८]वरहंता, ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥

जे मुनि निम्मल निरहंकार, सदाचार दीसइ सुविथार[८९], जे धूरिजूता गणगच्छ भारा, ते मुनि भणिया गुणह भंडारा॥ ७४ ॥

ईणपरिभल्ला क्षेत्र विशेपि, दियउ दानु तुम्हि भविहरखि, जिम तु च्छूटउभवना भार, पामउ सिवसुखु निरुपमसारु ॥७५॥

---

७८ अष्टकर्म गंजनार. ७९ क्षेमे. ८० जाणो. ८१ भक्ति.८२ करो. ८३ तीक्ष्ण संयमे. ८४ पंचमहाव्रतभार. ८५ चौद उपकरण मुनिनां छे. ८६ इर्या आदि पंचसमिति. ८७ मन, वचन अने कायगुप्ति. ८८ अढार हजार शिलांगरथना भेदने धारनार. ८९ सुविस्तार.

जे जिनआण सदाछइ रतू, बावीसपरीसह सहइ अपमत्त. जिन आदेसु धरइ सिरिउपरि, तेजिमहामुनि नीयइ सुवरि ॥ ७६ ॥

बइतालीस दोषसु विसुद्धउ, लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्ठउ, इंदिय विषय व्यापिनगूवइ, तवि, नीमि, संजमि खणवि न मूचइ ॥ ७७ ॥

किसुं घणउं हउं कहुं विचारो, मुनिरयण गुण न लहउंपारो, अनुव्रतु वालइ जे जिन आण, ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥७८॥

प्रसंसीइ मुनिजिहिया तेगुणजिणवरि श्रीमणी कहिया एकु विशेखु पुणी श्रमणी दीसइ उपगरनोइ पंचवत्रीसइ ॥ ७९ ॥

चालइ खड्गधार तोऊपरि, सीलवंत ते नमीइं सुरवरि, महासती जछइ अपमत्त, धाराभणइ तेहिपवित्त ॥ ८० ॥

जीहां जिन आण हियइ परिणमी, ते श्रमणी तोइ मेरहसमी जे सद्धी जिण आण करंती, धनुधनु श्रमणीह महासूती ॥८१॥

जिण सासणु जेहिय इम उज्जाआलिउ, कसिमल पावपंकु

---

९० रक्त. (आसक्त) ९१ शिर्षपर. ९२ बेतालीस दोष रहित आहार लेनार. ९३ क्षण पण. ९४ न मूके. ९५ केटलो. ९६ घणो ९७ हुं. ९८ कहुं. ९९ पांच अनुव्रत. १०० पाळे. १ मेरु पर्वत समान. २ श्रमणी (साध्वी) ३ एक. ४ विशेष. ५ पुनः ६ साध्वी पच्चीश उपकरणधारे. ७ तरवारनी धार. ८ जे छे. ९ प्रमाद रहित. १० पवित्र. ११ आज्ञा. १२ हैयामां. १३ मेरु समान. १४ शुद्धि. १५ धन्य धन्य. १६ जिन शासन. १७ अजवाळ्युं. १८ पाप. १९ पापपंक.

[२०] पखालिउ, एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त, वावन धामी हुइउ स-वितू ॥ ८२ ॥

जा हिवडांतूं संपति अच्छइ, इसीय वरापन पामि सिप्पछइ, ज भलखेत्रि वित्त न वाविसि, [२१] पाछइ [२२] परभवि [२३] किसउ [२४] लुणाविसि, ॥ ८३ ॥

वरापटली विनु वाविंसि सारु, ऊगिसिखड सम्भुकाइ ऊतवारु, जउ भलो, क्षेत्रि वरापइवाविंसि, तउ इक गुणइ अणंतगुण पाविसि ॥ ८४ ॥

एतलं क्षेत्रं जिनवरि कहिया, वावे [२५] धम्मी [२६] भावणसहिया, तउ सीचे [२७] अनुमोदनापाणी, जिमहुइ सफली गयानिरुवाणी ॥८५॥

ईणपरि वाविजइ [२८] सुखेत्रु, दीजइं भक्त पानु [२९] सूझंतू विद्यादा-तुंज्ज दीजइं सारु, जिणु भणइ ते पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥

ओषध आदि सहु [३०] सूझउं दीजई, नियवर [३१] नियघरिहुंतउं अनिउज्ज काई मुनि उपगरइ, तंसूझतूं वहरउं करइ ॥ ८७ ॥

जंजंमुनि [३२] जोअइ [३३] सूझंतउं, तंतं दीजइ [३४] नियघरुहुंतउं, गुरु आवंती कीजइ [३५] अभिगमणउं, दीजइ भक्ति [३६] थोभवंदणउ, ॥ ८८ ॥

विनय [३७] वयावच्चअनीउ विशेपिउ, कीजइ सुवीउ महा मुनिदें

---

२० धोयुं, (पखाल्युं) २१ पछे. २२ परभवमां २३ शुं. २४ लुणीश. २५ धर्मि. २६ भावना सहित. २७ अनुमोदनाजल. २८ क्षेत्र. २९ सुजतुं ३० सुजतुं. ३१ पोताना घरे होय ते. ३२ जोइए. ३३ सुजतुं. ३४ पोताना घेर होय ते. ३५ सामा जवुं. ३६ स्थोभ वंदन. ३७ वैयावृत्य.

खीउ, पर्युपास्ति तह्यी कीजइ घणीय, जिमजिम जिनवरि आगमि भणीय ॥ ८९ ॥

एहज परिश्रमणी जाणेवी, करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेवी, जेम्हय महामुनि दोजड, ततं श्रमणी कीजई ॥ ९० ॥

[38] आगइतोइ [39] पूर्विहिं गुणीजइ, [40] धनुधनु सारथवाह कहीजइ, [41] घीउ [42] विहिराविउ जिणिमुणिंदउ, तिणि फालि [43] हूयउ पढम [44] जिणंद्. ॥ ९१ ॥

[45] हथिणाउरि [46] नयरि श्रेयांसि, हियरो त्रिउरिपु सुरिपुरिसि, तिणि फलि तिणभवि [47] केवलु ज्ञानु, दिइतु भविक मुनि इणपरि [48] दानु॥९२॥

वीर जिणेसर छट्ठा मास, चंदण पारवेइको मास, तीणि दानि व संपति पामी, दियउ [49] दान तम्हि अनव्रत [50] धामी ॥ ९३ ॥

जोटन संगमिकीउं, मुनिपारावीउ खंड [51] खीरु [52] घीउ, तिणि फलि तु सर्वार्थ सिद्धि पामी, पाछइ होसिइ [53] सिवसुहगामी ॥९४॥

[54] टउ भल्लउ खेत्र् वावउ वित्, सिवसुह संपत्ती देइन भत्ति न भत्ति सामि सालु आगमि भणिचि ॥ ९५ ॥

हिव तोइ श्रावक तणओ क्षेत्रु भवी कहीसइ जउ जिण सासण तणी भूमिं अतिं भलउं फलीसिइ किसउ सुश्रावक जाणिवउ

---

३८ आगेतो. ३९ पूर्वे. ४० धन्य धन्य. ४१ घी (घृत) ४२ वहेराव्युं. ४३ थयो ४४ जिनेन्द्र. ४५ हस्तिनापुर. ४६ नगरी. ४७ केवलज्ञान. ४८ दान. ४९ दान. ५० अनुव्रतधर्मि. ५१ -वीर. ५२ घी. ५३ शिवसुख गामी ५४ भलुं.

जिणसासण भितरि,[55] श्री वीतराग तणीय आण मानइ सिर उपरि ॥ ९६ ॥

समकित थूल मूलबार वरत, पाळइ नरनारि निवसइ हियडइ[56] वीतरागुए[57] पूजि सुरसारु कामदेव जिम वलइ नही वीतरागह धर्म वीरनाह[58] जिणवरु दियइ तस्रुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥

सदाचारु[59] सुविचारु[60] कुसलु[61] अनइ निरुहंकार,[62] शीलवंत निकलंक अनइ दीनगण आधार, जिनह वचनि तिम सातधातु जीह श्रावक भेदी, जाणे तीह गर्भवास वेलि मूलहुंतीच्छेदी ॥ ९८ ॥

जाणइ[63] ऊचितु[64] सहू काय[65] साचउ,[66] विचारुउ धातुधिमनमाहि वसइ इकु निश्चउ साह, उत्सर्ग अनइ अपवाद एहइ जाण सविसेखू[67] भाणियइं श्रावकतणी भावीमयं मूळी साजीहए हुविवित्का॥९९॥

जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिण सासणि ते गुण जिणभणइ श्रीवियह[68] जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥

त्रिधा सुठि[69] वीतराग वरुइ मनसी भितरि जीह सुलहउ सि वपुरतणउ वासुतो श्रावक तीहपेढइ जिणवयण सुणइ संवेगि संपूरिय सीलसनाहि[70] पहिरिइ[71] क्रमऊपरि सूरी ॥ १ ॥

ईह सुश्रावकतणउ क्षेत्रु वाछु सवि दीस जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस जिम भरथेसरिवावी[72] रिसहेसरनं-

---

५५ मध्य. ५६ हृदये. ५७ वीतराग. ५८ वीरनाथ. ५९ सदाचार. ६० सुविचार ६१ कुशल. ६२ निरहंकार. ६३ जाणे ६४ उचित ६५ कार्य ६६ साचो ६७ सविशेष ६८ श्राविका. ६९ शुद्धि. ७० शीलसन्नाह. ७१ पहेरे. ७२ भरतेश्वरे.

दणि गृहवास ऊपरि ज्ञानुना सुपसरीउ तिहुयणि ॥ २ ॥

तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउइउ खित्तु[७३] लहिमउ लुण निरवाण नयरिति पतिहाबुहूतुपहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक ज्ञानाउ जाणी पाय पोय पखोलीय सइहाविलेउ कुंकुम वाणी ।३।

इच्छई भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सयउ दीजइ श्राविकां पउ आगमि कहिउ उपरिउगटि फल पान कापड अनुमानिया दीजइ निजभक्ति भलागरूयइ वहुमानि ॥ ४ ॥

भद्रथेसर जिम श्रावकह दीजइ आवास लीणाजे जिनवयणि अछइ वणहनिवास आछिलनी परि एक कीसउ परिहुइ अइअ-संखाविधि मातु फरसइ सहू नरनारी दुःख ॥ ६ ॥

वाछिलनी परि एकजीतहउंकहीउ नमसाकउ एकहवार स-कूसारु तुम्हकहीउ अजमूकिउं जांजो कीजइ कुणवकाजिए अति-भलांभलेरांतो कीजइ साहमिय[७४] प्रति अजो अधिकेरां ।। ६ ॥

कीधे काजे कुटंव भाण अतिघणउ[७५] संसारेउ सोरे संकीजइ साहमियकेरउज कीजइ साहंमिअकाजिते १रत भडारो इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुरवंगू हवते कहीइसिइ जिणभवणि वा छिल अंतरंगू[७६] ॥ ७ ॥

जिणपरि लोगथाकइ जिम संसारमझि वलिवलि एउ फेरु कीजइ श्रावक श्राविकारोहि घरपोयषधशालजी छे करिसिइ धरमध्यान तुहरखि सविकालो ॥ ८ ॥

षडुजीवरक्षा[७७] सर्द्धि काल तीच्छेदंसीतीसमकितसिउ वारय[७८]

---

७३ क्षेत्र. ७४ साधर्मिक. ७५ अतिघणुं. ७६ अन्तरंग. ७७ षड्जीवरक्षा.

व्रत जीव आनकिइ लहंता प्रतिमा नीम[78] अभिग्रह संपज्जइ तिणि हाय अनेकि[79] सुकृतऊपजइ कुहिया कहइ वरमाट ॥ ९ ॥

ते छे सुगुरु वखाणु[80] करइ आगम तडापि सहू समाधियइ स पिंभलइ व्यूप्त नरनारे थापनाचार्य[81] वउ कीरटओ सिंहासण कीजइ नउकरवाली[82] चिरवला[83] महुपत्ती[84] मूकीजइ ॥ १० ॥

संघराऊतरउ टपाटिकीजइ पुंछणाकेरे पोसाल[85] पटेला अनइ दंडाउच्छणा[86] कानामेलणीय[87] पडंजणीय[88] काजाऊधरणी[89] पौषधसाहतणइवामि एकाजइ करणी ॥ ११ ॥

कीजइ कमलीवणी थवा वीजर सिद्धातूं ज्ञान पढंता जीवती छोतोई दीसइ आखर पडवडा अनइ जाणाहोई ईइ सातई क्षेत्र इमा वोलीया आगम अणुसारे[90] पुणतुम्हे वावीयं भलीय परिवित्त आपणार० ॥ १२ ॥

आयि आयन्ययने तुलिउं तीड थानकि वावे जिण सासणि वेचीतु कुलिक मंडसुवडावे संघ समुद्राइ सहू कोइ तीरथ वंदावे, देव जात्र गुरु जात्र करीउ तउ भलउ भणावे. ॥ १३ ॥

इमवितु सुवेचउ धम्म सु संचउ अप्पं जीवमववथ सुउवलीन लहि सउ प्रस्तानु ए सउ केरउ सफलु[91] भव माणसउ॥१४॥

---

७८ नियम. ७९ अनेक. ८० व्याख्यान. ८१ स्थापनाचार्य. ८२नवकारवाली ८३ चरवला.८४ मुहपोत्त (मुखपति,मुखवस्त्रिका, मुखानन्तक.) ८५ पौषधशाला. ८६ दंडासण ८७ काजामेलणी. ८८ पुंजणी.८९ काजाउद्धरणी. ९० आगम अनुसारे. ९१ सफल.

सातक्षेत्र इम बोलिलिया पुण एक[92] कहीसिए कर जोडी श्री संघ पासि अविणउ मागीसइ[93] काईवऊण आगउं बोलिउं उत्सूत्रूतो बोल्यामिच्छादुकडं श्री संघ वदीतुं ॥ १५ ॥

मूं मूरष तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरु पसाऊं अनइ जत्रिभुवन सामि वसइ हियडइ[94] जगनाहो तीणि प्रमाणिइ सात क्षेत्र इम-कीधऊ[95] रासो स श्री संघु दुरियह[96] अपहरउ[97] सामी[98] जिणपासो[99] ९६

संवत[100] तेरसत्तावीस एमहामसवाडइ गुरुवारि आवा यदसमियहि लइ पखवाडइ तहि पुरु हूऊ रासु सिव सुख निहाणू जिणचुवीसइ[1] भवीयणह[2] कारिसिइ कल्याणुं[3] ॥ १७ ॥

जां[4] सिसिरवि[5] गयणंगणिहि[6] ऊगइ[7] महि मंडलि[8] ताव[9] रतउ एउरासु[10] भवियणा जिणसासणि निम्मल जग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं गयवंतु[11] श्री संघ अनइ[12] जिणसासणु[13] ११८ ॥

॥ इति सप्तक्षेत्र रास समास ॥

लि० मुनि बुद्धिसागर.

---

९२ एक. ९३ मागीश. ९४ हैयडामां. ९५ कीधो. ९६ दुरित. ९७ अपहरो. ९८ स्वामी. ९९ जिन पार्श्व=(पार्श्वनाथ.) १०० संवत १३२७ तेरसे सत्तावीशनी सालमां आ रास रच्यो. १ जिनचोवीश. २ भविकजन ३ कल्याण. ४ यावत्. ५ शशिरवि. ६ गगनांगणो. ७ उगे. ८ महीमंडलमां. ९ तावत् (त्यां सुधी.) १० ए रास तो. ११ जयवंतु. १२ अने. १३ जिनशासन.

सात क्षेत्रनो रास सं. १३२७ नी सालमां गुर्जर भाषामां रचायो छे. बुद्धि प्रमाणे सुधारो कर्यो छे. मूल प्रति प्रमाणे मूल छपाव्यो छे, अने तेमां कोइ ठेकाणे शब्दो सुधार्या छे. फुटनोट पण बुद्धि प्रमाणे यथाशक्ति करी छे तेमां दोष होय तो पंडितो सुधारशो, अने आ रास संबंधी गुर्जर भाषाना पंडितो शोध करशे तो आ रासने सारी स्थिति उपर मूकी शकशे. एम आशा रखाय छे शुभे यथाशक्ति यतनीयं ए न्याय अनुसरी प्रयत्न कर्यो छे. जिनमंदिर, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ज्ञान, आ सात क्षेत्र जाणवां.

शोधक मुनि.
बुद्धिसागर.



अथ श्री यशोविजयवाचककृत.

ब्रह्मगीता.



दुहा.

समरीय सरसती विश्व माता, होये कविराज जस ध्यान ध्याता;
करिय रंगरसभरि ब्रह्मगीता, वरणवुं जंबु गुण जग वदीता. १

राग फाग

ब्रह्मचारी सिर सेहरो, ब्रह्म मनोहर ज्ञान;
ब्रह्मवतीमांहि सुंदर, ब्रह्म धुरंधर ध्यान.

मोह अब्रह्म निवारण तारण तरण जिहाज,
जंबुकुमर गुण थुणतां जन्म कृतारथ आज. २

होय जस वदने शत सहस जिहा,
आउखु वळी असंख्यात दीहा;
तास पणि जंबु मुनि सुगुण गातां,
पार नावे सदा ध्यान ध्यातां. ३

शील सलिल जे पाले वाले चंचळ चित्त,
आप शक्ति अजुवाले त्रिहु काले सुपवित्त;
पाप पखाले टाले मोह महामदपूर,
ब्रह्मरूप संभाले ते निज सहज सनूर. ४

एहवा जंबु मुनि पुरुष सिंह,
जेहनी कोय लोपे न लीह;
भवतर्या शील सम्यक्त्व तुंबे,
स्त्री नदी मांहि ते केम विलम्बे. ५

सोहमवयणे जागी वयरागी सिरदार,
सोभागी वडभागी मागी अनुमतिसार:
मातपिता प्रतिबुजवे आठ कन्या उपरोध,
करणी परणी तरुणी जीपे मन्मथरोध. ६

आठमदनी महा राजधानी,
आठ ए मोह माया निशानी;
जगवशी करणनी दिव्य विद्या,
कामिनी जयपताका अनिंद्या. ७

मुख मटके जगमोहे लटके लोयण चंग,
नव यौवन सोवन वन भूषण भूषित अंग;

श्रृंगारे नवि माती राती रंग अनंग,
अलवेली गुणवेली चतुर सहेली संग. ८

जेहने देखी रवि चंद थंभे,
वंभ हरिहर अचंभे विलंभेः
कवणतुं धैर्य रहे तेह आगे,
जंवुनी टेक जगि एक जागे. ९

आठ ते भूमि भयंकर शंकर कर जित लेइ माम,
श्रम करि सीखीने सज थयो फिरि जगिजय परिणाम;
सरव मंगळालिंगित देखी जंवु कुमार,
जुजे वुजे पंडित तिहां जयभंग प्रकार. १०

चाप जे मयण करि वाण न्हाखे,
जंवुवर धैर्य सन्नाह राखे;
चाप हुइ षंड हुओ भ्रमूह ठामे,
धैर्य पूजा कुसुम जंवु पामे. ११

एणी नयनानी वेणी लेइ धायो नरवारि,
ते तिहां थंभी दंभी सघले पामी हारि;
कांनि झाल जवुके तोळी रह्यो मानु चक्र,
तेह सुदर्शन धारीस्युं पणि न हुवे वक्र. १२

नाकि मोती ते वंधूक छाकि,
गोलिका ते रह्यो मांनु ताकि;
छूटि करि जंवु धैर्य नांह लोपे,
रहे ढलती ते आभरण रूपे. १३

दियशस्त्र हिवे फोरवे जोर माया अंधकार,
जेहमांहि वंभ पुरंदरनो पणि नांहि चार;

तत्त्वविचार उद्योतने शस्त्रे ते जंबु कुमार;
मोघ शक्ति करि संवरी पाम्या जगि जयकार. १४

जाणीये काम उत्पत्ति मूल,
थाइ संकल्पथी ते त्रिशूल;
ज्ञान धरी जो न संकल्प कीजे,
उपजे काम कहो कोणि बीजे. १५

हुओ अनंग तेसारुरे जोतुं धरतो अंग,
बाणकरण तांइ तांणीने नांषत होत अनंग;
थोथां कूटये स्युं होइ जो तुं चित्त विकार,
कांटे कांटो काढस्युं चिधिरि ब्रह्म विचार. १६

भावना इम क्षमादिक प्रपंची,
शस्त्र लीधां सकल तास षंची;
तेणि न बले ते नाठा कषाय,
पडि अचेलाई कुणहोइ सहाय. १७

तुं जाणे जित कार्शी जगवासी कीयोजेर,
पणि जिनभांणनी आंणमां वर्तता हुंछुं सेर;
अम्ह साहमिणी शीतादिक अबलाथी पणि भग्ग,
तुजस्युं जुझस्ये किणिपरे इम कहि नाठा ते नग्ग. १८

सज्ज थाती हुंति मदन फोज,
आठ कन्या कथा सुणत मोज;
जंबुनी अडकथाये ते भाजे,
जंबु जीते अने कंदर्प लाजे. १९

आठ ते कामिनी ओरडी गोरडी चोरडी चित्त,
मोरडी परिमद माचतीं नाचतीं गीत;

दीठि गलावइ छोरडी वोरडी पाकी जेम,
जंबुकुमार ते लेखवे कोरडी दोरडी तेम; २१

विश्व वशीकरणथी जेह सवला,
तेहनो नाम किम होइ अवला,
नाम माला तणी माम राखी,
जंबु धैर्य तणा सकल साखी, २२

आठ कन्या आप ते जननी जनक समेते,
चोरी करवा आव्या ते चोरने प्रभव सहेत;
ए सवि दीक्षा आदरी विचरी उग्र विहार,
जंबु ते पूर्वधर हुआ सोहम पट्टधार. २३

वर्ष अतिक्रमे अनुत्तर विमानी,
सुर अधिक सुख लहे ब्रह्मज्ञानी.
ते हुआ शुक्र शुक्लाभिजाति,
आत्मरति आत्मधृति कर्म्मघाती. २४

ब्रह्मरूप निरुपाधिक आतमज्ञान ते योग,
इन्द्रजाल सम सघला पुद्गलना संयोग;
उपादान पुद्गलथी पुद्गल उपचय होइ,
कर्त्ता नहि तिहां आतमा निश्चय साखी सोइ. २५

एह अध्यातम ते मोक्ष पंथ,
एहमां जे रह्या ते निर्ग्रंथ;
एह अंतःकरणे होइ सुधि वीजे,
विहित किरिया तेतसाहती कीजे. २६

नय होइ युक्ति जोतां किरिया ज्ञाननी व्यक्ति,
साधन फलता दोइमां साधन शक्ति;

आणा विणा आचारमांहि आणे अनाचार;
जंबु मते इम सोहम कहे अंगे आचार. २७

ज्ञान किरियातणा इम अभ्यासी,
हुइ चिदानन्द लीला विलासी;
स्थानवर्णार्थ आलम्ब अन्य,
योग पांचे हुआ जंबु धन्य. २८

वली इच्छा प्रवृत्तिने थीरवली सिद्धि ए भेद छे चार,
प्रीति भक्तिने वचन असंग तिहां सुविचार;
सकल योग ए सेवी पामी केवलनाण,
मुगते पुहता तेहनुं नाम जपे सुविहाण. २९

खंभनगर थुण्या चित्त हरखे.
जंबु वसुभुवन मुनि चंद वरखे;
श्री नय विजय वुध सुगुरु सीस,
कहे अधिक पुरयो मनय जगीस ३०

॥ इति श्री यशोविजय विरचिता ब्रह्मगीता समाप्ता: ॥

श्री यशोविजय वाचक कृत.

आदि जिनस्य संस्कृतभाषायां स्तवनम्.

आदिजिनं वंदे गुणसदनं,
सदनंतामलवोधंरे;
वोधकतागुणविस्तृतकीर्ति,
कीर्तितपथमविरोधंरे. आ० १

रोधरहितविस्फुरदुपयोगं,
योगं दधतमभंगरे;
भंगनयव्रजेपशलवाचं,
वाचंयमसुखसंगरे. आ० २

संगतशुचिपदवचनतरंगं;
रंगं जगति ददानंरे;
दानसुरद्रुममंजुलहृदयं।
हृदयंगमगुण भानंरे. आ० ३

भानंदितसुरवरपुन्नागं,
नागरमानमहंसंरे।
हंसगतिंपंचमगतिवासं
वासवविहिताशंसंरे. आ० ४

शंसंतं नयवचन नवमं,
नवमंगलदातारंरे;
तारस्वरमघघनपवमानं,
मानसुभटजेतारंरे. आ० ५

इत्थं स्तुतः प्रथम तीर्थपतिः प्रमोदा,
च्छ्रीमद्यशोविजयवाचकपुंगवेन।
श्री पुंडरीकगिरिराजविराजमानो
मानोन्मुखानि वितनोतु सता सुखानि आ० ६
इति श्री ऋपभदेव स्तवनम्.

मनभ्रमर.

ओधवजी संदेशो कहेशो श्यामने–ए राग.

मनः भ्रमर बहु भ्रमण करे भववनविषे,
घडी घडीमां नवनव वृक्षे जायजो;
गुंजारव करतो गर्वित थइ आथडे,
विषय पुष्पने देखीने हरखाय जो. मन० १

रागद्वेष बे पांखो काळी तेहनी,
षट्पदना मिषे षड्रिपुनुं ठामजो;
नवनवरंगी विषयपुष्पपर बेसतो,
कामकमळमां लपटातो दुःख धामजो. मन० २

शाम्यवंशने कोतरतो जे तुर्तमां,
काळहस्तिथी काम कमळ भक्षायजो.
चींचीं करतो काळकोळीयो थइ रहे,
रविविद्युत् पेठे ते चंचळ थाय जो. मन० ३

काळ अनादि विषय पुष्प सुंघ्यां घणां,
मनभमराने तोपण तृप्ति न थाय जो;
अकळगति मनभ्रमरतणी क्षण क्षण विषे,
मनभमरो अहा त्रणभुवनमां जाय जो. मन० ४

मन भमराने पुरो समता पांजरे,
रखे न उडे लेशो बहु संभाळजो;
चौदभुवननो मोक्षीलो स्थिरता धरे,
त्यारे थावे झटमां मंगलमाल जो. मन० ५

ध्यान दोरीथी मनभमराने बांधीए,
अनुभव अमृत स्वाद करावो वेश जो;
बुद्धिसागर अन्तरमां समज्या थकी,
आत्मस्वभावे आनंद होय हमेश जो. मन० ६

ॐ शान्ति.

श्री सद्गुरु सत्तरी.

ओधवजीना रागे.

नमन हजो मुज एवा सद्गुरु ज्ञानीने,
जगत जीवोने शांति दायक देवजो,
क्षमाश्रमण जे कहावे समता आदरी,
दर्शनथी शाश्वतपद छे ततखेवजो. नमन ह० १

ज्ञायकभावे वरते सत्य स्वरुपमां,
साध्याक्रियाने करता गुणनी खाणजो;
उपशम परिणामे वहेता चारित्रने,
मोडे मिथ्यामोहमणिधरमान जो. नमन० २

स्वपर समयने जाणे श्वासोश्वासथी,
जिन आज्ञाने छंडे नहिं लवलेश जो;
आगमनी साखे जाणे सौ भावने,
विषय विकारो प्रत्ये धरता क्लेश जो. नमन० ३

दीन कृपणता दूर करे धरी नूरने
प्रकटावी निज शक्ति शर्म अनूप जो;
आत्मस्वरूपे लीन रहे क्षण क्षण विषे,
शुद्ध समाचारी धरता अवधूत जो. नमन० ४

उपसर्गो सहवामां सिंह समा वळी,
समभावे रहे समुद्रसम गंभीर जो;
शुद्ध ज्ञान धरता जे अलख अभेदनुं,
ष चक्रोने भेदे योगि वीर जो. नमन० ५

द्रव्य भावथी परवस्तुने त्यागता,
निर्विकल्पने वैरागे तल्लीन जो;
अचळ अडोल अफंद अविकारी सदा,
गुरुपरंपर आगममांहि प्रवीण जो. नमन० ६

त्रण शल्यने तृणवत् जाणी त्यागता,
गारव रस रिद्धिने शाता साथ जो;
धर्म करण कारणने सहेजे संग्रहे,
राग द्वेषनो त्याग दयाना नाथ जो. नमन० ७

निंदा विकथा चारे त्यागे नित्य जे,
कषायने तो कहाडे घरनी वहारजो;
वचन जेहनां पडे हृदयमां सोंसरां,
तत्त्वज्ञान ने धर्मकथानी वखार जो. नमन० ८

चरण नावमां बेठा मुनिवर साधता,
मुक्तिपुरीनो मार्ग वीकट सुखमेवजो।
चार भावना मित्रादिक जे भावता,
जग जंतुथी वैर शमावे देव जो. नमन० ९

पंचमहाव्रत विशुद्धताथी पालता,
गुप्ति समिति अजुआलि स्वयमेव जो;
अतिचारने दूर करी ज्ञानी गुरु,
पंचाचारे चरे ज्ञानामृतमेव जो. नमन० १०

छकायना जीवोनी रक्षा बहु करे,

शत्रु मित्र सम गणता गुरु गुणवान् जो;
षड् आवश्यक नित्य करे लही अर्थने,
क्रिया न करता फोनोग्राफ समान जो   नमन० ११

पर परिणतिने त्यागे शुद्धातम थकी,
आठ मदोने त्यागे दुःख देनार जो;
छत्रीश गुण धारक म्हारा श्री सद्गुरु.
सरळ अने मृदुभाव हृदय धरनार जो.   नमन० १२

अडदश सहस शिलांग रथे विराजता,
नवविध पाळी ब्रह्मचर्य मतिमान जो;
दशविध यतिना धर्मे जे छे उजळा
अनुभव रसना रसीया प्रभु गुणखाण जो.   नमन १३

योगाष्टक साधे जे प्रेम थकी सदा,
आतमज्ञाननी अलख खुमारी मस्त जो;
दुनियांने दिवानी गणता सद्गुरु,
ज्ञानामृत पीतां ने पाता तृप्त जो   नमन० १४

समुद्र ज्ञान विशाळ हमेशां डोलता,
दीन रजनी पण ज्ञान ज्ञान ने ज्ञान जो;
ज्ञान गोष्ठी वीण गमतु जरा न जेहने,
ज्ञानोदधि रस पीवा लाग्युं तान जो.   नमन० १५

सार साधु गुण धरे धरावे शिष्यने,
मिथ्या जोरे कुगुरुमां न फसाय जो;
तप जप क्रिया करतां भव बंधन मटे,
सिद्धि समकित विना न कदीये पमाय जो.   नमन० १६
अंतर्मुहूर्त समकित जो पामे भवि,

तस भव गणती निश्चयथी समजाय जो।
बुद्ध्यब्धिअंकित सद्गुरु महाराजना,
बे कर जोडि मणी वंदे शुभ पाय जो नमन० १७

सांवत्सरिक क्षमापना.

राग धीरानां पदनो.

जीवोने हुं खमावुंरे, वैरझेर दूरे करी;
मित्रो सर्वे म्हारारे, खमावुं सहु प्रेम धरी.
लक्ष चोराशी, जीवनीयोनि, उपन्यो वार अनंत.
मन वाणी कायाथी दुहव्या जीवो मोहे अत्यंत;
पश्चाताप तेनोरे, करु हवे ज्ञान धरी. जीवोने १

मनुष्यजन्म धारी आ भवमां, बांध्यां में जे वेर.
स्मरण करी हुं दुर करुं छुं समताए लीला ल्हेर;
वैरीनां वैर नासोरे, उपशम भावे मुक्ति खरी. जीवोने. २

क्रोधमान मायाने लोभे, जीव संताप्या बहु.
अज्ञाने माठुं जे जे कीधुं, खमावुं छु ते सहु।
नमी नमी खमावुंरे, सकलसंघ भक्ति धरी. जीवोने ३

पापी मिथ्यात्वी जीवो तेम मित्रो भक्तो सर्व.
खेद अप्रीति जे उपजावी, खमावुं छुं तजी गर्व;
पर्युषणाना पर्वेरे, परभाव परिहरी जीवोने. ४

क्रोध कपट कामादिक दोषे, संताप्यो निज जीव.
पोते पोताने हुं खमावुं, निश्चयथी जीव शिव;
अन्तरना देशे उतरेरे, क्षमापना शुद्ध ठरी. जीवोने. ५

सिद्धसमा सर्वेछे जीवो, सत्ताए गुणवंत,
कोइ न शत्रु तेमां म्हारो, निश्चय चित्तवसंत;
शिष्योने हुं खमावुंरे, गुरुओने प्रेमभरी. जीवोने. ६

करुणा सर्व जीवोपर रहेशो, द्रव्यभावथी नित्य,
परगुण परमाणु पर्वतसम भासो प्रमोदे चित्त;
माध्यस्थभावे रहीनेरे, खमुंखमावुं करगरी. जीवोने. ७

अहंभावनो खेद टळो सहु, नासो माया दूर.
द्रव्यभावथी जीव खमावुं, ज्ञानानंद भरपूर;
द्रव्यभावपर्वेरे, मलीनता दूर हरी. जीवोने ८

त्रण भुवननो नाथ अहो हुं, सत्ताए कहेवाउ,
आप स्वरुपे ध्याने रहुं तो, व्यक्तिपणे शुद्ध थाउ;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, जागंतां शिवशांतिवरी. जीवोने. ९

वाणी.

वाणी वाणीरे म्हारा गुरुनी वाणी,
योगिए पकडी घर आणीरे, म्हारा. १
वाणी उपर जे जन वेठा, मुक्ति पुरीमां ते पेठारे. म्हारा. २
वाणी घाणी मांहि पीलाशे, खोळ तेनो ढोर खाशेरे. म्हारा. ३
वाणी वेश्याना संदेशा, समजे नहि तों अंदेशारे. म्हारा. ४
मार्ग अनेकने नगर छे एक, बुद्धिसागरनी छे टेकरे. म्हारा. ५

अवळी वाणी.

भला जग सांभळो संतोरे, के नाव पर दरियो चाल्यो जाय,
बुढिया बावा जति सन्यासी, खाखी जोगी फकीर.
जळमय दुनिया देखी ज्यारे, रही नहि कोइनी धीर. भला १
एक कीडीए दरियो पीधो, तो पण तरसी थाय.
बार मेघनां पाणी पीधां, नदीमां डुबी जाय. भला. २
एक सरिता नीची व्हेती, ऊंची चाली जाय;
ए सरितामां स्नान करे ते, हतो न हतो थाय. भला. ३
पूजारीने तीरथ पूजे, रची माछले जाळ;
पकडाणा धीवर ते जाळे, जोया जेवो ताल. भला. ४
एक तमासो एवो देख्यो, ज्यां सहु एकाकार;
हिंदु मुसल्ला पारसी सहु, खाय पीवे एकलार. भला. ५
एक त्राजवुं अद्भुत देख्युं, त्रण भुवन तोळाय.
बुद्धिसागर अवळी वाणी, कोइकने समजाय. भला. ६

अन्त्यमंगलम्.

श्री संखेश्वर पार्श्व प्रभु जयकारी, पग पग जगजयकारीरे. श्री
चिंतामणि तुजमंत्र सवायो, धारणा ध्यानथीज ध्यायो,
भक्ति प्रतापे दर्शन पायो, अनुभव आनन्द पायोरे. श्री १

धरणेन्द्रपद्मावती देवी, साह्य करे जयकारी.
पार्श्वयक्ष बहु साह्य करेछे, मंत्रचिंतामणि धारीरे. श्री २

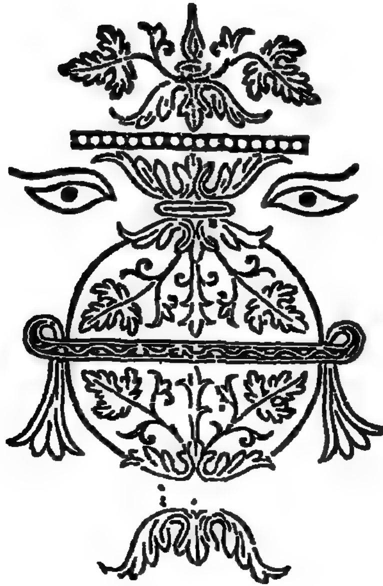
इष्टदेव वामादेवीना नन्दन, शरणुं छे एक तमारु;
नाममंत्र तुज जगमांहि मोटो, काम करे छे सहु धार्युंरे.श्री ३

दर्शन देइने आनन्द आप्यो, विघ्न हर्यां बहुभारी;
साकारने निराकार तुंहि प्रभु, जिनशासन सुखकारीरे.श्री. ४

पुरिसादाणी परमकृपालु, ध्यान धरु उरधारी;
बुद्धिसागर शासन देवो, पग पग मंगलकारीरे. श्री. ५

सं. १९६५ विजयादशमी. अमदावाद.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



श्री भजनपद संग्रह चोथा भागनुं अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१	१०	त्स	सत्
९	१४	रूद्धि	रूद्धि
९	१८	बुद्धि	बुद्धि
११	११	सनात्र	सनाथ
१२	१	औदपिक	औदयिक
१६	९	व्यवहार	व्यवहार
२६	१७	शुद्ध	शुद्ध
२६	१८	बुद्धि	बुद्धि
२८	४	दुख	दुःख
३१	९	स्वयं	स्वयं
३२	१७	वडी	घडी
४२	१४	सुपुम्णा	सुषुम्णा
४७	२०	स्थिरोपयोगो	स्थिरोपयोगे
४७	२०	शोधतां	शोधतां
५३	१६	चिदान्द	चिदानन्द
५५	५	शुद्ध	शुद्ध
६९	५	सद्द	सद
७२	९	कया	कयां
८२	५	मीतथी	मतिथी
८२	१६	खाइ	खोइ
८४	८	वीर्यात्साहे	वीर्योत्साहे

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि	शुद्धि
१००	६	अहां	अहो
१०९	७	धसोछे	धसोछो
१११	३	रले	रेले
११२	६	मूड	मूढ
११०	१५	पडी	पडे
११३	११	मनमा	मनमां
१२३	१४	झल्या	झूल्या
१२३	२१	अरे	अरेते
१३५	५	नाश	नाश
१४९	९	प्रभुना	प्रभुने
१५२	२१	आत्मा	आतमा
१५३	१९	करतो	करुतो
१५३	२३	संवरु	संचरु
१५४	१७	आत्मा	आतमा
१५८	२१	वरतु	वस्तु
१६९	४	गी	गीत
१७१	११	आराघन	आराधन
१७२	८	शलि	शील
१७५	१०	वक्र	चक्र
१७६	४	व्रिषय	विषय
२०३	१३	निण	निर्गुण
२०७	६	द्दिठ	दि्ठ
२१३	२१	ıतहां	तिहां
२२०	४	सतजा	सतेज.

पत्र	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
२२४	६	विलास	विलास
२२४	१५	कलश	कलशदंड
२४८	२०	२९ शुभगुरु	२९ वचनमाने
२४९	२०	४६ उत्व	४६ उत्सव
२५?	२	आगमममांहि	आगममाहि
२५५	११	४९ दान	४९ दानु
२५५	२१	वीर	खीर